॥ श्रीः ॥

बलिदान

उपन्यास

दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित

लहरी बुक डिपो

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

वाराणसी

प्रकाशक—

कमलापति खत्री

अध्यक्ष—लहरी बुक डिपो

वाराणसी

BALIDAN Durga Prasad Khatri 3/50

१९६४ ई० पाँचवाँ संस्करण—१००० प्रति

मूल्य—२/५०

मुद्रक—

राजेन्द्र प्रेस

बाग बरियार सिंह

वाराणसी

क ठि हा क

श्री दुर्गाप्रसाद खत्री की

अन्य रचनाएँ:—

प्रतिशोध	१) ५०
लाल-पंजा	३)
रक्त-मंडल	८)
सुफेद शैतान	१०)
सुवर्ण-रेखा	३)
स्वर्गपुरी	३)
सागर सम्राट	३)
साकेत	३)
काला चोर	५)
कलंक-कालिमा	२) ५०
संसार चक्र	२) ५०
माया (दो भाग)	४)
आकृति विज्ञान	१)

प्रकाशक—

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

॥ श्रीः ॥

बलिदान

उपन्यास

पहिला बयान

यह आज की नही बहुत पुरानी बात है फिर भी मुझे इस तरह याद है मानो इस घटना को हुए थोड़े ही दिन बीते हो।

आज मै वृद्ध हूँ पर उस समय युवा था, आज बडी बड़ी मोछो ने मेरे होठो को ढँक रक्खा है पर उस समय मसे भीन रही थीं, आज गृहस्थी और दर्जनो बच्चो के जञ्जाल मे पडा हुआ हूँ, उस समय यद्यपि झंझटों से खाली तो नही फिर भी स्वतन्त्र था, जमाने को एक खेल की तरह देखता था, गुजरे की याद न रहती थी और आने वाले की परवाह न थी। उस समय मै डाक्टरी पास कर के नया नया निकला था और इसीलिए अपने आगे किसी को कुछ समझता ही न था।

उसी जमाने का यह किस्सा है।

किसी काम से मुझे मोदपूर जाना पड़ा था। मोदपूर पूरब मे एक गाव है, गाव क्या उसे छोटा मोटा कसबा ही कहना चाहिये क्योकि वहा चार हजार से ऊपर की आबादी है और कई ऊँचे दर्जे के व्यापारी बनिये बजाज और छोटे मोटे महाजनो की बदौलत वहाँ

काफी रौनक और अमन चमन रहता है। गाव में यो तो प्रायः फूस और खपरैल के ही मकान भरे हैं मगर कितने ही पक्के और अधकचरे मकान भी अपना सिर उठाये हुए हैं जो उन्हीं सौदागरो बनियों और महाजनो की जायदाद हैं। गाव में साधारण से अधिक सफाई है क्योंकि यहा के नौजवान जमींदार राय सीताराम पढ़े लिखे होने के साथ साथ सफाई की कीमत समझते हैं और उसके लिए खर्च और मेहनत करने को तैयार रहते हैं। मेरे एक रिश्तेदार इन्ही के यहा नौकर थे जिनके सबब से मुझे भी कभी कभी यहा आना पडता था तथा इसी सबब से राय सीताराम से भी यद्यपि दोस्ती तो नही लेकिन जान पहिचान हो गई थी। इसी मोदपूर में मैंने वह घटना देखी जिसने मेरे पानी ऐसे दिल पर भी लकीर खींच दी थी और जिसका हाल आज मै कहने जा रहा हूँ।

मोदपूर के पूरब तरफ कुछ दूर पर पचासो बिगहों तक फैली हुई आम की एक बहुत बडी बारी है। इसी बारी के एक कोने मे एक छोटी बगिया और उसके अन्दर छोटा सा ईंट चूने का बना हुआ श्री राधाकृष्ण का मन्दिर है। मन्दिर बहुत पुराने जमाने का है और उसके पास ही एक कूंआ और कुछ मामूली इमारतें भी बनी हुई हैं जिनमे उधर से आने जाने वाले मुसाफिर कुछ देर टिक कर आराम कर सकते हैं। यह मन्दिर, मकान, बगिया और आम की बारी सब कुछ महन्थ महादेवदास की जायदाद है जिन्होने इन्हें अपने गुरु महाराज से पाया है।

जब तक मैं मोदपूर मे रहता हूँ इस बगिया में अवश्य एक बार नित्य जाता हूँ क्योंकि एक तो श्रीराधाकृष्णजी की मूर्ति बडी सुन्दर और दर्शनीय है, दूसरे यह स्थान भी रमणीक मनोहर और एकान्त है। कुएँ पर भाग-बूटी छानने और पास की बारी मे निपट कर पीछे वाली बावली में स्नान आदि करने का भी बडा सुबीता है। एक

नौकर महन्थ महाराज के हुक्म से हरदम यहां मुस्तैद रहता है जो आए गये मुसाफिरो के आराम का खयाल रखता है । इसे मै बीच बीच कुछ दे भी दिया करता था जिससे यह मेरा सब हुक्म बजा लाने को हमेशा मुस्तैद रहता था ।

इस बार भी दो साल के बाद जब मै मोदपूर आया तो नित्य नियमानुसार दूसरे दिन सन्ध्या समय इस बगिया की तरफ चला । यह गाव से लगभग कोस भर पर पड़ती थी जिससे यहां आने के लिए कुछ जल्दी ही चल देना पड़ता था, आज भी इसीलिये मै जल्दी ही रवाना हुआ और सूरज डूबने के घन्टे भर पहिले ही वहाँ पहुँच गया । परंतु मुझे बिल्कुल खबर न थी कि नियमावली में फर्क पड़ गया है जिससे मै मामूली तौर पर धड़धड़ाता हुआ बगिया का फाटक पार कर अन्दर चला गया और मन्दिर की तरफ बढ़ा मगर सभामंडप के पास पहुँचते ही कुछ ऐसी आवाजे सुनने में आई कि रुक जाना पड़ा । दो आदमियो के बातचीत की आवाज मन्दिर के अंदर से आ रही थी जो इस प्रकार थी :—

एक आवाज० । (जो भारी और किसी ज्यादा उम्र के आदमी की मालूम होती थी) बेईमान, पाजी, इतना भारी कमीनापन ! अबे तुझको शर्म नही आती कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी कहता है गलती हुई ? अबे पाजी ! यह गलती है कि बेइमानी ! भूल है कि नमकहरामी !! तुझको क्या बरसो से मैने इसीलिये पाला और अपना चेला बना रक्खा है कि तू मेरी ही आखो मे धूल झोके और मेरे ही गले पर छुरी चलावे ! बेहया, तुझे तो चिल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिये !!

दूसरा० । (जो कम-उम्र और आवाज से कुछ डरा हुआ सा मालूम होता था) माफ कीजिये गुरूजी, गलती हुई, धोखा हो गया । मैं यह नही समझता था कि आप भी............!

पहिला० । (डपट कर) फिर वही बके जाता है ! मैंने नहीं समझा ! मैंने नहीं समझा ! अबे तेरी समझ कहाँ चली गई थी जो जो तैंने इतना नही समझा कि तेरे गुरूजी ने जो उसे महीनो से यहा टिकाया हुआ है सो कुछ समझ के कि बिना समझे ही ! किसी मतलब से कि बे मतलब ही !!क्या तू इतना नहीं समझ सकता था कि मैंने जो यहां परायो का आना जाना बन्द कर दिया—नौकर तक को हटा दिया, सो क्यो ? इतनी निगरानी रखता हूँ सो किस लिये ? दिन में चार चार फेरे लगाया करता हूँ सो किस वास्ते ? नामाक़ूल ! पाजी ! गधा ! सूअर !!

दूसरा० । जी .... जी .... आप तो....मगर.... !

पहि० । अबे चुप रह मगर तगर के बच्चे ! ज्यादा बोलेगा तो जुबान खींच लूंगा, बड़ा मगर वाला आया है !!

दूसरा० । मगर गुरूजी आप तो एक मामूली सी बात के लिये फजूल ही इतना गर्म हुए जाते हैं !!

पहिला० । मामूली बात है ? मामूली बात है ? अबे बोलता क्यों नही, यह मामूली बात हे ?

दूसरा०। आप तो व्यर्थ ही नाराज हो रहे हैं ! जरा सा मैंने झाक कर हँस दिया इस पर इतना बिगड जाने की क्या बात हो गई भला ! अब मैं उधर कभी पैर भी न रक्खूंगा ! माफ कीजिये ठण्डे होइये !!

पहिला० । पैर नहीं रक्खूंगा ! अबे पैर रखने में बाकी ही क्या रहा ! क्या तेरा कोई विश्वास है ! अच्छा बता तू कल रात को कहा था ?

दूसरा० । (कुछ हिचकिचाते हुए) जी....मैं.......चादनी रात की बहार देखने निकल गया था ।

पहिला० । और रात भर बहार देखता रहा ! और सवेरे उस दर्वाजे के पास खड़ा क्या कर रहा था ? उधर जाने की तुझे क्या जरूरत पड गई थी ?

दूसरा० । मन में आया कि बगिया मे निपट कर तब चलूं, फिर ख्याल आया कि उधर जाने को आपने मना किया है, खड़ा खडा यही सोच रहा था कि किधर जाऊँ, क्या करूँ ?

पहिला० । झूठा ! पाजी ! बेइमान ! नमकहराम ! नामाकूल ! मुंह पर झूठ ! अभी अपने मुंह से कह चुका है कि जरा हंस दिया और झाक लिया तो क्या बिगडगया, और अब कहा है कि मैं........ दर्वाजे के पास खडा सोच रहा था !!

दूसरा० । जी ई ई ई.......मै...तो....!

पहिला० । चुप रह बेईमान ! अब तू अपने मुंह से कमीना साबित हो गया ! अबे पाजी, मै तो तेरी नस-नस से वाकिफ हो चुका हूँ ! तू जितना सूरत का काला है उससे ज्यादा दिल का काला है ! तेरा तो मुंह देखना पाप है ! चल हट जा मेरे सामने से ! अब कभी जो तैंने अपनी काली सूरत मुझे दिखाई तो गर्दन तोड दूँगा ! चल दूर हो !!

मै इस दिलचस्प और मीठी कथा के सुनने में इतना मग्न हो रहा था कि और कुछ सोच भी न सका और इसी समय मन्दिर का दर्वाजा जो भिड़का हुआ था खोल कर एक अजीब सूरत मेरे सामने आ खड़ी हुई ।

मै नही कह सकता कि इसे आदमी कहूँ या बन्दर ! हब्शी कहूँ या हैवान ! ऐसा काला आदमी तो मैंने आज तक कभी देखा ही नहीं था । अजीब सूरत, अजीब भाव, अजीब पौशाक, शायद हुलिया सुन कर आपको भी इस अजीब जानवर का कुछ गुमान हो जाय जो मेरे सामने थी ।

लगभग पचीस वर्ष की उम्र का एक नौजवान, मगर मोछे नदारद, छुरे की भेट की हुईं, नाक कुछ लम्बी मगर चिपटी और निचले हिस्से में कुछ फूली हुई, दोनो आखें गडहे के अन्दर से उल्लू

की आखो की तरह चमक रही थीं, जिनके ऊपर उसका तंग और चिपाट माथा बराबर पीछे ही को हटता चला गया था। होठ लाल नहीं काले, जिनकी शायद आत्यधिक धूम्रपान ने यह गति कर दी थी, सिर के बाल छोटे-छोटे और खडे, गर्दन जरूरत से ज्यादे लम्बी और कान बाहर की तरफ निकले हुए थे। यह तो इसका चेहरा हुआ, मगर पौशाक इससे भी अद्भुत—लाल रेशम का शिकारी कोट, पीले बानात का तंग मोहरी का पाजामा, पैर में डासन का काला बूट. एक हाथ में अंगरेजी टोपी, जो शायद सिर की शोभा बहुत बढा दिया करती होगी। कमर अभी से कुछ झुकी हुई सी थी, और इस कारण ऊपर का धड़ आगे को लटका नजर आता था। सूरत ही से नीच प्रकृति का आदमी मालूम होता था और आकृति ही से दुष्ट और पाजी होने का विश्वास होता था, मगर मुझ पर सब से बढ कर जिस बात का असर पडा वह इस शक्ल का घोर कृष्ण वर्ण था, इतना काला कि मुझे सचमुच भास होने लगा कि कहीं एक ही रोगन इसके चेहरे और बूट पर तो नहीं फेर दिया गया है !!

जिस समय मन्दिर के अन्दर से निकल कर यकायक यह सूरत मेरे सामने आ खडी हुई मै तो भौचक सा रह गया। एक दफे तो मन में हुआ कि सरपट भाग जाऊँ पर फिर कुत्तों की खसलत याद आ गई जिससे रुक गया। उधर उस सूरत पर भी मुझे देखते ही एक अजीब छाया सी आ पड़ी। पहिले तो तवे की पीठ—अरे नहीं-नहीं चेहरा—उदास, आंखो से आंसू की बूदें गिरती हुईं. मुंह बिचका हुआ था, पर अब मुझे देखते ही भाव बदल गया मोटे काले होठो के भीतर से दो पीले दात और जरा सो जीभ दिख पड़ी और आख भी सूख साख कर ठीक हो गई। मेरी तरफ हाथ बढ़ा कर बोले—"अहा, आप तो—बाबू के दामाद हैं न!" जब तक मै कुछ सोचूं या कहूँ तब तक तो डासन का बूट नीचे उतर पड़ा और काले हाथ

मेरे कन्धे पर दिखाई देने लगे। मुंह से धीरे से आवाज निकली, "जरा इधर आइये, आपसे कुछ बात कहनी है, यहां से गुरूजी सुन लेंगे !"

मैं कहा, "कहिये क्या है ?" मगर वह मेरा हाथ पकड़े कूंए के पास तक खींच ले गया और तब बोला, "आप शायद मुझे नही पहिचानते !!"

मैंने कहा, "भगवत् अनुकम्पा से मेरा ऐसा ही दुर्भाग्य है !" वह बोला, "मै महन्थ महादेवदासजी का चेला हूँ, मेरा नाम कन्हाईदास है।"

मैंने मन ही मन 'मगर कृष्णजी इतने सुन्दर नहीं थे !' कह कर ऊपर से कहा, "धन्य भाग्य जो आपके दर्शन हुए, मैं नही जानता था कि श्री राधाकृष्ण का दर्शन करने आकर आपके भी दर्शन हो जायंगे। परन्तु यदि आज्ञा दीजिये तो मै पहिले भगवान के दर्शन कर आऊँ, फिर निश्चिन्ती से आपसे बाते करूँ।"

कन्हाई०। नही नही, अभी गुरूजी वहाँ बैठे हैं और कुछ पूजा अर्चना कर रहे हैं—

मैंने मन ही मन कहा, "न जाने गुरूजी अपने देवता की पूजा कर रहे थे या आपकी !" मगर कन्हाईदास की बातो का सिलसिला टूटा न था, वे उसी सांस में कहते गये,—"इस समय कुछ क्रोध मे हैं। आप जाइयेगा तो कदाचित् कुछ कह सुन दे तो ठीक न होगा क्योंकि आज कल इस बाग और मन्दिर मे कोई गैर आदमी आने जाने नही पाता।"

मैं०। यह कब से ? पहिले तो ऐसा न था !!

कन्हाई०। हां इधर कुछ महीनो से ऐसा ही नियम हो गया है, आप शायद बहुत दिनो के बाद इधर आये हैं ?

मैं०। जी हां, पहिले तो बहुत दफे आ चुका हूँ मगर इधर तो कोई दो साल के बाद आना हुआ है।

कन्हाई०। तभी, तभी, अच्छा आप तो डाक्टरी पढ़ते थे न ?

मैं०। जी हां, पारसाल मैंने डाक्टरी पास की है।

कन्हाई०। तब आप ही का मुझे काम था, आप मुझे नही जानते पर—बाबू मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मै प्रायः उनके यहां आया जाया करता हूँ।

मै०। परन्तु मुझे कभी आपको वहा देखने का ......

कन्हाई०। जी हा, ठीक है, मौका न मिला होगा! अच्छा मुझे आपसे कुछ दो चार बातें पूछनी थीं।

मैं०। पूछिये पूछिये !!

कन्हाई०। आप........

इतने ही मे मन्दिर के अन्दर से "कन्हाई! अबे कन्हाई !!" की पुकार आई जिसके साथ ही शिष्यजी महाराज मुझसे यह कहते हुए कि, 'आप ठहरिये, मै अभी आता हूँ।' उधर ही को लपके, जूता पहिने ही एक छलाग मे मन्दिर के मण्डप पर पहुँचे और तब भीतर चले गये। मैंने इसे गनीमत समझा और तुरत बागीचे के बाहर की ओर चल पडा कि कही फिर शिष्यजी के दर्शन न हो जाय। लेकिन फाटक के पार हो मै सीधा नही गया बल्कि बाईं तरफ को मुड़ गया जिधर से एक पगडण्डी रास्ता बगिया के बगल से हो कर घूमता हुआ गया था, खयाल हुआ कि सीधे जाने से मुमकिन है कि कन्हाईदासजी देख ले और पीछा करें।

मै लपकता हुआ बागीचे की दीवार के साथ साथ चला जा रहा था कि मेरी निगाह एक खिडकी के अन्दर जा पडी। यह खिडकी उसी इमारत की थी जिसके बारे में मै कह चुका हूँ कि मुसाफिरो के लिये बाग के अन्दर बनी हुई थी और जिसका पिछला हिस्सा चारदीवारी के साथ लगता था। जब कोई मुसाफिर अन्दर वाले इस मकान मे टिकता था तो प्रायः यह खिडकी खुली रहती थी इस समय भी खुली थी और उसकी राह भीतर का हाल दिख सकता था। जो कुछ कथा-वार्ता मै गुरू शिष्य की सुन चुका था उससे कुछ आशय

तो मैंने निकाला ही था इससे निगाह खाहमखाह अन्दर जा पडी और एक बार घुसी तो फिर निकल भी न सकी।

पहिले भी बहुत दफे मैंने इस खिडकी में से अन्दर की तरफ झांका था बल्कि भीतर से भी बहुत दफे इस तरफ बाहर को देख चुका था मगर आज तो यहां की छटा ही दूसरी नजर आई। पहिले तो इस कमरे मे चौकी पर एक टाट एक फटी दरी और कभी कभी चादर बिछी दिखती थी मगर आज तो यहा एक से एक बढ के सामान, कुर्सी, मेच, कोच, गालीचा, तकिया, आलमारी दीवारगीर, लम्प, कंवल झाड़ शीशे, तस्वीरे आदि देखने में आई। दीवारो और दरवाजो पर रेशमी पर्दे दिखाई पडे, एक तरफ पलंग और उस पर मखमली गद्दा भी नजर आया जिस पर साटन से मढे कई तकिये पड़े थे। मतलब यह कि आज यह कोई विलास-भवन ही मालूम हो रहा था। ऐसे ऐसे शौकीनी के सामान वहां नजर आए जो मेरो निगाहो मे आज तक कभी पड़े ही न थे। मै ताज्जुब करने लगा कि यह क्या मामला है मगर फिर गुरू शिष्य के प्रेमालाप की सुध आ गई और मै कुछ गौर से देख ही रहा था कि उसी समय पर्दा हटा और बाहर की तरफ से आती हुई एक कमसिन नाजनीन ने उस कमरे में पैर रक्खा।

अब ठाठ पूरा हुआ। ऐसे कमरे में यही एक अभाव था जो अब पूरा हो गया। मैंने एक भरपूर निगाह उस औरत पर डाली जो अभी तक पर्दे पर हाथ डाले दरवाजे के पास ही खड़ी थी। इसमें तो शक नही कि यह औरत सुन्दर थी और पौशाक भी इसकी खूबसूरत और सूफियानी थी, नखसिख अच्छा, कद अच्छा अदा अच्छी, सूरत अच्छी, सभी कुछ अच्छा था पर केवल एक बात नहो अच्छी थी और वह यह कि मेरी अनुभव रहित आँखो ने भी सूरत पर निगाह पडते ही कह दिया कि इस औरत की चालचलन अच्छी नहीं है। उसकी आंख के निर्लज्ज और मादकता लिये हुए भाव ने मेरी तबीयत

खट्टी कर दी और मैं वहां से घसकने लगा मगर सो न हो सका। उसकी निगाह मुझ पर पड चुकी थी और उसने मुझे जुम्बिश करते देखते ही हंस कर बडी अदा के साथ कहा ' ठहरिये ठहरिये, आप ही के लिये तो मै इधर आई हूँ और आप भागे जा रहे हैं!!"

लाचार रुकना पडा। वह नाजनीन खिडकी के पास आ खडी हुई और पुनः हंस कर बोली, "आपने गुरू चेले की बातचीत सुनी?"

मैंने कुछ जवाब न दिया बल्कि खिडकी के पास से कुछ घसकने लगा मगर उसने तो हाथ बढ़ा कर मेरा दुपट्टा पकड लिया और गर्दन टेढी कर भवें सिकोड़ होठ चढाते हुए कहा, "अब बोलिए!"

बुरी आफत में जान पडी! इस बेहया से क्योंकर पिएड छूटेगा? क्यो मै इधर आया? कोई इस तरह मुझे देख लेगा तो क्या कहेगा? यही सब खड़ा खडा सोचने लगा, मगर उस औरत के चेहरे पर किसी तरह की चिन्ता का कोई भाव न था। उसने बडी लापरवाही के साथ मेरे दुपट्टे को छडो के भीतर खींच लिया और तब अपने हाथ मे लपेटती हुई बोली, "सिर्फ एक वादे पर मै आपको छोड सकती हूँ नहीं तो आप छटपटा कर रह जाइयेगा और बिना मेरा हाथ तोड़े दुपट्टा नहीं छुड़ा पाइयेगा!"

यकायक मुझे कुछ सूझ गई, मैंने कुछ ढीला दे दूसरे हाथ से फुर्ती से दुपट्टा अपने गले से निकाल लिया और उसके हाथ ही में छोड उसकी सब मोह ममता त्याग पत्ता-तोड वहा से भागा!

दूसरा बयान

मै तो ऐसा भागा कि फिर पीछे घूम के भी न देखा कि कोई पीछा करता है या नही मगर जब लगभग आधी दूर के निकल आया हूँगा तो यकायक पीछे से "ठहरो ठहरो" की आवाज आई और जब मैंने चिहुँक कर पीछे देखा तो मुरलीधर पर निगाह पडी जो लपकता हुआ चला आ रहा था। मै ठहर गया।

मुरलीधर मेरी ही उम्र का एक नौजवान खुशमिजाज लडका था। इसका घर मोदपुर में ही बल्कि——बाबू के मकान के साथ ही मे था और मेरे विवाह के बाद से ही यह मेरा लंगोटिया यार बन गया था। मुरलीधर स्वभाव का अच्छा यद्यपि कुछ चञ्चल था, देखने में हंसमुख, सुन्दर, बदन का मजबूत, और बातचीत में बहुत होशियार था। पढ़ा लिखा तो विशेष कुछ न था पर इससे कोई हर्ज भी न था क्योंकि बाप की बड़ी जमींदारी के काम मे लड़कपन ही से लगे रहने के कारण उसमें बहुत होशियार हो गया था और खाने खर्चने की किसी तरह की कमी न थी। इस बार जो मै मोदपुर में आया तो अभी तक इससे देखा भाली नहीं हुई थी, यह पहिली मुलाकात थी।

मेरे पास पहुँचते ही मुरली ने बेतहाशा हंसना शुरू किया। कुछ देर बाद किसी तरह हंसी कम हुई मगर फिर मेरा कन्धा पकड़ हंसने लगा। मुझे उसकी इस हंसी से ताज्जुब नहीं हुआ क्योंकि मुरली को हंसने का रोग था, जरा जरा सी बात पर वह हंसी का फौव्वारा छोडने लगता था, मामूली बात भी उसे हंसा देने को काफी थी, पर आज हंसी की मात्रा जरूरत से कही अधिक थी। आखिर मैंने उससे कहा, "अब कुछ कहोगे भी कि जन्म भर हँसते ही रहोगे !!"

'कहता हूँ ठहरो !!" कह कर वह फिर हंसने लगा। आखिर चिढ कर मैंने कहा, "अच्छा तो मै जाता हूँ, तुम्हारी हंसी बन्द हो तो आ कर मुझसे कहना।"

आखिर बडी मुश्किल से हंसी रोक उसने कहा "तुम तो गधे की सींग की तरह वहा से ऐसा भागे कि पीछे घूम कर भी देखा नही, देखो तो कितनी दूर से दौडता चला आ रहा हूं !!"

मैं०। क्या तुम भी वहा थे ? मगर मैंने तो तुम्हें देखा नही !

मुरली०। मै ? अजी मै ही क्यो आजकल तो गाव भर के नौजवानो का हेडक्वार्टर वह बगीची हो रही है, हर वक्त दो चार मनचले पहुँचे ही रहते हैं।

मैं०। मगर सो क्यो ? वहां क्या है ?

मुरली०। क्या भौरा मधु छोड़ सकता है ? क्या मक्खी गुड़ से अलग रह सकती है ?

मै०। तुम्हारा मतलब शायद उस बेहया से है ?

मुरली०। जी हा जनाब उसी बेहया से ! जिस बेहया से आप इतना डरे जैसे कोई गीदी भालू से !!

मै०। खैर यह तो अपनी अपनी तबीयत की बात है, तुम जवाँ-मर्द हो भालू से नहीं डरते, मै गीदी ही सही, मगर यह तो कहो कि तुम्हारी इस हंसी का क्या सबब है ?

मुरली० । (फिर खिलखिला कर) ओह तुम तो यहा रुके ही नहीं, नही तो देखते तमाशा, दुपट्टा छोड के जो भागे····

मैं० । तो क्या तुम यह सब भी देख रहे थे ?

मुरली० । हां मै तुम्हारे ठीक ऊपर उसी मकान की छत पर था जहां नीचे तुम खिडकी के आगे खड़े थे ।

मैं० । मकान की छत पर ! वहां तुम क्या कर रहे थे ?

मुरली० । जो बाकी के सब कर रहे थे सो मैं भी कर रहा था !!

मैं० । तो क्या वहा कई आदमी थे ?

मुरली० । हां पांच आदमी थे, सभी तमाशा देख रहे थे बल्कि अभी तक देख रहे हैं, मै तो तुम्हारे सबब से मै इधर चला आया ।

मैं० । यह मुझे पसन्द नही, दूसरे की छत पर और सो भी एक रण्डी का तमाशा देखने तुम्हारा आना जाना महज नादानी है ।

मुरली० । खैर नादानी या वेवकूफी ही सही मगर तुम्हे सब हाल नही मालूम इसी से ऐसा कहते हो ! आजकल तो—मैने तुमसे कहा न—गांव भर के नौजवानो का वह सदर दफ्तर हो रहा है ।

मैं० । आखिर वहां कौन सा ऐसा शहद गिरा हुआ है जो तुम लोग चिपके रहते हो ?

मुरली० । तुम नहीं समझ सकते ! कुत्तो को शहद की बू बुरी मालूम होती है ! खैर तुम मेरी बात तो सुनो पीछे अपना लेक्चर झाड़ना ।

मैं० । अच्छा कहो ।

हम दोनो उस जगह खड़े नहीं थे बल्कि गांव की तरफ चलते हुए ये सब बाते हो रही थी। मुरली ने कहा, "जब तुम दुपट्टा छोड वहां से भागे उसी समय बबुआजी भी वहां आ पहुँचे ।"

मैं० । बबुआजी कौन ?

मुरली० । अजी वही गबरू नौजवान—बाबाजी के चेले कन्हाई-

दास उर्फ देवनारायण उर्फ बबुआजी ! हम सभो ने उनकी सूरत पर मोहित हो उनका नाम बबुआ रख दिया है।

मैं० । वाह, नाम तो खूब चुन कर रक्खा—अच्छा तब ?

मुरली० । बबुआजी ने अपनी गुरुआनीजी के हाथ मे तुम्हारा दुपट्टा देखा । बस फिर क्या था, लाल हो गये और लपक कर खिड़की के पास पहुँचे । गुरुआनीजी से बोले, "क्यो, यह दुपट्टा किसका है ? बताओ जल्दी नही मै अभी गुरूजी से कहता हूँ !" गुरुआनी भी चमक कर मुंह बिचका के बोलीं, "जा जा, कह दे, काले मुझौंसे ?" बस बबुआजी नीले पीले होते एकदम मन्दिर की तरफ चले और दूर ही से चिल्ला कर बोले, "देखिये गुरूजी देखिये ! मैंने तो जरा सा हँस दिया था इस पर आपने इतना कहा सुना, अब नही देखते कि किससे बातें हो रही हैं !" बस सुनने ही की देर थी कि महन्थजी पूजा पाठ छोड माला भरी गुती में हाथ डाले खड़ाऊं खटखटाते दौड़े । कमरे के दरवाजे पर खड़े हो कर—"क्या है, क्या है ?" पुकारने लगे । बीबी भीतर से बोलीं, "क्या है ! है क्या ! कुछ तो नहीं ! क्या पूजा खतम हो गई ?" महन्थजी चुप, बोले तो क्या वहाँ था ही कौन ? बबुआजी की तरफ घूम कर बोले, क्यो बे, क्या कहता था ?" चेलेराम पास आकर बोले, "कहता क्या था ? ठीक तो कहता था, कुछ झूठ थोडे ही कहा था ! पूछिये इन्ही से क्या ये किसी से बाते नही कर रही थीं । वह देखिये अभी तक किसका दुपट्टा इनके हाथ में है !" अब तो बाबाजी की भी निगाह उस हाथ वाले कपड़े पर गई । पूछा, "यह क्या है ? किसका है?" बीबी तन कर बोलीं, "लो देखो न क्या है और किसका है दुपट्टा है कि धोती है । आपके दुलारे लाडलेजी की है कि किसी और की है। ले के आये थे कि फट गई है पेबन्द लगा दो, आपने तो उन्हे मुझसे बोलने को मना किया है और वे अपने फटे,चीथड़े सिलवाने के बहाने आए

और जब मैंने डांटा तो जा कर इधर की उधर लगाने लगे हैं !"

गुरू जी चुप, बबुआजी भी चुप, क्योंकि धोती वास्तव में उन्हीं की थी न जाने कहाँ से और कब बीबी के हाथ में पहुँच गई। बीबी ने अब मचल कर रोना शुरू किया। गुरूजी का मिजाज गर्म हुआ। बबुआ की तरफ घूम कर बोले, " क्यों बे ! अभी तुझे मैंने क्या कहा था ? मना न किया था बोलने से ! यह वही मना करने का फल है। समझाने का नतीजा है। तू अपने फटे कपड़े ले कर यहाँ आता है। इनको क्या कोई दर्जी मुकर्रर किया है ! कम्बख्त पाजी,सूअर, बेइ-मान !!' बबुआजी सिर खुजलाते खुजलाते बोले, "गुरूजी यह सब झूठ बात है ! मैंने कोई धोती सोती सीने को नहीं दी, यह तो न जाने.......!!" मगर गुरूजी कब सुनते थे। उधर बीबी ने भी भीतर ही से आवाज लगाई, "ठीक है ठीक है, अब तो मैं झूठी बनूंगी ही ! अभी क्या है अभी तो देखिये क्या क्या होता है ! कहती थी कि मुझे जाने दीजिये न माना, अपनी बेइज्जती कराई मेरी भी इज्जत ली ! यह मैं अपनी ही धोती तो हाथ मे लिये बैठी हूँ !" गुरूजी भी डपट कर बोले, "बोलता क्यो नही बे ! यह किसकी धोती है, तेरी है कि नहीं, और है तो यहाँ कहाँ से आई?" बबुआ बोलने लगे, "मैं सच कहता हूँ गुरूजी कि यहाँ जरूर कोई आदमी था और वे उसका डुपट्टा......."

मगर उनकी बात खतम कैसे हो सकती थी। गुरूजी के मिजाज का पारा तो एक सौ निन्यानबे डिगरी तक चढ़ चुका था। लेके हाथ मे खडाऊं दौड़े बबुआ को मारने, बबुआ भागे, गुरूजी ने दूर ही से खड़ाऊं फेक कर मारी सिर मे लगी, वह और जोर से भागे गुरू ने पिछिआया। दोनो गुरू चेला लगे बाग में इधर से उधर दौड़ने। बीच बीच में जो कुछ हाथ में आता था उसी से गुरूजी चेलेजी की पूजा करते जाते थे। एक जगह पानी का चहबच्चा था, आस पास कुछ फिसलन भी थी, चेलेराम तो सम्हल कर निकल गये मगर बाबाजी बिचारे पुराने आदमी,

जोर सम्हाल न सके। फिसल कर एक दम झट से गढ़े के अन्दर जा पड़े। रेशमी पीताम्बरी और रामनामी ओढ़ना मिट्टी दलदल से सन गया। सिर की जटाएं लथपथ हो गई दाढ़ी सन गई, क्योंकि गढ़े में पानी से ज्यादा काई और कीचड़ था। आखिर जब एक तरफ से बीबी और दूसरी तरफ से बबुआ ने पकड़ कर खींचा तब बाबाजी किसी तरह बाहर निकले। बस मैं यहीं तक देख के चला आया फिर न जाने क्या हुआ और कैसी निपटी।"

यह हाल सुन मेरे लिये भी हंसी रोकना मुश्किल हो गया और मै जोर से हंस पडा, मुरली भी पुनः हॅसने लगा। आखिर थोड़ी देर बाद मैंने पूछा, "तो क्या तुम लोग उसी छत पर से यह तमाशा देख रहे थे ?"

मुरली०। हॉ।

मैं०। और अगर कोई देख लेता तो ?

मुरली०। वहॉ बगल वाले नीम के पेड़ की बहुत आड़ है, हम लोग ऊपर से सब कुछ देख सकते हैं पर नीचे वाला हमें नहीं देख सकता। तुम होते तो तुम भी देखते तमाशा !!

मैं०। बस माफ करो, हाथ जोड़ा ऐसे तमाशे को ! जैसे गुरू वैसे ही चेला..........!!

मुरली०। और वैसी ही गुरुआइन ! अजी उसे कम न समझना बडी भारी चुडैल है !!

मैं०। आखिर वह है कौन और यहा आ कहॉ से पहुँची ?

मुरली०। है कौन यह तो मैं नही जानता पर सुनता हूं विधवा है, वृन्दावनधाम जा रही थी, यहॉ आ कर एक दिन के लिये टिक गई। बस महंथजी की तो देखते ही लार टपक पड़ी, भोग राग और प्रसाद का प्रबन्ध हो गया। उसने भी सोने का उल्लू पाया और महीनो से डटी ही हुई है। महन्थजी की बड़ी निगाह है उस पर, कोई

ऐरा गैरा अब बगीचे के पास फटकने नही पाता।

मैं०। महन्थजी को साधू हो के इस पक्की उमर में यह क्या सूझी!

मुरली०। वाह खूब कही, उमर बूढ़ी हुई तो क्या मन भी बूढ़ा हो गया? चेहरे पर झुर्री है तो क्या हुआ दिल तो नही मुरझाया है? शरीर सूख गया है तो क्या, वासनायें तो हरी हैं!!

मै०। छीः छीः, लोगो के हंसने का भी खयाल नहीं!

मुरली०। लोग जायं चूल्हे में, लोगो से इस झगड़े से मतलब? ये हैं संसार त्यागी साधू और वे रही पथिक, दो रोज के लिए आई हैं चली जायंगी! दोनो ही निर्मोही तब मर्द औरत का क्या परहेज!!

मै०। वाह वाह क्या कहना है? अच्छा तो फिर मैं समझता हूँ कि ये चेले साहब........

मुरली०। हां हमारे बबुआजी को भी गुरुआनीजी से लसी लगाने की सूझी है,वह इन पर थूकती नहीं रह रह कर इनकी दुर्गति करती और कराती है, पर ये ऐसे वेहया हैं कि जोक की तरह चिपके ही जाते हैं, शायद सोचते हो कि कभी न कभी तो उनकी मोहनी सूरत पर मोहेगी!!

मैं०। क्यों नहीं, जरूर मोह जायगी!!

मुरली०। इनके गुरु महाराज भी इनकी बड़ी बड़ी गत करते हैं—मारते हैं गाली देते हैं मगर ये किसी तरह साथ ही नही छोड़ते लगे ही हुए हैं। कोई हयादार आदमी होता तो इतनी वेइज्जती के साथ एक दिन भी रहना कबूल न करता, मगर ये किसी और ही मसाले के गढ़े हुए हैं जिनके लिये इज्जत वेइज्जत कुछ हई नहीं!

मै०। कुछ प्राप्ति की आशा होगी! महन्थजी के मरने के बाद उनके वारिस तो ये ही होगे!!

मुरली०। नही वहां भी तो कुछ बहुत नहीं है, पहिले जरूर यहां के महंथो के पास माल मता जमा जथा जमीन जायदाद गांव इलाका

सभी कुछ था पर अब कुछ नहीं, सब कुछ निकल गया। सिर्फ वह आम की बारी और यह बगिया रह गई है। इन महंथजी का एक गुरूभाई था। बडे महंथजी के मरने और इनके वारिस बनने पर वह इनसे लड़ गया और मुकद्दमा जीत भी गया। जो कुछ इनके पास था उसमें से बहुत कुछ छोड़ देना पड़ा, अब खुख हैं, हां नगदी शायद कुछ हो तो मै नहीं कह सकता।

मै०। जब यही हाल है तो फिर ये चेलेराम क्यों लगे हुए हैं? छोडें गुरू का साथ, जब माल ही नही तो गुरू क्या? मूंड़ माल के लिये मुडाया था कि गुरू के लिये!!

मुरली०। हां सोई तो! और फिर बबुआ भी कोई मंगता नहीं हैं, उनकी अपनी निज की भी जायदाद है, मकान है, जोरू है, मा है, वह सब छोड़ के साधू हो गये हैं।

मै०। हैं हैं, क्या उसके स्त्री है मा है जमीन जायदाद है?

मुरली०। हां जी हा, कुछ कंगाल फक्कड़ थोड़े ही था कि भूखा मरता हो और इससे साधू बन कर घर गृहस्थी छोड़ बैठा हो। मगर हां एक बात है, जब साधू बना था उस वक्त ये महन्थजी मुकद्दमा हारे नही थे, इनके पास माल मता था, खुख तो ये अब हुए हैं।

मै०। तो भाई फिर कैसे अब साथ छोड़े—जिसका अमीरी में साथ दिया उसकी गरीबी से कैसे भागे?

मुरली०। हुआ हुआ, रहने दो, ऐसा दिमागदार यह कम्बख्त नही है—यह बडा भारी तोतेचश्म है, इसमे जरूर कोई दूसरा भेद है।

मै०। खैर होगा कुछ, मुझे इन पचडो से क्या काम और मैं तुम्हें भी यही राय दूंगा कि इन बखेडो में न पड़ो नहीं मुफ्त में किसी दिन खुद भी बदनाम हो जाओगे, दूसरो के मकान पर चढ़ चढ़ कर ताक झाक करना क्या कोई अच्छी बात है?

मुरली०। भाई अगर सचसच सुना चाहते हो तो औरो के दिल

की तो नही जानता पर मैं अपनी कहता हूँ कि खुद व्यर्थ इस झगड़े में नही पड़ा हूँ। मुझे उसकी वेचारी भोली स्त्री और गरीब मां का खयाल सताया करता है जिनको वह दुष्ठ बडा तंग करता है। अगर यह कहो कि साधू ही बना था तो फिर गिरस्ती के जञ्जाल को एक दम इस्तीफा देता, सो भी तो नही करता ! इधर घर का भी सिलसिला जारी है और उधर महन्थी की भी फिक्र सताए हुए है। और यही बात मुझे बुरी लगती है। उसकी पौशाक तो देखी न, क्या हैट कोट जाकेट पाकेट लाकेट से चुस्त है। अब जरा उसकी वेचारी मा और पत्नी की हालत देखना जिनके यहां मैं कभी तुम्हे ले चलूंगा। वेचारी कैसी गरीबी से दिन काट रही हैं कि देख के आंसू नही रुकता। कम्बख्त की साध्वी औरत ऐसी है कि देखोगे तो तारीफ करोगे पर बिल्कुल फटे हाल हो रही है खाने का ठिकाना नहीं है, पहिरने का बन्दोबस्त नहीं है, सोने की जगह नही है, किसी तरह जिन्दगी के दिन काट रही है और तिस पर भी जब कभी दुष्ट को सनक सवार होती है या गुरूजी पीट पाट देते हैं तो कंबख्त आ कर अपनी स्त्री पर ही वह कसर निकालता है।

मैं०। क्या उसकी मां और स्त्री यहीं कहीं रहती हैं?

मुरली०। हा, वह वह देखो वह जो टूटा खंडहर उस ढूहे के पास नजर आ रहा है उसी में दोनो रहती हैं।

हम दोनो अब गाव के पास आ पहुँचे थे। वह ढूहा जिसकी तरफ मुरली ने इशारा किया था हमारे रास्ते ही में पड़ता था और मैं उस टूटे खपरैल के नीचे से पचासो दफे आ जा चुका था पर यह मुझे कभी गुमान भी नहीं हुआ था कि उस खंडहर में भी किसी का गुजर होता होगा। वह इतना टूटा हुआ और उजाड़ हो रहा था कि उसे मै उल्लू और चमगादड़ के सिवाय और किसी के रहने लायक समझ ही नही सकता था। मुरली की बात सुन मैने ताज्जुब से कहा, "क्या इस उजाड़ खंडहर मे कोई रहता भी है? मै तो इसे बरसों

से इसी हालत में देख रहा हूँ, मैंने तो कभी इसमें किसी के होने का गुमान भी नहीं किया !!"

मुरली ने इसका जवाब न दिया क्योंकि उसी समय उसकी निगाह एक बुढ़िया पर पड़ी जो बड़ी मैली और फटी हुई धोती पहिने एक लाठी टेकती हुई उस खंडहर के चबूतरे पर से उतर रही थी। मुरली ने मुझसे कहा, "देखो यही बेचारी उस कम्बख्त की मा है!" और तब लपक कर बुढिया के पास जाकर बोला, "मासी कहा चली?"

बुढिया तुरत घूमी और मुरली को देखते ही बडे प्यार से बोली, "बेटा तुम हौ? आओ आओ! मैं तो तुम्हारी ही राह देख रही थी, जब तुम नही आये तो अब गाव जा रही थी। महाबीर की मां ने थोड़े गेहूँ पीसने को दिये थे सो ही ले चली हूँ, एक आध मुट्ठी वह इस आटे मे से मुझे भी देगी।"

इतना कह बुढ़िया ने अपनी बगल में दबी मैले कपड़े मे बंधी एक पोटली दिखाई। पोटली में सेर डेढ सेर आटा होगा। मुरली ने पोटली उसकी कांख से निकाल ली और कहा, "मै उधर ही जाता हूँ इसे महाबीर को दे दूँगा, तुम कहा तकलीफ उठाने जाती हो।" बुढ़िया बोली, "नहीं नही बेटा! इसमे तकलीफ क्या? अपना तो अब भाग्य ही ऐसा हो गया है। यह न करे तो खायं क्या? तुम क्यो तकलीफ करोगे, अब चली ही हूँ दे आऊंगी।" बुढिया ने हाथ बढाया मगर मुरली ने पोटली न दी बल्कि कहा, "मासी, मुझे बड़ी भूख लगी है कुछ खाने को दो।"

बुढिया बड़ी खुशी से बोली, "हा हा आओ बेटा, कुछ खा के जल पीओ, तुमने तो अब आना ही बन्द कर दिया। आज कै रोज के बाद तुम्हारी सूरत दिखी है। चलो भीतर चलो। बेचारी कुन्द भी तुम्हे बहुत याद करती थी। उसकी तबीयत नहीं अच्छी है, जर लगा है, आओ।" कह कर बुढ़िया फिर घूमी और खंडहर के अन्दर चली।

इसी समय उसकी निगाह मुझ पर पडी और उसने रुक कर मुरली से कहा, "बेटा यह कौन है?" मुरली बोला, "यह मेरे भाई हैं, बाहर रहते हैं, कल आये हैं। इन्हे भी मै अपने साथ ही लेता आया।"

मैंने बुढ़िया को हाथ जोड़ा, उसने अपने कापते हाथ को उठा कर जिसमें सिर्फ हड्डी और चमड़ा ही बच गया था, "जीते रहो बेटा!" कहा, और तब मुरली से बोली, "इनको भी ले चलो। यह भी जल पी लेंगे।" मुरली के इशारे से मैं भी साथ हुआ।

मुरली के हाथ का सहारा लिये हुए बुढ़िया आगे आगे चली और पीछे मै चला। हम लोग घूम कर उस टूटे मकान के दरवाजे की तरफ चले जो पीछे की तरफ पड़ता था। मकान जो अपनी असली हालत में छोटा न होगा इस समय बिल्कुल ही टूटा था। बाहर की बनिस्बत भीतर जाने पर वह और भी वाहियात मालूम हुआ और जब हम लोग चौकठ लांघ कर आंगन में पहुँचे तब तो और भी बुरी हालत देखने में आई। सिर्फ उत्तर तरफ का थोडा सा हिस्सा तो कायम था बाकी तीनो तरफ खंडहर था। दीवारें टूट गई थीं, उनके ऊपर छतें आ गिरी थीं। जगह जगह से पीपल आदि के पेड़ निकलने लगे थे और कई जगह तो घास वगैरह ने पूरा जंगल ही मचा रक्खा था। मकान की दशा देख मेरी अजीब हालत होने लगी। क्योंकर इस खंडहर में कोई रह सकता था जिसमें सांप बिच्छू का डर तो था ही बल्कि जो कुछ हिस्सा बचा हुआ रहने के काम मे लाया जा रहा था वह भी आज कल आज कल कर रहा था और उसमें रहना खतरे से खाली न था।

मुरली और बुढ़िया को देख भीतर की एक कोठड़ी से एक कमसिन औरत निकल कर बाहर आई। इस औरत की उम्र बीस या बाईस वर्ष की होगी। चेहरा सुडौल, नखसिख अच्छा था, बहुत सुन्दर कहलाने योग्य न होने पर भी उसकी भोली सूरत मुझे दिल से भाई,

मगर उसकी हालत देख रुलाई आने लगी। बुढ़िया की धोती तो फटी हुई थी ही मगर इसकी तो उससे भी गई गुजरी हालत में पहुँच चुकी थी, बस यही समझिये कि मुश्किल ही से लज्जा निवारण के योग्य रह गई थी। वदन सूखा हुआ था, चेहरा मुरझा गया था, रंग पीला हो रहा था, आखे गढे मे घुसी हुई थीं, यही मालूम होता था कि इसे महीनो से भर पेट भोजन नही मिला है, तथापि सूरत में जो भोलापन जो माधुर्य जो सौन्दर्य जो मनोहरता थी मै उसे भूल नही सकता।

मुरली को आते देख वह वडी प्रसन्नता से "भैया तुम आ गये ?" कह कर उसकी तरफ वढी मगर तुरत ही उसकी निगाह मुझ पर पड़ी। एक अजनवी को देखते ही उसने तुरत सिकुड कर मुंह पर घूंघट डाल लिया और पीछे की तरफ मुड़ी पर उसी समय मुरली ने कहा, "ये मेरे भाई हैं कल ही आये हैं, मैं इन्हे भी लेता आया।" सुन कर वह घूमी मगर घूघट डाले हुए ही। बुढ़िया ने उससे कहा, "कुन्द जरा यहा खाट डाल दे, ये लोग वैठें तो सही।" कुन्द एक टूटी चारपाई की तरफ वढी जो एक तरफ खूंटी के साथ टगी हुई थी मगर मुरली लपक कर आगे वढ गया और खटिया उतार आगन मे डाल मुझसे वोला, "लो वैठो।" मै उस पर वैठ गया, मुरली भी वैठा मगर हम दोनो आदमी वहुत सम्हले हुए थे क्योकि वह खाट इस लायक न थी कि दो तंदुरुस्त आदमियो का पूरा वोझ सम्हाल सके।

बुढ़िया ने कुन्द से कहा, "वेटा गिलास मे पानी लाकर इन्हे दे तव से मै कुछ मीठा लाती हूं।" वुढ़िया इधर उधर से खोज कर कुछ गुड मे पके हुए सेव लाई, हम दोनो ने उसे खाया, कुन्द एक गिलास मे जल लाई, मुरली के इशारे से मै उसे उठा दूर ही से जल पी गया और गिलास जमीन पर रख दिया। घूंघट डाले कुन्द आकर गिलास ले गई और धोकर मुरली के लिये पानी ले आई। मुरली ने पानी पी कर गिलास उसके हाथ में दे दिया, तव वह कुछ दूर हट गई और

बुढ़िया पास ही जमीन पर एक फटी चटाई बिछा और उस पर बैठ कर बातें करने लगी।

थोडी देर बाद मुरली ने पूछा, "क्यो मासी। आज कल देवनारायण आते हैं कि नहीं?" बुढ़िया बिगड कर बोली, "किसका नाम लेते हो बेटा! उस कम्बख्त का तो मै मुंह नहीं देखा चाहती! परसों आया था, कुन्द को उस वक्त जर......."

शैतान का नाम ही लो तो वह आ हाजिर होता है। बुढ़िया की बात खतम नहीं हुई थी कि बाहर से डासन बूट की चमराहट सुनाई पडी और तुरत ही कन्हाईदास उर्फ देवनारायणजी आंगन में आ धमके। पौशाक इस वक्त भी इनकी वही थी जो मै पहिले देख चुका था मगर फर्क इतना था कि सिर पर एक अंगरेजी टोपी हाथ मे घुड़सवारी का चाबुक और दुम के पीछे एक कुत्ता भी लगा हुआ था।

आते ही उनकी पहिली निगाह तो मुझ पर पड़ी, कुछ त्योरी चढ़ी, फिर मुरली को देखा, भवें और सिकुड़ीं, अपनी मां को देखा और तब अपनी बीबी को भी पास ही बैठे देख कर तो एक दम ही आगभभूका हो गया। कुन्द तो उसे देखते ही सकपका कर उठ खडी हुई मगर बुढ़िया बोली, "आओ बैठो, देखो आज कई दिन बाद मुरली आया है, यह उसका भाई है......."

मगर बात काहे को खतम होने को थी! बबुआ तो इस समय जलते तेल के बैगन हो रहे थे। मुरली की तरफ देख कर बोले, "क्यो जी, फिर तुम यहां आये?" तब मेरी तरफ देख कर कहा, "क्यो साहब! आप यहां दूसरे की औरतो के बीच मे क्या कर रहे हैं? किससे पूछ कर आप यहां आये?"

मै कुछ सकपका कर खाट से उठ खड़ा हुआ। मुरली भी खड़ा हो गया और मेरे आगे आ कर बोला, "तुम्हारी मा के हुक्म से आए थे और किसके हुक्म से। तुम कौन हो जी और तुम्हारा अब यहां हक

क्या है जो प्याज की तरह आखें दिखा रहे हो ?'

यह सुनते ही बबुआ पूरे गर्म हो गये, अकड़ कर बोले, "चल निकल यहा से ! दूसरे के मकान में आ कर बकबक करता और सानसाही दिखाता है। तेरे दादा का मकान है क्या वे जो यहा खडा होकर आखे चमका रहा है। निकल जा यहां से, जा निकल अभी, (मेरी तरफ घूम कर) अपनी कुशल चाहते हो तो आप भी अभी यहा से चले जाइये नहीं तो...." इतना कह उन्होने मतलब भरी निगाहो से उस चाबुक की तरफ देखा जो हाथ में थी।

मैंने मुरली की तरफ गहरी निगाह डाली जिसका मतलब था— देखो तुमने पराई जगह लाकर मेरी बेइज्जती कराई ! उधर बबुआ पलट पड़े और उधर चले जिधर कुन्द आड में खडी थी। जोर जोर से कुछ डॉटने डपटने की आहट लगी और फिर साथ ही कुन्द के चिल्लाने की आवाज आई जिसे सुनते ही बुढिया उठी और यह कहती उधर लपकी, "हाय हाय ! वह कम्बख्त बेचारी कुन्द को मार रहा है !!" कुन्द के चीखने की फिर आवाज आई और तब आहट से मालूम हुआ कि वह जमीन पर गिर गई, तब तक बुढ़िया दौडी दौडी वहां पहुँची और रो कर बोली, "अरे बेटा, क्या करता है ! वह बेचारी तो पहले ही से मरी हुई है ! उसे क्यो मारता है, उसका क्या कसूर ! तू मुझे मार ले, वह तो आज ही खाट से उठी है, बुखार से मर रही है, मरे को क्यो मारता है !!'

"चुप रह कम्बख्त !" कह कर कन्हाई ने दो चाबुक अपनी स्त्री को और फटकार दिये। बुढ़िया ने उसका हाथ पकड़ लिया। अब अपनी औरत को छोड़ वह कम्बख्त अपनी मा पर टूटा। चाबुक के दो भरपूर हाथ उसने अपनी मा के ऊपर जमाये। वह बेचारी बूढी औरत पहिले ही हाथ में जमीन पर गिर गई और दूसरे में तो बेहोश ही हो गई।

हम दोनों अभी तक सकते की सी हालत में खड़े यह सब हाल देख रहे थे, मगर बेकसूर औरतों की यह दुर्गति देख मेरी आंखों में खून उतर आया और मुरली की तो अजीब ही हालत हो गई। उछल कर एक ही छलांग में वह कन्हाई के पास पहुँचा। कन्हाई ने एक हाथ चाबुक का तो उसे जमाया पर इसके बाद फिर उसकी कुछ न चली। मुरली उससे कहीं जबर्दस्त पड़ता था। उसने उसकी कलाई पकड कर इतने जोर से उमेठी की चाबुक छूट कर हाथ से गिर गई। कन्हाई ने अपने बूट की एक ठोकर मारी। लगी या नहीं यह तो मैं नहीं देख सका पर उसी समय वह चाबुक उठा मुरली ने उसे मारना शुरू किया।

तबीयत तो हुई कि मैं भी चलूं और पहुँच कर अपना गुस्सा निकालूं, दवा के संग अनुपान का भी बन्दोबस्त कर दूँ, मगर फिर एक पर दो मुनासिब नहीं यह सोच कर रुक गया, दूसरे यह भी विश्वास था कि मुरली उसके लिए बहुत काफी है। हां इतना खयाल मैंने जरूर रक्खा कि वह भागने न पावे और इसी खयाल से हट कर मकान के दर्वाजे के पास हो गया।

दो तीन हाथ तो चाबुक के मुरली ने उसको जमाये पर उन मोटे कपड़ो पर चाबुक का जैसा असर वह चाहता था वैसा नहीं हुआ, उधर वह भी भिड़ जाने की कोशिश कर रहा था अस्तु मुरली उससे लिपट गया और दोनो में गहरी पकड़ होने लगी।

भला कुश्तीबाज नौजवान मुरली के आगे उस लम्पट की क्या चल सकती थी! वह टिक ही क्या सकता था? बात की बात में मुरली ने उसे उठा कर दे मारा तब एक हाथ से उसे दबा कर दूसरे हाथ से अपना जूता उतार उससे मारना शुरू किया।

बेशक मै मुरली की तारीफ करूंगा! वह वह सफाई के हाथ जमाये कि मजा आ गया। हर एक चोट पर नीचे से देवनारायण:

"हाय बापरे, मरे, गये, माफ करो !" की आवाज लगाता था मगर मुरली को तो गजब का गुस्सा चढ़ा हुआ था। उसने अपना हाथ नहीं रोका और मेरी भी अजीब ही हालत हो रही थी। भला जो आदमी अपनी बीमार पत्नी और बूढी मा पर चाबुक उठावे उस पर भी क्या किसी तरह का रहम करना चाहिये !!

मगर यकायक मुरली का हाथ रुक गया, पीछे से कुन्द ने आ कर उसका कन्धा छूआ था और जब उसने घूम कर देखा तो आँखो में आसू भर कर हाथ जोडा। उसकी सूरत देख मुरली रुक गया, उसके आसू की झडी और जुडे हुए हाथ देख तथा अपने गुस्से पर शायद आप ही शर्मिन्दा हो कर वह कन्हाई को छोड़ अलग हो गया। बुढिया भी काखती कराहती उठी और कहने लगी, "जाने दे बेटा मुरली, जाने दे !!"

बबुआजी नीचे ही से गरदन घुमा कर देखते जाते थे कि कही फिर तो बरसात शुरू नहीं होती, मगर जब उन्होने देखा कि मुरली बुढिया को जमीन से उठाने चला गया है तो मौका समझ वह फुर्ती से उठ खडा हुआ और दरवाजे की तरफ लपका मगर दरवाजे पर मैं खडा था। मैंने उसका मतलब समझ कहा, "खबरदार, वही रहना !" उधर से मुरली ने भी आवाज लगाई, "देखना जाने न पावे !"

मुरली की बात सुन पुनः कुन्द ने उसकी तरफ कातर दृष्टि से देखा और फिर हाथ जोड़ा। मुरली ने इशारे से कहा, "घबराओ मत !" और एक लोटा जल लाने को कहा। जल से उसने बुढ़िया का मुंह धोया, हाथ पैर की मिट्टी साफ की, अपने दुपट्टे से हवा की और तब सहारा देकर खटिया पर बैठाया, इसके बाद देवनारायण की तरफ देख कहा, "इधर आ !"

देवनारायण घबराया कि अब फिर क्या आफत आने लगी है, मगर दरवाजे के सामने मुझे खड़ा पा मुरली की कड़ी निगाह के

सामने उज्र करने की भी हिम्मत न पड़ी और वह कांपता हुआ आगे बढ़ा। पास पहुँचने पर मुरली ने कहा, "देख ! कुन्द तो तेरी औरत है ! चाहे तू साधू हो गया और देवनारायण की जगह कन्हाईदास बन गया फिर भी तू उस पर अपना कुछ हक समझ सकता है मगर तैंने जो अपनी मां पर हाथ उठाया उसके लिये मै तुझे कभी माफ नहीं कर सकता। तू अभी जमीन पर दण्डवत करके इनको प्रणाम कर और माफी मांग नही तो....!"

मुरली ने कुछ इस तरह की भावभंगी करके बांह का कपड़ा हटाया और मुट्ठी बांध कर दिखाया कि कन्हाई की जरा भी नाहीं नूकर की हिम्मत न हुई। मार ने उसे भींगी बिल्ली बना दिया था। मै समझता हूं अगर मुरली उसे थूक के चाटने को भी कहता तो वह मन्जूर कर लेता और इन्कार करने की हिम्मत न लाता। उसने जमीन पर गिर कर अपनी मां को दण्डवत किया, नाक रगड़ा और दबी जुबान से माफी भी मांगी, मगर सिर उठा उठा कर देखता भी जाता था कि कहीं फिर उड़ने तो नही लगती ! आखिर जब वह मुरली के कहे मुताबिक सब कुछ कर चुका तो मुरली ने कहा, "उठ और मेरी तरफ देख !!"

कन्हाई उठा और मुरली से दूर हट कर खड़ा हुआ। मुरली बोला, "देख, आज तो मै इतने ही पर तुझे छोड़ देता हूँ मगर आज के बाद फिर कभी अगर मुझे पता लगा कि तूने अपनी मां या स्त्री में से किसी को भी मारा है, या गाली दी है, या कोई कड़ी बात भी कही है, तो तेरे हक में अच्छा न होगा ! बस इतने ही से समझ जा !!"

मुरली ने देवनारायण का जोम तोड़ दिया था। थोड़ी ही सी मरम्मत ने उसे पालतू कुत्ता बना दिया था। इस समय मुरली ने जो जो उससे कहा और जैसे जैसे वादे कराये सब उसने मन्जूर किया

और इसके बाद मुरली के मुंह से—"चल हट मेरे सामने से !" सुनते ही तो वह ऐसा दबक कर मेरे बगल से भागा कि मैं मुश्किल से अपनी हंसी रोक सका।

बड़ी देर तक मुरली बुढिया और कुन्द को समझाता बुझाता और दम दिलासा देता रहा। जब वह बातचीत से खाली हुआ तो मै भी उसके पास पहुँचा। मुरली ने कहा, "अब हम दोनो जाते हैं, तुम वह पोटली मुझे दे दो मै महावीर को दे दूँगा।" बुढ़िया ने वह पोटली दे दी और उठ कर बड़े प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "जाओ बेटा जाओ, मगर मुझसे रोज मिलते रहा करो। बेटा तुम्हारे ही सबब से हम दोनो दुखिया जी रही हैं, नहीं तो न जाने कब का वह दुष्ट हमें जहन्नुम पहुँचा दिये होता। मगर तुम उससे बचे रहना, वह कम्बख्त बड़ा पाजी...!!"

मुरली बोला, "नही वह मेरा कुछ नही कर सकता और अगर मुझसे जरा बोला भी तो अब की मै उसे दुरुस्त ही कर के छोडूँगा। मै कई दफे सुन चुका था कि वह तुम सभो पर हाथ छोड़ा करता है और मुझे मन ही मन उस पर बड़ा गुस्सा चढ़ा हुआ था। आज जब मेरे सामने उसने वही किया तो मै किसी तरह अपने को रोक न सका।"

तीसरा बयान

हम दोनों उस खंडहर के बाहर निकले। किस्मत की मार उसी समय वह कुत्ता भी जो कन्हाई के साथ आया था और मालिक की दुर्दशा होती देख कहीं दबक रहा था अब मौका पा कर निकला और दुम दबाये बगल से भागा। मुरली ने उसे ऐसी ठोकर मारी कि वह पें-पें करता दूर जा गिरा। मैंने यह देख कहा, "वाह वाह मुरली तुम कहीं पागल तो नहीं हो गये! इस बिचारे ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है!!"

मुरली ने कहा, "सचमुच मैं इस वक्त पागल हो रहा हूँ, गुस्से ने मेरी अक्ल खराब कर दी है!"

मैंने कहा, "इतनी पूजा तो कर चुके अभी तक गुस्सा शान्त नहीं हुआ?" जिसके जवाब में उसने कहा, "क्या कहूँ, कुन्द ने मुझे रोक दिया नहीं तो आज मै उसके हाथ पांव तोड़ के छोडता! सब कुकर्म करने को तो पाजी साधू बना ही है फिर मा को मारे बिना क्या बिगड़ा जाता था?"

इसी तरह की बातें करते हुए दोनो मोदपूर लौटे। मुरली के कपड़े आदि कई जगह से फट गये थे और कुछ चोट भी आ गई थी

अस्तु वह मुझसे अलग हो कर अपने घर चला गया मगर यह कहता गया, "सवेरे जल्दी ही उठना, घूमने चलेंगे।"

दूसरे दिन बड़े तड़के ही मुरली ने मुझे आवाज दी। मैं जाग तो गया था पर अभी तक खाट ही पर पड़ा हुआ था उसकी आवाज सुनते ही खडबडा कर उठा और मकान के बाहर निकला। मुझे एक अंगोछा लपेटे और एक ओढे खडे देखते ही बिगड़ कर मुरली बोला, "बस यह तो मै सोचता ही था कि अभी खाट पर पड़े होंगे करवटें बदली जाती होगी, नवाब साहब ही ठहरे, जल्दी उठें तो नजला न हो जाय!!"

मैंने हंस कर कहा, "खैर खैर बहुत उबलो मत, यह कहो क्या प्रोग्राम है किधर चलना है?"

मुरली०। जिधर जी में आवेगा तिधर चलेंगे!

मैं०। आखिर निपटने विपटने......?

मुरली०। वहीं चल कर निपटेंगे, तुम सिर्फ धोती गमछा ले लो; मैंने भी ले लिया है।

दस मिनट के अन्दर हम दोनो वहा से चल पड़े। ठण्डी ठण्डी हवा वह रही थी, दो चार चिडियों की चखचख अभी शुरू हुई थी। पश्चिम तरफ अभी भी दो चार तारे घमण्ड से सिर ऊंचा किये हुए थे। गाव की सकरी सड़क के दोनो तरफ पेडो की छाया के कारण कुछ अन्धकार सा था मगर वह ऐसा नहीं कि आते जाते आदमी की सूरत पहिचानी न जा सके। हम लोग थोडी ही दूर गये होंगे कि सामने म एक घुड़सवार आता नजर पडा। थोडी ही देर मे घोड़ा पास आ पहुँचा और तब हम दोनो ने पहिचाना कि ये मोदपुर के नौजवान जमींदार राय सीताराम हैं। सीताराम ने भी हम दोनो को देख बाग खींची।

मुरली और सीताराम मे गहरी दोस्ती थी क्योंकि एक तो दोनो

में कुछ रिश्ता भी था दूसरे दोनो ने कुछ समय तक एक साथ एक ही स्कूल में पढा भी था। मुरली के सबब से ही मुझसे भी इनकी जान पहिचान बढ़ रही थी।

मुरली को देखते ही सीताराम ने कहा, "क्यो जी मुरली! तुम अब क्या अपने को गुण्डा भी लगाने लगे हो? लोगो से मारपीट करते हो? क्या कुछ लात खाने का इरादा है?" इतना कह हंसते हुए वे घोड़े से उतर पड़े। मुझे देख "आप कब आये?" कह मुझसे हाथ मिलाया। मुरली ने पूछा, "क्या वह आप तक पहुँचा था?"

सीता०। हां कल बडी रात तक मेरा माथा खाता रहा, देर तक रोता कलपता तथा तुम्हारी शिकायत करता रहा। उसकी बात से ही सब मामला मै समझ गया। जी में तो आया कि दरबान को हुक्म दूँ कान पकड़ कर बाहर निकाल दे पर महन्थजी के खयाल से रह गया। आखिर हुआ क्या था?"

मुरली०। मामला क्या. वह हरामजादा अपनी मा और औरत को मारा करता है। मैं बहुत दिनो से इस बात को सुनता आता था। कल मै वहां कुन्द और उसकी मां से बात कर रहा था कि वह आ पहुँचा। मुझसे खार तो खाता ही है, वहा देख बिगडा और बदज़ुबान बकने लगा, फिर कुन्द के पास पहुँचा और यह कर कि "तैं क्यो मुरली से बात किया करती है?" उस बेचारी को मारने लगा। उसकी मा रोकने गई तो उसको भी मारने लगा। मुझे गुस्सा तो चडा ही हुआ था, यह देख रहा न गया। मैंने बचाजी को जमीन पर पटक कुन्दी करना शुरू किया। अगर कुन्द न रोकती तो मै हजरत को लंगड़ा लूला करके छोड़ता!

सीता०। खूब किया, वह इसी लायक है। उसने अपनी शिकायत में यह बात तो कही नहीं पर फिर भी मै समझ गया कि कुछ ऐसी ही घटना हुई होगी।

मुरली । उसने आपसे क्या कहा ?

सीता० । बस तुम्हारी शिकायत और क्या ? कहता था कि मुरलीधर मेरी औरत को बहलाता फुसलाता है खराब किया चाहता है मैंने रोका तो मुझे मारा। बस ऐसी ही ऐसी बातें कहता था।

यह बात सुनते ही मुरली की आंखें लाल हो गईं, क्रोध से होंठ कापने लगे। वह गरज के बोला, "है वह कमीना अपनी स्त्री पर अब ऐसा कलंक लगाने लगा है ? जिसकी बदौलत उसकी जान बचती चली जाती है उसी के बारे में वह ऐसा कहता है ! इसमें कोई शक नहीं कि भारी पापी है ! खुद जैसा है वैसा ही दूसरों को भी समझता है ! खैर कोई हर्ज नहीं, समझ लूंगा !! हाय हाय ! ऐसी सती पर और यह कलंक ! जिसके प्रताप से वह बचता जा रहा है उसी पर यह ऐब !!"

पर मुरली का यह गुस्सा देख सीताराम बहुत ताज्जुब में आ गए उन्होंने कहा, "मुरली, अगर तुम्हारा स्वभाव मैं जानता न होता तो तुम्हारी इस समय की बातें सुन मुझे जरूर निश्चय हो जाता कि कुछ न कुछ दाल में काला अवश्य है। अकारण ही तुम इतना बमक उठे। अजी उस लंगूर की बात भी क्या सुनने लायक है ? तुम्हारे रंग ढंग से तो मालूम होता है मानो तुमने समझ लिया कि मैंने उस उल्लू की बात सही मान ली !!"

मुरली० । (शान्त हो कर) नहीं नहीं, मगर बात यह है कि भले को जब कोई बुरा बताता है तो मुझे बड़ा क्रोध आता है। तुमने अभी तक कुन्द को शायद देखा नहीं, नहीं तो तुम भी समझ जाते कि वह कैसी साध्वी औरत है, उसके बारे में किसी तरह का बुरा खयाल सोचना भी भारी पातक है।

सीता० । (सात्वना के ढंग से) हां हां बेशक, मैंने भी उस लड़की की तारीफ सुनी है और उससे बहुत खुश हूँ,बल्कि इस मामले में तुम्हारी राय लिया चाहता था ।

मुरली०। मेरी राय ? किस मामले में ?

सीता०। आखिर देवनारायण की मां मेरी रिश्तेदार तो हुई है, और जब उन सभो की ऐसी हालत हो गई है तो उनकी कुछ न कुछ मदद करना मेरा कर्तव्य है ही, अस्तु मै उनकी सहायता किया चाहता हूॅ। कन्हाई तो उन सभो को कुछ खाने पीने को देता नहीं होगा ?

मुरली०। अजी राम कहो ! उलटा जब तब अपनी जोरू को मार पीट उसके गहने ले जाता और फूंकता तापता है। वेचारी के पास एक छल्ला तक न छोडा, उन्हे खाने को देगा !!

सीता०। सोई तो ! और उनके रहने का मकान भी आज कल में गिरने ही वाला हो रहा है, अस्तु मै चाहता हूॅ कि उनके रहने और खाने पीने का कोई पक्का बन्दोवस्त कर दूॅ। मेरे मकान मे बहुत जगह है, अगर उन्हे उसमें रहना मंजूर हो तो अच्छा ही है नहीं और कई मकान खाली पड़े हैं उनमें से किसी में आ जायं। मैं कुछ महीना भी दिया करूॅगा, किसी तरह से रहने और खाने पीने का कष्ट तो दूर हो।

मुरली०। हा अगर कुछ कर दो तो बहुत अच्छा हो। उन वेचारियो को बड़ी तकलीफ है। मगर मुझे डर है कि शायद वह घमंडी बुढिया किसी से मदद लेना मंजूर न करे।

सीता०। अरे तो मैं कुछ खैरात थोडी ही करने लगा हूॅ ! मैंने सुना है कि कुन्द को पढ़ना लिखना और सीना परोना आता है ! वह आ कर मेरी पत्नी को सिखाया करे, उसके वदले मै उसे रहने की जगह और पन्द्रह रुपया महीना दूॅगा।

मुरली०। हा यह हो सकता है, अच्छा मै उन दोनो की राय लेकर आपसे कहूॅगा।

सीता०। हां मगर जल्दी करना, मुझे उन वेचारियों का हाल सुन बडी दया आती है। अभी तक मैने कुछ नहीं किया इसी का वल्कि मुझे अफसोस है।

मै । मगर क्या इस बात मे देवनारायण की राय ले लेना मुनासिब न होगा ! वह बड़ी दुष्ट प्रकृति का आदमी है। शायद आपकी इस नेक सलाह को भी किसी बुरे मतलब मे लगा बैठे।

सीता० । नही ऐसा तो शायद न करे। इसमें तो शक नहीं कि वह हद्द दर्जे का कमीना है पर मेरे मुकाबिले मे कुछ कहने की हिम्मत तो शायद न करे। खैर मै उसका बन्दोबस्त भी कर लूंगा, पहिले उन दोनो औरतो की मर्जी का पता लग जाय

मुरली । मै आज ही आपको बता दूँगा क्योकि और तो जो कुछ है सो है ही वह मकान बडा खतरनाक है जिसमें वे रहती हैं। न जाने किस तरह रुका हुआ है नही तो कब का गिर पड़ना चाहिये।

अच्छी बात है आप दोनो शायद टहलने जा रहे हैं, तो टहल आइये मै भी अब चलता हूँ—(मेरी तरफ देख कर) शाम को आप मुझसे मिलियेगा ही। मुरली इन्हे जरूर लेते आना !" कह कर सीताराम घोड़े पर चढ़े और चलते बने। हम दोनो कुछ देर तक उस तरफ देखते रहे, तब मुरली ने कहा, 'इसमे शक नहीं कि सीताराम दिल का बहुत अच्छा और दयालु आदमी है।'

मैने कहा, बेशक ऐसा ही है।" और हम लोग फिर उसी तरफ चलने लगे जिधर जा रहे थे।

लगभग पौन घण्टे बाद हम लोग मुरली के एक बाग में पहुँचे और वहीं सब कामो से निपट और स्नान सन्ध्या से छुट्टी पा आठ बजते बजते मोदपुर की तरफ लौटे। गांव के पास पहुँच मुरली ने कहा, 'अगर कहो तो इसी समय जाकर कन्हाई की मा से उस सीताराम वाली बात का फैसला कर आऊं ?"

मैने कहा "अच्छी बात है जाओ पूछ आओ।" मुरली बोला, "क्यो, क्या तुम न चलोगे ?" मैने कहा "नही तुम ही जाओ, मेरा यहा काम नहीं है। तुम उन्हें समझा बुझा कर ठीक करना

क्योकि इसमें कोई शक नहीं कि अगर वे दोनो सीताराम की बात बात मान लेंगी तो सुख से रहेंगी और इस मकान से हट जायंगी तो कन्हाई के अत्याचार से भी बहुत कुछ बची रहेंगी। पर इस काम में तुम्हारे साथ मेरा रहना ठीक न होगा।"

मुरली चला गया। मैं कुछ देर तक तो वही खडा रहा फिर न जाने क्यो यकायक दिल में उठा कि चलें जरा महन्थ महाराज की बगिया की तरफ चलें और श्री राधाकृष्ण का दर्शन करें। कुछ तो कल की अद्भुत कथा का स्मरण बना हुआ था दूसरे यह भी आशा थी कि शायद आज भी कुछ मनोहर बाते सुनने में आवे अस्तु मै धीरे धीरे उधर ही रवाना हुआ मगर कुछ ही दूर गया होऊंगा कि उस वेश्या की बात याद आ गई जिसने कल दुपट्टा पकड़ लिया था। जी में कुछ डर सा मालूम हुआ और पैर ठिठक गए पर फिर मन मे आया कि चलो जी. वह कुछ राक्षसी थोड़ी ही है कि खा जायगी और फिर मै आज उधर जाऊँगा ही नही, अगर मोका देखा तो ठीक है दर्शन लूंगा, नही दरवाजे ही से प्रणाम कर पलट पड़ूंगा।

बागीचे के पास तक तो बेखौफ चला गया मगर आगे बढ़ते कुछ हिचकिचाहट सी होने लगी। पांव रुक रुक कर उठने लगे. यहां तक कि फाटक पर पहुँच कर तो, जो बन्द था बिल्कुल ही रुक जाना पडा और यह खयाल भी उठने लगा कि व्यर्थ ही इधर आये।

क्या करूं, अन्दर चलने की कोशिश करूं या न करूं, किसी को पुकारू या न पुकारूं फाटक को धक्का दे कर देखूं या लौट ही जाऊं, खडा खडा यही सब सोच रहा था कि पीछे से किसी की आहट आई। घूम कर देखा तो हमारे सुन्दर सलोने बबुआ कन्हाई-दास उर्फ देवनारायण जी खडे मुस्कुराते नजर आए। मै कुछ अप्रतिभ सा हो उनकी तरफ देखता रह गया और वे अपनी मधुर हँसी की बिजली गिराते हुए बोले, 'कहिये डाक्टर साहब, यहा खड़े

क्या कर रहे हैं ? क्या अपना दुपट्टा वापस लेने आये हैं !!"

मुझे बड़ा क्रोध मालूम हुआ, उसकी वेहयाई पर ताज्जुब भी हुआ कि देखो कम्बख्त को, कल इतनी लातें खा चुका है मगर फिर भी शर्म नहीं आती ! आखिर मैंने कहा, "जी नहीं, अपनी धोती सिलाने आया हूँ !!"

मेरी बात सुन उसकी भृकुटी कुछ चढ गई, मेरी तरफ घूर कर देखने लगा। मगर मैंने जो कुरते की आस्तीने ऊपर चढाई तो तुरत ही भाव बदल भी गया। ढग बदल कर कहने लगा, 'नहीं नही आप तो मेरी बात का व्यर्थ ही दूसरा अर्थ लगा बैठे। मैंने तो एक साधारण बात पूछी कि शायद दुपट्टे की तलाश में आये हों।"

मै०। मैने भी तो एक साधारण सी ही बात कही।

कन्हाई०। लेकिन आपको इस बात का पता क्योंकर लगा ?

मै०। किसी तरह लगा तुमसे मतलब !!

मेरी बात सुन वह कुछ देर के लिये चुप हो गया फिर बोला "अच्छा जाने दीजिये यह कहिये कि मेरी एक बात का जवाब आप देंगे ?"

मै०। यह तो बात सुन के ही कह सकता हूँ।

कन्हाई०। अच्छा तो यहा नहीं आप जरा उस तरफ चलिये तो कहूँ।

मैने कुछ सोच कर कहा, "नही तुम्हें जो कुछ कहना हो यहीं पर कहो।' यह सुन वह कुछ मुस्कुरा कर बोला, "क्या आप डरते हैं ? घबराइये नही, मुझे आपसे कोई दुश्मनी नहीं है !!'

यह सुनते ही गर्म होकर मैने कहा, "जब तुम यह कहते हो तो जहा कहो मैं चलने को तैयार हूं क्योकि मैं तुम्हारी एक खटमल के बराबर भी परवाह नहीं करता। और डर, सो उसके लिये तो मेरे हाथ काफी हैं ! चलो कहा चलते हो देखूं !!'

मेरी बात सुन शान्ति के ढंग से कन्हाई बोला, 'नहीं, आप तो

व्यर्थ ही गुस्सा कर रहे हैं ! मेरा मतलब सचमुच आप से दो चार बातें दरियाफ्त करने का है। यहां रुकने से गुरुजी देख लेंगे तो मुफ्त की झाड सुननी पड़ेगी इसी से जरा हट चलने को कहता हूं।'

मैंने ताज्जुब करते हुए कहा "अच्छा चलो किधर चलते हो।' वह आगे आगे हुआ और मै उसके पीछे रवाना हुआ। बाग की चहार दीवारी के साथ चलता हुआ वह बाग के पूरब वाले कोने के भी आगे मुझे ले गया। यहां बिल्कुल सन्नाटे में पहुंच वह रुका और मुझसे बोला, 'मै कुछ ऐसी बातों का जबाब जानना चाहता हूं जो डाक्टरी से सम्बन्ध रखती हैं।"

मै०। क्या हैं वे बातें ?

कन्हाई०। आपने डाक्टरी पास की है, आप ठीक ठीक बता सकेंगे।

मै०। हो सकता है पर कुछ कहोगे भी ?

कन्हाई०। आप ठीक ठीक बतावेंगे तो ?

मै०। कुछ नाराज होकर अब खाली भूमिका ही बांधते जाओ ! मुझे इतना समय नही है कि तुम्हारे ऐसे बेवकूफो के साथ फजूल सिरखप्पन किया करूं, लो मै जाता हूँ।

कन्हाई०। नहीं नही, कहता हूँ कहता हूँ !! (पास आकर) मैने सुना है कि लोग हीरा चाट कर मर जाते हैं क्या यह बात सच है ?

मै०। नहीं गलत—हीरा भी क्या कोई जहर का टुकड़ा है जिसे चाटने से मौत हो जायगी !!

कन्हाई०। मगर मैंने तो ऐसा ही सुना है।

मैं०। तो गलत सुना है।

कन्हाई०। अच्छा कोई हीरा खा ले तो ? उस हालत में तो जरुर ही मर जायगा ?

मैं०। यह भी कोई जरुरी नहीं है। सब से अधिक सम्भावना तो

यही है कि वह मल के साथ बाहर निकल जायगा, लेकिन यदि ऐसा न हुआ तो क्या नुकसान होगा यह बात ज्यादातर हीरे की तराश पर है। अगर उसकी काट ऐसी है कि कई तेज नोकें निकली हुई हैं तो पेट में पहुँच ये नोकें आंतो को छील देगी और वे घाव अगर जहरीले हो गये तो उनके कारण आदमी मर जा सकता है। इसके खिलाफ अगर हीरा बिल्कुल चिकना है या आंतो तक न पहुँच कर इधर उधर ही कही अटक गया है तो वह आदमी महीनो क्या बरसो तक जीता रह सकता है और हीरा उसके बदन में रहता हुआ भी कोइ नुकसान नही पहुँचावेगा।

कन्हाई०। बरसो तक !!

मैं०। बेशक ! हीरा आदमी को उसी हालत में नुक्सान पहुँचा सकता है जब या तो उससे शरीर के अन्दर खराश पड जाय, किसी अजो को जरर पहुँचे, अथवा किसी दुर्घटना से वह किसी नाजुक जगह मे उतर जाय मसलन आंतो में कहीं इस तरह रुक जाय कि उनकी मल निष्काशण कर्ण को रोक दे। इन बातो के इलावा मेरी समझ में और किसी तरह से तो आदमी हीरा खा कर मर नही सकता।

मैने ताज्जुब के साथ देखा कि मेरी बात सुन कर कन्हाई का चेहरा कुछ उतर सा गया और वह किसी सोच में पड गया। कुछ देर बाद उसने कहा "अच्छा अगर कोई आदमी कई हीरे खा गया हो और इस बात को दस बारह महीने का जमाना गुजर गया हो और तिस पर भी किसी तरह की खराबी प्रगट न हुई हो तो क्या समझा जाय ?"

मैं०। तब बहुत सम्भव है कि जिस तरह उन पत्थरो ने दस महीने मे कोई खराबी नहीं पहुँचाई उसी तरह दस बरस तक कोई नुकसान न करें।

'दस बरस !!' दबी जुबान से कह कर कन्हाईदास ने एक

ठण्ढी सांस ली। इसमें कोई शक नही कि मेरी बात ने उसकी किसी भारी आशा को तोड़ दिया था क्योंकि वह सुस्त और उदास सा हो गया था। उसने फिर कुछ कहने के लिये मुँह खोला मगर उसी समय भीतर से महन्थजी (जहां तक मैं समझता हूँ वह आवाज महन्थजी की ही थी) नेपुकारा—'अबे पापी, सुनता नही! कन्हाई अबे कन्हइवा! कहां गया रे सारे!!" की आवाज सुनते वह चिहुँक कर बोला, महन्थजी बुला रहे हैं मै सुन कर अभी आता हूँ आपको मेरी कसम कहीं जाइयेगा नहीं!" इतना कह बिना जवाब की राह देखे वह फाटक की तरफ भागा।

मै कुछ देर तक वहीं खड़ा रहा। सच तो यह है कि कन्हाई की इन बातो ने मुझे बड़े भारी ताज्जुब में डाल दिया था और मेरे दिल में एक तरह की उत्कण्ठा ने जगह कर ली थी कि आखिर यह बात क्या है और हमारे सलोने सुकुमार बबुआ के प्रश्नो का तात्पर्य क्या है।

मैं खड़ा यही सब सोच रहा था कि पीछे से किसी के पैरो की आहट आई मगर घूम कर देखा तो कोई न था। अपने कानो का भ्रम समझ मै फिर उन्हीं सवालो पर गौर करता हुआ धीरे धीरे इधर से उधर टहलने लगा।

यकायक किसी के चीखने की हलकी आवाज मेरे कानो में पड़ी। आवाज नाजुक और जनानी थी और कही पास ही से आई थी। मैं ताज्जुब के साथ चारो तरफ देखने लगा मगर कही किसी की सूरत दिखाई न पड़ी, हाँ एक झोपड़ा अवश्य दिखाई पड़ा जो वहां से थोड़ी ही दूर पर था। मुझे गुमान हुआ कि शायद उसी के अन्दर से यह आवाज आई होगी। इसी समय पुनः 'हाय मरी!!' की आवाज आई। अब मै अपने को रोक न सका और आवाज की सीध पर उस झोपड़े की तरफ बढा जिसमें से वह आवाज आती मालूम हुई

थी। झोपडे का दर्वाजा जो बॉस की टट्टी का था बन्द था मगर मैंने धक्का दे टट्टी को हटा दिया और भीतर घुस गया।

यहा तो कोई भी नहीं! तब आवाज कहा से आई? क्या धोखा हुआ? मै घूमा ही था कि यकायक खिलखिलाने की आवाज आई और तब टट्टी वाले दरवाजे के बन्द होने की भी आहट सुनाई पडी। मैंने चौक कर देखा और एक कमसिन औरत को अपने सामने खडे मुस्कुराते हुए पा आश्चर्य मे पड गया। एक ही निगाह काफी थी। यद्यपि इस समय वह कीमती साडी सूफियाने गहने और सजाया हुआ चेहरा नही था तौ भी देखते ही मैंने पहिचान लिया कि यह वही वेहया है जिसने कल मेरा दुपट्टा छीन लिया था।

एक क्षण के लिए मेरी निगाह उसके चेहरे से हट झोपडे के चारो तरफ घूम गई। झोपडा बिल्कुल मामूली और छोटा, मिट्टी की दीवारो तथा फूस की छावनी का बना हुआ था एक तरफ भूसे का ढेर लगा हुआ था, दूसरी तरफ घास का। आने जाने का दर्वाजा केवल एक ही था और सो भी वही जिसकी राह मैं आया था या जिसे इस समय बन्द कर उसी के सामने वह वेहया बेशर्मी के साथ खडी हंस रही थी।

टेढी निगाहो से मेरी तरफ देख अब उस कम्बख्त ने मुस्कुराते हुए कहा "कहिये डाक्टर साहब, अबकी फंसे न! कल तो दुपट्टा छोड़ के भागे थे आज क्या-छोड कर जाने का इरादा है?"

मैंने कडी निगाह से उसे देखते हुए कहा, "क्या तुम्हारे ही चीखने की आवाज मैंने सुनी थी?"

उसने मेरी तरफ एक कदम खसक कर कहा, "जी हां।"

मैं०। ऐसा धोखा क्यों दिया?

औरत०। जिसमें आपसे अकेले में मुलाकात कर सकूं।

मैं०। किस नीयत से?

औरत०। (खिलखिला कर) आप किस नीयत से समझते हैं ?

मैं०। (दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए) अच्छा मैं जाता हूँ।

औरत०। (पीछे हट कर और दरवाजे से पीठ अडा कर) जाइये।

मैं०। हटो।

औरत०। मुझे ढकेल के चले जाइये।

गजब हो गया! यह वेहया आखिर मुझसे चाहती क्या है! इसका इरादा क्या है! अगर कोई मुझे इस तरह एकान्त में इस वेशर्म के साथ देख लेगा तो क्या सोचेगा ? क्या इस तरह एक कम उम्र औरत के साथ निराले में बन्द झोपडी के अंदर रहना नामुनासिब नहीं है! इत्यादि सोचते हुए मुझे कुछ क्रोध चढ़ आया और मैंने कड़ी आवाज में कहा, ' यह क्या वेहयापन है! तुम मुझे बाहर क्यों नहीं जाने देती! तुम्हारा इरादा क्या है!!"

उस कम्बख्त औरत ने बडी अदा के साथ होठो पर उंगली रक्खी और कहा, "धीरे धीरे बोलिये! धीरे धीरे!! कोई आता जाता अगर सुन लेगा और इधर आ कर देखेगा तो मेरी आपकी दोनो ही की वेइज्जती हो जायगी। मगर आप इतने गुस्से क्यों हो रहे हैं! बिगडे क्यों जाते हैं ? क्या मुझसे दो एक बातें कर लेने से आप कुछ छोटे हो जायंगे ?"

मैं०। तुमने मुझे धोखा दिया, मैं तुमसे बात नहीं किया चाहता।

औरत०। मै हाथ जोड़े देती हूँ।

मैं०। जोड़ा करो, बला से मेरे!

औरत०। (भौ तरेर कर) तो मेरी भी बला से! आप जब तक मेरी बातो का जवाब न दे लेंगे यहा से जाने न पावेंगे!!

इस वेहया से बाते बढ़ाने से फायदा ही क्या ? यह जो कुछ

पूछती है उसका जवाब दे यहां से चल देना ही बुद्धिमानी है क्योंकि यहा यदि किसी ने देख लिया तो पूरी बेइज्जती होगी, इत्यादि सोचते हुए मैंने कहा "अच्छा पूछो क्या पूछती हो मगर जल्दी करो ?"

औरत०। सिर्फ दो सवालों का जवाब चाहती हूँ।

मैं०। पूछो ?

औरत०। मगर पहिले आप इस दरवाजे के सामने से हट जायं क्योंकि अगर कोई हम लोगों को इस जगह देख लेगा तो ठीक न होगा—आइये इधर आजाइये।

इतना कह उसने मेरी कलाई पकड ली और एक कोने की तरफ खींच ले चली मगर जब मैंने झटका दे कर हाथ छुड़ा लिया तो उसने पलट कर मेरी तरफ देख अपनी गरदन टेढ़ी की और कहा, "आपके बदन में बड़ी ताकत है !"

मैंने कुछ जवाब न दिया मगर दरवाजे के सामने से जरूर हट गया। वह कुछ देर तक मेरी तरफ देखती रही, तब बोली "आपसे और कन्हाईदास से जो बातें हो रही थीं उन्हें मैं सुन रही थी।"

मैं०। तब ?

औरत। आपने कहा कि हीरा खा कर एक आदमी निश्चयतः नहीं मर सकता ?

मैं०। हाँ।

औरत०। मगर मैंने किताबों में पढ़ा है और सुना भी है कि अक्सर लोगों ने, खास कर बादशाहों ने, बेइज्जती कैद या किसी और मुसीबत में पड़ अपनी अंगूठी चाट ली या हीरा खा लिया और मर गये।

मैं०। मेरी समझ में तो बात यह हो सकती है कि या तो उस हीरे पर किसी तरह के जहर का लेप चढ़ा हुआ होगा और या फिर उस अंगूठी में नग के नीचे कोई छिपी हुई जगह ऐसी बनी होगी

जिसमें जहर छिपाने की गुञ्जाइश होगी। इस तरह, केवल हीरा खा के या चाट के किसी आदमी का मर जाना कम से कम मुझे तो सम्भव नहीं जान पड़ता।

औरत०। आप डाक्टर हैं इससे आपकी बात ठीक ही होगी और माननी ही पड़ेगी, अस्तु अब मै यह जानना चाहती हूँ कि अगर किसी आदमी ने जान बूझ कर या भूल से हीरा खा लिया है और कुछ समय से उस हीरे ने उस आदमी के पेट को अपना मकान बना रक्खा है तो अब उस हीरे को वहां से निकालने की भी कोई तरकीब हो सकती है या नही ?

मैं०। (सोच कर) या तो 'एक्स-रे' की सहायता से वह हीरा कहां है इसका पता लगा नश्तर देकर वह हीरा निकाला जा सकता है, और या फिर मुमकिन है कि अगर दस्तो की दवा दी जाय तो शायद वह बाहर आ जाय, पर इसका कोई निश्चय नही है।

औरत०। अगर दस्त की दवाओ से कोई नतीजा न हुआ हो तो ?

कन्हाई के सवालो ने तो मुझे ताज्जुब मे डाल ही दिया था पर इस औरत के सवाल तो उनसे भी बढ़े चढ़े थे। इन्होने तो मेरे ताज्जुब को हद्द तक पहुँचा दिया। मैने मन ही मन तरह तरह की बातें सोचते हुए कहा, "तब जीती हालत मे उसके बाहर आने की उम्मीद बहुत कम है। मगर ये सब बाते तुम लोग क्यो पूछ रहे हो ? क्या किसी ने हीरा खा लिया है ?"

औरत०। (कुछ सोचते हुए) आपको बता देने में कोई हर्ज भी नही। बात यह है कि एक आदमी ने यह समझ कर कि हीरा खाने से आदमी मर जाता है आत्महत्या के खयाल से कई बड़े-बड़े हीरे खा लिये। उस बात को महीनो बीत गये हैं मगर न तो वह आदमी ही मरा न वे हीरे ही बाहर निकले। अब तो मामला यह हो गया है कि बुढ़िया के मरने का तो अफसोस नही गम जम के

परचने का है! आदमी मरता जीता रहे मगर हीरे तो न जायं! उन्हीं के निकल जाने का अफसोस है और इसी से मैं चाहती हूँ कि आप उन हीरो को पाने की कोई तर्कीब मुझे वताइये।

मैंने कुछ सोच विचार कर कहा, "कोई तर्कीब मुझे सूझ नहीं रही है, मैं तो समझता हूँ अब वे हीरे उसके जन्म के साथी हुए। तुम किसी बडे अस्पताल में ले जा कर उसे दिखाओ और या फिर उसके मरने की राह देखो, मरे तो पेट फाड के निकाल लेना।"

मेरी बात सुन वह औरत मुस्कुराई मगर कुछ बोली नहीं। मैंने कहा "अच्छा अब तो मैं जाऊं?"

वह बोली. "क्यो क्या मैं ऐसी बुरी हूँ कि दो सायत तक मेरे पास रहना अच्छा नही लगता।"

मैं०। निराले स्थान मे पराई औरत के साथ बात नहीं करना चाहिये।

औरत०। वेशक! और सो भी खास करके जब कि वह औरत बूढी हो, काली हो, बदशकल हो, बहुत लम्बी या बेतरह नाटी हो, या जिसके मुंह या कपड़ो से बदबू आती हो! ऐसी हालत में उससे बाते करना जरूर ही बुरा लगेगा!!

"ओह, यह सब फजूल बाते हैं!" कह मैं झोपडे के बाहर निकलने के लिये घूमा मगर उसने मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया और रोक कर कहा, "ठहरिये, जरा सी एक बात और रह गई है।"

मैं०। खैर वह भी कह डालो मगर जल्दी करो!

औरत०। जो बाते मुझसे और आपसे अथवा कन्हाई से हुई हैं उन्हे आप किसी दूसरे से न कहियेगा।

मैं०। क्यो?

औरत०। वह जरा गुप्त बात है और गुप्त रहे तो अच्छा।

मैं०। क्यो ?

औरत०। वह जरा गुप्त बात है और गुप्त ही रहे तो अच्छा।

मैं०। खैर देखा जायगा।

औरत०। (हाथ पकड के) नही देखा नही जायगा, आपको वादा करना होगा !

मै०। मैं यह सब कुछ नहीं जानता।

औरत०। हाथ जोडती हूँ।

मैं०। बला से।

औरत०। प्रार्थना करती हूँ।

मै०। किया करो।

औरत०। देखिये, इतने कठोर न बनिये ! लाख हो फिर भी मै एक औरत और आप एक मर्द हैं ! एक औरत की रक्षा में आप लोगो ने कल एक आदमी को पीट दिया और आज एक औरत की एक छोटी सी बात आप नहीं मान सकते !

'उस औरत और इस औरत में जमीन आसमान का फर्क है !!" कह मैने झटका देकर अपना हाथ छुडा लिया और तब टट्टी हटा बाहर निकल गया। चारो तरफ निगाह की, भाग्यवश कही भी कोई दिखाई न पड़ा और मै कृष्णा-दर्शन की लालसा छोड तेजी से कदम बढ़ाता हुआ मोदपुर की ओर चल पड़ा।

जब मै उस टीले के पास पहुँचा जिसके ऊपर कुन्द का मकान था तो मुझे खयाल हुआ कि शायद मुरली अभी तक वहीं हो, और मेरा खयाल ठीक भी निकला क्योकि उसी समय मैने मुरली को पिछवाड़े की तरफ से घूमते हुए नीचे उतरते पाया। मुरली मुझे देखते ही बोला, "तुम अभी तक यही खड़े हो ?"

मै०। यहा नहीं कही और चला गया था और कुछ पूछो मत, बुरी सासत ने पड़ गया था, मगर तुम अपनी कहो क्या हुआ ?

मुरली० । (अफसोस से गरदन हिला कर) कुछ नहीं, उन सभो ने इस बात को मंजूर ही नही किया ।

मैं० । क्यों सो क्यों ?

मुरली० । (आगे बढ कर) आओ चलते चलते बताता हूँ ।

मैंने मुरली के साथ साथ चलते हुए पूछा "क्या बुढिया को राय सीताराम से मदद लेना मंजूर नहीं हुआ ?"

मुरली० । नहीं जी बुढिया तो नीम राजी हो गई थी, मैंने जो कुछ बातें समझा कर उसे कहीं तो वह सब मान गई और बोली कि सीताराम तो मेरा रिश्तेदार है, उसकी मदद लेने में हर्ज ही क्या है ? मगर कुन्द ने सब मामला बिगाड दिया किया कराया सोचा विचारा सब चौपट कर दिया !

मैं० । क्यों उसने क्या कहा ?

मुरली० । वह मेरी बातें सुन बोल उठा–"भैया अब तक हम लोग दुखिया थे, कंगाल थे दरिद्र थे, मगर भिखमगे नहीं थे, दूसरों के टुकडो पर गुजारा नहीं करते थे, अब क्या तुम चाहते हो कि हम लोग भिखमगों मे भी गिने जाने लगें ! गरीब होने पर भी हम लोग अभी तक इज्जतदार थे, कोई उंगली नहीं उठा सकता था, कोई कुछ कह नही सकता था । रूखा सूखा जो कुछ हमारे पास था वह अपना था और हम अपना खाते थे किसी दूसरे के दर्वाजे नही जाते थे, दूसरे के आगे हाथ नही फैलाते थे । मकान टूटा था गिरा था टपकता था, फिर भी अपना था, अपने बाप दादों का बनवाया हुआ था, अपने घराने का था, मगर अब क्या तुम चाहते हो कि जो कुछ बची बचाई इज्जत हम लोगों की रह गई है उससे भी हम हाथ धोएं और एक ऐसे रिश्तेदार के दरवाजे पर जायँ जिसने आज के पहिले कभी हम लोगों से बात करना भी मुनासिब नही समझा था अथवा जो अब शायद तुम्हारे जोर और दबाव

में पड़ कर यह खैरात करने लगा है ! नहीं नहीं भैया, तुमने उस बात को सोचा नहीं जिसे मुंह से निकाला है, अगर कुछ भी सोचते तो ऐसा न कहते ! तुम ही कहो, क्या अब यह नौबत आ गई ! क्या हम लोग—तुम्हारी मा और बहिने, गरीब दुखियाएं, जमाने के हाथो सताई औरते, अब इस अवस्था को पहुँच गई कि दुनिया हमें देखे और हमारे हाल पर तरस खाए ! अभी तक दुःख से या सुख से, जैसे जो कुछ होता था निबाहती थीं और गुजारा करती थी। हमारा हाल हमी दोनो जानती थीं या फिर तुम जानते थे। अब क्या दुनिया के आगे भी हमारी मुसीबत की तस्वीर खींचा चाहते हो ? मुझे मालूम है कि तुम हमारी बेइज्जती नही चाहते इज्जत चाहते हो, पर तुम ही कहो क्या सीताराम की मदद हमारी इज्जत बढाएगी ? तुमने कहा कि लोग तुम पर जोर जुल्म करते हैं, मार पीट करते हैं—वहाँ रहोगी तो ऐसा न होने पावेगा। मगर सोचो तो कि ऐसा करने वाला, हम पर जोर जुल्म करने वाला, मार पीट करने वाला, कौन है ? वही जिसका हम पर हक है, जो मेरा मालिक है, जिससे मेरी इज्जत है ! वही तो यह करता है। और किसी की तो मजाल नहीं न कि इस चौखट के अन्दर पैर रक्खे या किसी से एक बात कह जाय ! और कोई तो हमारी तरफ आंख उठा कर नही न देख सकता ! नही नही भैया, तुम भूलते हो तुम बिना सोचे विचारे यह प्रस्ताव लेकर हमारे पास आए हो --क्योंकि मै अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम हमारी इज्जत के साथी हो ! जिसमे हमारी हुर्मत बनी रहे वही तुम चाहोगे और वही करोगे, और कुछ नहीं ! जिस बात में हमारी बेइज्जती हो वह तुम भी पसन्द न करोगे। सोचो और विचार कर बताओ कि तुम्हारी बात मान लेना क्या हमारी इज्जत बढाने का सबब होगा ?"

कुन्द की इन बातो ने मेरी जुबान बन्द कर दी। सच तो यह

है कि आज के पहिले मैंने कभी कुन्द को इस तरह जोश में आते देखा नही था। मेरे पास उसकी बातो का कोई जवाब नहीं था। तुम ही कहो मैं इस पर क्या कहता? लाचार उठ कर चला आया!!

इतना कह मुरली ने सिर नीचा कर लिया और कुछ सोचने लगा, मगर मेरे दिल ने यकायक कहा—"शाबाश कुन्द! तेरी तारीफ करूंगा! यह मामूली कलेजे की औरतों का काम नहीं है कि सब तरह की तकलीफ, मार पीट भूख प्यास उठाना, मजूर करें मगर दूसरे की खैरात मंजूर न करें। सच तो यह है कि कुन्द की बातो ने, उसके बर्ताव ने, मेरे दिल मे जगह कर ली और मैंने मुरली से कहा, "तो क्या तुम कुन्द की बातो से नाराज हो गये?'

मुरली ने एक लम्बी सास ली और कहा, "नही मैं रंज नहीं हूँ लेकिन मुझे अफसोस बेशक है!"

मैं०। अफसोस! किस बात का? क्या इसका कि तुम्हारी बात न मान कर कुन्द अपना नुकसान कर रही है?

मुरली०। नहीं इस बात का नही बल्कि इस बात का कि विधना ने यह अनमेल जोडी—ऐसी बे-जोड जोड़ी—क्यो मिलाई? राज-मुकुट के योग्य हीरा गदहे के सिर क्यो बाधा? कौवे के सिर पर मोर की कलंगी क्यो लगाई?

मै०। कन्हाई के संग कुन्द क्यो व्याही?

मुरली०। बेशक!!!

चौथा बयान

जिस काम के लिये मेरा मोदपूर जाना हुआ था वह पूरा हो गया और मै अपने घर लौट आया। धीरे धीरे एक महीने से ऊपर गुजर गया और कुन्द कन्हाई और महादेवदास का खयाल दिल से यद्यपि उतरने तो नही पर कम होने लगा। मगर एक दिन यकायक एक साथ ही मुरली की दो चीठिये डाकिये के हाथ से पा कर मुझे कुछ ताज्जुब करना पडा क्योकि मुरली पर और चाहे भी जो ऐब मै लगा लूॅ पर चीठिये लिखने और खत किताबत जारी रखने का ऐब कभी नही लगा सकता। खैर मैने ताज्जुब करते हुए एक चीठी खोली जो मोटे लिफाफे में और भारी थी। मजमून यह था :—

'भाई विनोद !

'तुम्हें गये बरसो बीत गये मगर अभी तक पहुंच की भी चीठी डाली न गई ! खैर इसमें तुम्हारा कसूर भी नही, क्योकि पहिले जिस कारण तुम चीठी भेजते थे उस कारण का कार्य अब अहर्निशि तुम्हारे बगल ही मे है। अब चीठी भेजने की आवश्यकता ही क्या

है ? चन्द्र के अभाव ही मे तो तारो पर दृष्टि डाली जाती है !!

'खैर तुम मुझे भूले तो भूले पर क्या तुम उस बेचारी कुन्द को भी भूल गये ! सुन्दर सलोने बबुआ देवनारायण उर्फ कन्हाईदास का भी ध्यान क्या तुम्हारे जी से उतर गया ! क्या तुम उस कमलिनी को भी भूल गये जिसके पीछे हमारे बबुआ भ्रमर की तरह लगे रहते थे या जो कल कुन्द के हाथो बुरी तरह पीट गई !!

"हुआ यह कि रेवती (बीबी का यही नाम है) के लिये महंथ महाराज और चेला महाराज मे झगडा तो नित्य हुआ ही करता था पर इधर तुम्हारे जाने के बाद से झगड़े की पराकाष्ठा हो गई थी क्योंकि महन्थ की समझ मे (और शायद वास्तव मे भी) बीबी रेवती ने हमारे बबुआ से आखे मिलाना शुरू कर दिया था। न जाने बीबी बबुआ के किस रूप तो नही परन्तु गुण पर मोहित हो गई थी कि दो बार तो खास मैने उन दोनो को घुल घुल कर बाते करते देखा। पहिले जिस तरह बीबी कन्हाई से फटी फटी रहती थी वह बात अब बिल्कुल नही थी, खैर।

'एक दिन शायद महन्थजी ने दोनो को बाते करते देख लिया या न जाने क्या मामला हुआ कि उनसे और कन्हाई से मारपीट हो गई। उन्होने अपने खडाऊँ से कन्हाई को बहुत मारा। कुछ देर तक तो वह मार बर्दाश्त करता गया पर फिर उसे भी गुस्सा आ गया और उसने भी महन्थजी को कुछ दो चार हाथ रसीद कर दिये। नतीजा यह निकला कि हम सभो ने (हम लोग कई आदमी नित्य नियमानुसार छत पर से तमाशा देख रहे थे) बीच बचाव करा कर मारपीट रोकी, मगर चेलेराम बागीचे से निकाल दिये गये और उनका माल असबाब सब जप्त कर लिया गया। सिर्फ अपने लाल कोट पतलून और बूट के साथ जो उनकी नित्य की खूराक—नही नही, पौशाक थी, उन्हे महन्थ जी की चेलेगिरी से इस्तीफा देना पड़ा और वे भुनभुनाते कुनमुनाते

चले गये। मगर उनका प्रभाव बीबी रेवती पर न जाने कितना हो गया था कि उसी रात को बीबी गायब हो गई !!

महन्थजी के पेट में किस प्रकार चूहे कूदने लगे होगे वह तो तुम खुद ही सोच सकते हो, पर खुद मुझे भी इस बात पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि श्यैाम-घन-घटा पर आसक्त हो दामिनी ने आकाश-निवास क्यो छोड़ दिया ! बीबो रेवती कन्हाईदास के साथ क्यों निकल भागीं !!

दो दिन तक इस जुगल जोड़ी का कहीं पता न लगा। महन्थ जी की बेचैनी जो थी सो तो थी ही मगर कुन्द भी सख्त परेशान थी क्योकि उसे विश्वास हो गया था कि वह दुष्टा रेवती ही उसके मालिक को बहका के ले गई है और न जाने किस किस आफत मे डालेगी। उसे यहां तक इस बात की फिक्र हो गई कि दो ही रोज में उसकी हालत बदल गई पहिले से बीमार तो थी ही अब और भी मजहूल हो गई—खाट से उठना मुश्किल हो गया।

इधर बबुआजी रेवती को लिये दो रोज तक कहीं टक्कर मारते रहे या न जाने क्या करते रहे, मगर इसमें शक नही कि उन्हे खाने पीने यहां तक कि रहने सोने की भी बहुत तकलीफ हुई होगी क्योकि चारो तरफ कोसो तक के लोग उनके जाने पहिचाने थे। किसके यहा जाते और किससे भीख मागते ? आखिर नतीजा यह निकला कि लाचार हो कर तीसरे रोज घर आने की ठाननी पडी। महन्थ के बाग मे जा नही सकते थे, अपने घर ही का ठिकाना था। मगर यकायक यह भी कैसे हो सकता था कि अपनी रंडो को लेकर अपनी औरत या मा के सामने आ जाते, अस्तु पहिले उन्होने बीबी रेवती को ही मकान के अन्दर किया और आप कही टल गये।

"और किसी को तो भला शर्म भी होगी पर उस बेहया को काहे की शर्म और किसका लिहाज ! धडधड़ाती हुई मकान के अन्दर घुस गई। बेचारी कुन्द उस समय काखती कराहती आंगन मे झाड़ू

दे रही थी और उसकी सास किसी काम से गांव गई हुई थी। रेवती कुन्द के सामने जा कर मुस्कुराती हुई बोली—'बहिन, सलाम!" बेचारी कुन्द घबराई कि यह कौन-सी उसकी बहिन आ पहुँची! बोली, 'तुम कौन हो, मै तो तुम्हे पहिचानती नहीं!!" बीबी रेवती बोली, "मेरा नाम रेवती है मैं आपके देवनारायण बाबू की ...... हम तुम तो बहिन न हैं!!" बस इतना सुनना था कि कुन्द तो आग हो गई! 'हरामजादी रंडी, बेहया! तेरी यह मजाल कि तू बेधड़क मेरे घर मे आ घुसे और मुझे बहिन पुकारे! मेरे साथ तू बराबरी का दावा करे!" इत्यादि कह वह एक दम गुस्से से लाल हो कर उठ खडी हुई। रेवतीबाई तो यह हाल देख कापने लग गईं। बोलीं, "बहिन, मेरा क्या कसूर, मुझ पर क्यों खफा होती हो? मैने क्या बिगाडा? वे ही तो मुझे यहा पहुँचा गए हैं, उन्ही . . !' मगर यह सुनना था कि कुन्द और भी आग बबूला हो गई। भाग्य वा दुर्भाग्य से वह चाबुक उसे दिख गई जो बबुआ किसी दिन लाये थे और जिसे उन्होने अपनी मा पर उठाया था। इस समय वही काम में आई। कुन्द ने झपट कर चाबुक उठा ली और सडासड दो चार हाथ सफाई के जड ही तो दिये। वह तारीफ के हाथ दिये कि रेवती 'बाप बाप' चिल्लाती भागी। कुन्द ने भागते भागते भी दो एक हाथ जमाये! देखते ही देखते रेवती बीबी की गन्ध का भी उस मकान में पता न रहा न जाने वह किधर चल दी। इधर कमजोर कुन्द बेचारी भी बदहवास सी हो गई। थोड़ी देर के बाद जब उसकी सास आई तो उसने उस पर पानी वगैरह छिड़क कर उसे होश मे किया और तब सब हाल उससे सुना।

"मुझे अभी अभी इस बात का पता लगा है और कुन्द के यहा से लौट कर मै सबसे पहिले तुम्हे यह हाल सुना रहा हूँ क्योकि मुझे विश्वास है कि तुम्हें यह खबर सबसे ज्यादा खुश करेगी!!

तुम्हारा ही—मुरली'

बेशक हिम्मत इसी का तो नाम है! सच्चा घमण्ड इसी को कहना चाहिये! भला एक रण्डी एक सती साध्वी की बहिन बनने का दावा करे और सती चुप रह जाय!! मैंने कुन्द की तारीफ करते हुए दूसरी चीठी खोली। यह एक रोज बाद की लिखी हुई थी पर डाक महारानी की कृपा से दोनो एक साथ ही मुझे मिली थी।

इस चीठी का मजमून यह था :—

प्रिय भाई विनोद!

"क्या बतावें, गजब हो गया! मेरी पहली चीठी से रेवती के पिटने का हाल तो तुमने जाना ही होगा पर उसका नतीजा कुन्द के हक मे बहुत ही भयानक निकला।

"रेवती ने अपनी दुर्दशा का हाल जरूर बहुत कुछ चढ़ा बढ़ाकर कन्हाई को बताया जिसे सुनते ही वह आग बबूला हुआ भया अपने घर पहुँचा, मगर घर पर जब उसने कुन्द को बीमार और खाट पर पड़े हुए तथा अपनी मा को उसकी दवा दारू के इन्तजाम में लगे पाया तो उसे खयाल हुआ कि इसने भला क्या मार पीट की होगी, इसके मुंह से तो आवाज निकलना भी मुश्किल हो रहा है। उसने अपनी मा से पूछा, "क्या इसने आज किसी से मारपीट की है?" बुढिया बेचारी तो चुप रही पर कुन्द बोल उठी 'हा हां, मैंने एक बेहया को मारा है!" कन्हाई बड़े ताज्जुब से बोला, 'क्या! क्या मेरी बीबी ने मेरी रेवती को मारा! उसकी यह हिम्मत!" कुन्द भी गरज कर बोली, "हां मियां! तुम्हारी बीबी ने मारा और फिर मारेगी! एक कम्बख्त कुतिया का यह हौसला कि वह मेरे घर में निधड़क पैर रक्खे! मैंने उसे मारा और फिर मारूँगी!"

"बस इतना सुनना ही था कि हरामजादे कन्हाई ने उसे मारना शुरू किया! उसकी मां बचाने आई तो उसे इतनी जोर से ढकेला कि दूर जा गिरी। कुन्द को मारते मारते बेदम कर डाला और

अन्त में उठा कर पटक दिया। बेचारी ऐसे जोर से गिरी कि उसका बाया हाथ टूट गया।

"कुन्द उसी समय से बेहोश है। बहुत कुछ इलाज हो चुका। बाबू सीताराम खुद उसे देखने आए थे और उनके डाक्टर बनर्जी बाबू भी तब से बैठे हैं। बाया हाथ इतना सूज गया है कि देख कर तरस आता है।

"कन्हाई का कहीं पता नहीं है। सीताराम ने अपने आदमियों को सख्त हुक्म दे कर भेजा है कि वह जहा जिस हालत में हो पकड़ कर हाजिर किया जाय पर अभी तक तो वह हाथ आया नहीं।

सुहृद—

मुरली।"

पुन:—

'क्या तुम दो एक रोज के लिये आ सकते हो? अगर आ सको तो बहुत अच्छा हो। तुम्हारे रहने से कुन्द के इलाज इत्यादि में बहुत कुछ सुविधा होगी।

मुरली।"

यह चाटी पढ मेरी क्या हालत हुई कैसे बताऊँ? कन्हाई पर तो मुझे यहा तक क्रोध आया कि अगर मेरे सामने होता तो उसकी कमर तोड देता। उसी समय इरादा हुआ कि मोदपूर को रवाना होऊँ पर लाचार था तीसरे रोज एक मुकद्दमे की तारीख थी जिसमें मुझे गवाही देनी थी। और भी दो एक तरद्दुद थे इससे उसी समय रवाना न हो सकता था क्योंकि सिर्फ आने जाने में ही डेढ़ दिन लग जाते, इससे यही मुना सब समझा कि मुकद्मे से छुट्टी पा कर ही चलूँ और यही बात मैंने मुरली को लिख भी दी साथ ही यह भी लिख दिया कि कुन्द के हाल की एक चीठी रोज मुझे लिखा करना।

———

पांचवा बयान

मुझे पाच रोज तक झंझटो ने घेरा रहा और छठे रोज जाकर कही मै इस काबिल हुआ कि कुन्द को देखने मोदपुर जा सकू । इस बीच में भी उसके हालचाल की सिर्फ एक चीठी मुरली ने भेजी थी और इस चीठी ने मेरे तरद्दुद को और भी बढ़ा दिया था क्योंकि इसमें लिखा था कि कुन्द का हाथ ठीक रास्ते पर नही जा रहा है. हड्डी जुटने का कोई लक्षण नहीं है, डाक्टर नन्दगोपाल बनर्जी (बाबू सीताराम के डाक्टर) कहते हैं कि हाथ काट देना पड़ेगा ।

इस बात ने मेरे दुःख को कितना बढ़ा दिया होगा यह आप खुद सोच सकते हैं, दूसरे फिर इसके बाद कोई खबर भी न मिली कि क्या हुआ क्या नही, अस्तु जिस समय मै मोदपूर के छोटे स्टेशन पर अपना बेग हाथ में लिये उतरा और मुरली ने दौड़ कर मुझे गले लगाया (मुरली को अपने चलने की सूचना मै दे चुका था) उस समय पहिला सवाल मेरा यही हुआ—"कुन्द का क्या हाल है ?" इस बात के जवाब मे मुरली ने जिस तरह गरदन घुमा कर हाथ से काट डालने का इशारा किया उससे मेरा दिल बैठ गया और सच तो यह है कि मुरली की तरह मेरी भी आखें सूखी रह न सकीं, क्योकि

इस थोडे ही समय में मै कुन्द को अपनी बहिन से बढ कर प्यार लगा था ।

हम दोनो चुपचाप स्टेशन के बाहर निकले । बाहर मुरली का इक्का खडा था जिस पर हम दोनो सवार हुए और मोदपूर की तरफ चले । बहुत देर बाद बातचीत का सिलसिला फिर शुरू हुआ । मैंने पूछा "एम्प्यूटेशन (काटना) किसने किया ?"

मुरली० । उन्हीं डाक्टर नन्दगोपाल ने ! वे बेचारे दिलोजान से मेहनत कर रहे हैं । उन्होने बडी कोशिश की कि हाथ काटने की नौबत न आवे मगर न जाने हड्डी कैसे बेमौके टूटी थी कि किसी तरह जुटी ही नही या शायद कुन्द की कमजोरी और बुखार का यह कारण हो । देर करने से समूची बाह जाने का खतरा था इससे लाचार काटना ही पडा ।

मै० । अब कुछ आराम है ?

मुरली० । हां बहुत कुछ—परसां की बनिस्बत आज तकलीफ बहुत कम है । पहिले तो मारे दर्द के मछली की तरह तडपती थी, देख कर त्रास आता था ।

मैं० । और उस कम्बख्त का कुछ पता लगा ?

मुरली० । हा वह पाजी फिर महन्थ के पास पहुँच गया है और दोनो पहिले की तरह पुनः मिल बैठे हैं । बीबी रेवती भी ज्यो की त्यो ठिकाने जम गई हैं ।

मै० । तो क्या उसको इस अत्याचार की कोई सजा नहीं मिली ? कुन्द को चोट पहुँचाने के जुर्म मे तुमने उसे पुलिस के सुपुर्द क्यों नही कर दिया ?

मुरली ने कोई जवाब नही दिया । मैने फिर कहा, "क्या पुलिस को इसका पता नहीं लगा ? क्या किसी आदमी को जरर-शदीद

पहुँचाना जुर्म और सजा के लायक काम नही है ? इसमे तो लम्बी सजा मिल सकती है ?"

· मुरली० । बेशक मिल सकती है और मिलनी चाहिये !

मैं० । तो फिर क्यो नही ऐसा किया जाता ? क्या तुम लोग कन्हाई से डर गये ? अगर ऐसा है तो मै खुद इस मामले को उठाऊँगा और उसे जेल भेज कर ही छोड़ूंगा, चाहे कुछ हो जाय !

मुरली की आंखे लाल हो आईं, चेहरा तमतमा उठा, और होठ कांपने लगे। यकायक कुछ बिगड़े हुए ढंग से उसने भर्राई आवाज में कहा, "सुनोगे ? अच्छा तो सुनो कि खास सीताराम ने अपने आदमियो से पकड़वा कर कन्हाई को पुलिस के सुपुर्द किया—भाग्य से उस समय पुलिस के बड़े साहब भी दौरा करते हुए आ गए थे—उनसे सीताराम ने खुद मिल कर सब हाल कहा। उन्हे बेचारी कुन्द पर बहुत दया आई और वे स्वयम् थानेदार को साथ ले कुन्द के घर उसका इजहार लेने पहुँचे।

मैं० । तो कुन्द ने क्या कहा ?

मुरली० । वह भी सुन लो ! कुन्द ने कहा कि एक रण्डी जबर्दस्ती मेरे घर में घुस आई थी। मैंने उसे मार कर मकान के बाहर निकाल दिया। इस पर उन्हे (कन्हाई को) बहुत गुस्सा आया और वे आकर मुझ पर बिगड़ने लगे। जब उन्होने मुझे मारना चाहा तो मै डर कर भागी, पैर फिसल गया, सिल पड़ी हुई थी, उसी पर जोर से गिरी। फिर मालूम नही क्या हुआ।

मुरली इतना कह कुछ देर के लिये रुक गया। मै अवाक ! जिस कन्हाई के सबब से कुन्द ने यह तकलीफ उठाई, जिसके हाथ से मार खाई बेइज्जती उठाई, जिसके सबब से यहां तक नौबत आई कि हाथ काट देना पड़ा, उसी कन्हाई के बारे मे कुन्द का यह इजहार !!

मुरली फिर गुस्से के ढंग से कहने लगा, "कुन्द की बात काटने

वाला कोई नही था क्योकि जिस समय की यह घटना थी उस समय उसकी सास घर पर न थी अन्य कोई भी ऐसा था नही जो कुन्द की बात काटता या उसे झूठा बनाता और इस बयान के आगे कन्हाई पर ही क्या जुर्म लगाया जा सकता था। पुलिस के साहब सर पीट कर रह गये मगर कुन्द ने और कोई बात कही ही नही। लाचार कन्हाई को छोड देना पड़ा और वह हरामजादा अब मोछो पर ताव देता फिरता है। मैने तो उस समय से कुन्द का मुंह देखना छोड दिया—उसके पास जाने की तबीयत ही मेरी नही होती !"

मै खुद चुप ! मेरा दिल खुद ही कही कहता था कि इस काम के लिये कुन्द को क्या कहूँ, मानवी या देवी !!

फिर कोई बातचीत न हुई। हम मोदपूर के पास आ पहुँचे। यहा से कुछ ही दूर पर कुन्द का मकान पड़ता था। मैने कहा, "अगर बेमौका न हो तो चलो कुन्द को देखता चलूं।"

मुरली ने कहा, "तुम जाकर देख आओ। वह तो कई बार तुम्हारा जिक्र भी कर चुकी है। मै यही बैठा हुआ हूँ, तुम हो आओ।"

मैने कहा, "क्यो, क्या तुम नही चलोगे ?" उसने सिर हिला कर कहा, "नही !" मैने पूछा, "क्यो ?" उसने कहा, "मै उसका मुंह नही देखा चाहता।" मैं यह सुन बोला, 'मुरली, क्या तुम पागल हो गये हो ? क्या तुम नही समझते कि तुम्हारे इस बर्ताव से उस बेचारी के दिल को कैसी चोट लगती होगी ! क्या तुम्हें ऐसा करना वाजिब है ?"

बहुत कहने सुनने से मुरली मेरे साथ चलने को राजी हुआ। इक्का रोका गया, हम दोनो उतरे और कुन्द के मकान की तरफ चले।

अभी घर के दरवाजे से दूर ही थे कि बाहर आते हुए डाक्टर नन्दगोपाल दिखाई दिये। मैं इनकी सूरत शक्ल से तो वाकिफ था

सही पर मेरा इनका कोई परिचय नहीं था। मुरली से इनकी बेशक दोस्ती थी ! मुरली को देखते ही वे बोल उठे, "ओह मुरली बाबू ! आप कहां थे ? कुन्द बीबी आपको देखने का वास्ते बहुत बेचैन हो रहा है। हम तो आप ही को खोजने चला था ! आप दो 'रोज से कहाँ हैं ?" मुरली को चुप देख उन्होने कहा, "ओह अब हम समझा। आप कुन्द का बयान सुन उनसे रञ्ज हो गया ! मगर क्या किया जाय ! भारतवर्ष का औरत ऐसा ही बेवकूफ होता है ! वह अपने दोषी रिस्तेदार को भी सजा देना नहीं चाहता, चाहे खुद तकलीफ उठावे। यह महज नादानी का बात है और इसी से यहां का औरत लोग का दुःख कभी दूर नहीं होगा। भारत का औरत पागल होता है, पागल !!"

बनर्जी महाशय चले गये। मैंने यह सोचते सोचते मुरली के पीछे घर के अन्दर पैर रक्खा—क्या भारत की औरते पागल होती हैं ?

घर के भीतर की दशा करीब करीब वैसी ही थी जैसी आज के महीने भर पहिले देख गया था। वही टूटी दीवारे, गिरा छप्पर और चारो तरफ फैला जंगल मगर सफाई पहिले से ज्यादा। पूरब वाले दालान मे खपरे के नीचे कुन्द की खाट बिछी हुई थी, पास ही में एक चटाई पर उसकी सास बैठी हुई थी, और एक मजदूरनी एक तरफ कुछ काम कर रही थी जिसे शायद सीताराम ने बहुत जोर दे कर वहां भेज दिया था। एक तरफ एक चौकी के ऊपर कुछ दवा और मलहम पट्टी वगैरह सामान पड़ा हुआ था।

धीरे धीरे कदम उठाते हुए उस खपरैल के नीचे पहुँचे। हम दोनो ने बुढ़िया को प्रणाम किया। उसी समय कुन्द के चेहरे की एक झलक मुझे दिख गई जिसे उसने दूसरे हाथ से पल्ला खींच कर तुरत छिपा लिया। हाय हाय, क्या यह वही कुन्द है ! यह तो पहिचानी ही नहीं जाती ! दुबला चेहरा अब बिलकुल ही सूख गया था, आखे गड़हे में धंस गई थीं, चारो तरफ उनके काला घेरा पड़ गया था,

गाल की हड्डी निकल आई थी, हाथ बिल्कुल सूख गया था। कटा हुआ हाथ कपड़े में लपेटा उस मामूली चद्दर के नीचे था जो उसके ऊपर पड़ी हुई थी, इससे उसकी हालत देख न सका, मगर कुन्द की दशा देख मैं बड़ी मुश्किल से अपनी आखों को सूखी रख सका।

बुढ़िया ने हमारे लिये एक टाट बिछा दिया। मैं तो उस पर बैठ गया मगर कुन्द ने इशारे से मुरली को अपने पास बुला लिया। पास जाने पर कमजोर आवाज मे रुक रुक कर वह बोली, "भैया,दो रोजसे तुम कहा थे? क्या तुमने भी इस अभागिन का साथ छोड़ दिया? क्या अपनी बदकिस्मत बहिन की सूरत अब तुम्हे भी बुरी लगने लगी!!" मुरलीने कुछ जवाब न दे मुंह फेर लिया जिस पर कुन्द बोली, "भैया, मैं समझती हूॅ कि तुम्हारा यह भाव क्यों हो गया है! मैं जानती हूॅ कि तुम मुझसे रञ्ज क्यो हो गये हो! मगर भाई, तुम जरा सोचो तो सही कि क्या इस मामले मे मैं कुछ और कर सकती थी? क्या इस संसार में रह कर, 'कुन्द' कहला कर भी यह शरीर किसी दूसरे का हो सकता है? जिसके हाथ मे ईश्वर ने सौंप दिया, जिसका हाथ मा बाप ने पकड़ा दिया, उसको छोड क्या यह हाथ अब और किसी के काम का है? क्या यह देह और किसी के काम की है? जो मेरा मालिक है, जो मेरे मन और तन का मालिक है, वह क्या मेरे हाथ पाव का भी मालिक नहीं? क्या वह जैसा चाहे वैसा बर्ताव इनके साथ नही कर सकता? क्या उसके विपरीत चलने का मुझे अधिकार है? मुरली, और क्या तुम्हे भी अपनी बहिन का दिल दुखाने का अधिकार है? क्या इस तरह से उसे कष्ट पहुँचाना तुम्हें मुनासिब है? क्या उसके जले हुए चित्त को और भी जलाना उचित है?"

मुरली ने कुछ नहीं कहा। कुन्द का दाहिना हाथ खाट के नीचे गिरा हुआ था। मुरली ने उसे पकड़ लिया। मैंने देखा मुरली की आखो से कई बूंद आसू निकल कर उस हाथ पर गिर पड़े। —

छठवाँ बयान

कई दिन तक मै मोदपूर में रहा। रोज सुबह और शाम डाक्टर नन्दगोपाल के साथ कुन्द के पास जाता और जख्म धोने धाने तथा मलहम पट्टी मे डाक्टर साहब की मदद करता। धीरे धीरे जख्म ठीक होने लगा और मुझे तथा डाक्टर साहब को विश्वास हो गया कि अब महीने भर के अन्दर वह पूरी तरह से आराम हो जायगी। उसके बदन मे कुछ ताकत भी आ गई और धीरे धीरे वह इस लायक हो गई कि घर मे इधर उधर थोड़ा बहुत घूम फिर सके या मामूली कामकाज कर सके। मेरी तबीयत भी कुछ निश्चिन्त हुई और मै घर लौटने का विचार करने लगा।

बीबी रेवती, बाबा महादेवदास, और चेला कन्हाईदास की इस बीच में कोई खोज खबर न मिली। एक तो मैने और मुरली ने उधर आना जाना एक दम बन्द कर दिया था, दूसरे उन लोगो ने भी और खास कर कन्हाई ने तो एक दम ही बगिया के बाहर आने की कसम खा ली थी क्योकि उन्हे डर था कि कहीं कोई गाव वाला कुन्द वाले मामले की कसर उनसे न निकाले।

एक दिन जब मैं सीताराम के यहां था, पता लगा कि महन्थ महादेवदास की तबीयत बहुत खराब है। वहीं बातों ही बातों में मुझे महन्थ के बारे मे एक विचित्र तथ्य का भी पता लगा। यह तो मुझे पहिले ही मालूम हो चुका था कि महादेवदास की सब जायदाद उनका एक गुरुभाई मुकद्दमा लड़ कर जीत चुका था, केवल वह बगिया और आम की बारी उनके पास रह गई थी अस्तु उनकी चहेती का जिक्र करते हुए ही एक दिन अकस्मात मेरे मुंह मे निकल गया कि 'इस बारी से तो महादेवदास को इतनी बड़ी आमदनी हो नही सकती कि उतनी शान शौकत का खर्च करें और अपने मकान को इन्द्र-भवन बना उसमें उस परी को बैठा रक्खें।' पर मेरी ब त के जवाब में सीताराम बोल उठे, "आमदनी का जरिया चाहे हो या न हो मगर इसमे कोई शक नहीं कि अब भी उसके पास पचासों हजार की जमा मौजूद है। वह कुछ कंगाल थोड़ी ही हो गया है!" यह सुन मैंने कहा, "मगर मैने तो सुना था कि आपने किसी गुरुभाई से मुकद्दमा लड़ कर वह अपनी सब जायदाद और रुपया पैसा गंवा बैठा है?"

सीताराम ने कहा, "हा जायदाद और नगदी जो कुछ था वह तो निकल गया मगर कुछ कीमती जवाहिरात और जेवर उसके कब्जे मे जरूर रह गये। हुआ यह कि जब इनका भाई कुड़की लेकर इनके ऊपर आया तो ये सब कुछ तो छोड़ के भागे मगर सभों की नजर बचा अपने कपड़ो मे छिपा कर कुछ जेवर जवाहिरात निकाल के लेते गये। उधर उनके भाई को भी उन चीजों की खबर थी अस्तु उसने जब खोजा और खजाने में उन चीजो को न पाया तो इनका पीछा किया और थोड़ी दूर जाते जाते इन्हें घेर लिया। कुछ जेवर तो मिल गये। मगर बाकी के जेवर और उन जवाहिरातो का कुछ पता न लगा। न जाने इसी बीच में इन्होंने उन्हे कहीं छिपा दिया, गाड़ दिया,

या फेंक दिया कि बहुत कुछ मार पीट होने पर भी पता नहीं लगा। गुरूभाईराम रोते कलपते लौट गये और बाबाजी उन गहनो जवाहिरातो को डकार ही गये। उसी रकम के भरोसे अब वे मोछों पर ताव देते और जो चाहते करते हैं। इधर सुनते हैं उन्होने अपनी अम्मां (रेवती) के लिये कुछ ऐश आराम के सामान और भी मंगवाये हैं।"

सीताराम की बात ने मुझे चौंका दिया और यकायक मुझे उस दिन की बात याद आ गई जब कन्हाई और रेवती ने मुझसे हीरे खा जाने के विषय में तरह तरह के सवाल किये थे। मुझे खयाल हो आया कि हो न हो महन्थ महाराज उन हीरों को इस उम्मीद मे खा गये कि फिर दस्त की राह निकल तो आवेहींगे मगर हीरे पेट ही मे बैठे रह गये और ये दोनो इस तरदुदुद में हैं कि उनका क्या होगा या फिर और कोई ऐसी ही बात हुई होगी। खैर जो कुछ भी हो, उस समय यद्यपि मैंने इस बात का जिक्र तो किसी से नहीं किया मगर इसका खयाल मेरे दिल में बराबर बना रहा।

उस रोज शाम को जब मै मुरली के साथ कुन्द को देखने गया तो उसकी सास की जुबानी यह जान हम दोनो ही को बड़ा ताज्जुब हुआ कि दोपहर को देवनारायण वहां आया था और बहुत देर तक कुन्द की मिन्नत खुशामद करता और हाथ पैर जोड़ता रहा था। यह भी मालूम हुआ कि उसने कुन्द को दो सौ रुपये देने चाहे पर कुन्द ने इन्कार कर दिया। मुरली को और मुझे बहुत आश्चर्य हुआ और मुरली बोल उठा, "पहिले भी कभी उसने रुपया दिया था कि आज हो अपनी जोरू का हाथ तोड़ कर रुपया दिखाने आया है!।"

बुढ़िया बोली, "अजी राम कहो! उसके सब गहने एक एक करके ले गया! बेचारी के बदन पर एक छल्ला तक न छोड़ा! जब आता था "ला ला।" ही करता रहता था आज ही इतनी फैलसूफी

देखने में आई। दो सौ रुपये भी न जाने कहाँ से उसके पास आ गये, पहिले तो कभी दमडी तक नही पल्ले रहा करती थी !!"

मुरली०। उनके ही क्या उनके गुरू के पास भी तो एक दमडी नहीं है, हां अपनी नानी से माँग लाये हो तो सकता है, वह कम्बख्त जरूर मालदार है।

मैंने यह सुन कहा, "वाह, अभी आज सुबह ही सुन चुके हौ कि महंथ महाराज हीरो की पोटली डकारे बैठे हैं फिर भी कहते हौ कि उनके पास रुपया कहाँ ?"

मुरली०। अजी बाते सुना करो, कहाँ का हीरा और कहाँ का पन्ना! हीरा पन्ना ही होता तो महंथजी के पर न लग जाते! फिर इस सोदपुर मे वे दिखाई पडते! यह सब गप्प है, वे हीरे महादेवदास के हाथ नही लगे, या तो कही गिर गये या किसी दूसरे ने डकार लिये।

मै०। नही यह बात नही है, वह पूरी रकम अभी महादेवदास के पास है और हीरो की पोटली उनके कब्जे से बाहर नहीं हुई।

मुरली०। (हंस कर) हां हा क्यो नहीं! आप उनके घर में जाकर देख जो आये हैं!

मै०। देख तो नहीं आया सिर्फ खयाल ही खयाल है, मगर फिर भी इतना कह सकता हूँ कि मेरा खयाल रुपये मे पन्द्रह आना ठीक होगा।

मुरली०। कैसे ?

मैं०। सुनो मै कहता हूँ।

मैने कन्हाई और रेवती वाला वह सब हाल, उनकी बातचीत और सवालात, तथा इस बारे में अपना जो कुछ खयाल था वह भी सब साफ साफ मुरली से कह सुनाया; मुरली बहुत गौर से सुनता

रहा और तब अन्त में बोला, "अगर ऐसी बात है तब तो जरूर कुछ दाल में काला है!"

मैं०। बेशक !!

मुरली०। या तो महन्थ महाराज रक्षा के खयाल से उन हीरो को निगल गये या फिर अपने चेले से बिगड़ कर खा गये होगे कि उसे न मिलने पावे !

मै०। कुछ न कुछ तो जरूर है।

मुरली०। मैं भी सोचता था कि महन्थ के हाथ मे जब कानी कौड़ी भी नही तो फिर ये मधुमक्खी और भौंरे उन पर क्यो मंडरा रहे हैं मगर अब मालूम हुआ कि यह मामला है। अगर तुम्हारा खयाल ठीक है तो बेशक इतनी गालिया और लात जूतें खाकर भी बबुआ का सटे रहना वाजिब ही है क्योंकि इतना तो मैं भी सुन चुका हूँ कि वह सब जवाहिरात लाखो रुपये की जमा थे। मै समझता हूँ कि जरूर उन हीरो की ही लालच में रेवती और कन्हाई महन्थजी के साथ चिपके हुए हैं कि किसी तरह उनके पेट से हीरे निकलें और उन पर हाथ साफ हो।

पास ही में बैठी हुई कुन्द और उसकी सास हम दोनो की बाते ताज्जुब के साथ सुन रही थीं। कुन्द की सास ने यह सुन कहा, "मगर बेटा ! हीरा चाटने से तो आदमी मर जाता है ! मेरे नाना सुनाया करते थे कि उनके बाप की मौत इसी तरह हुई थी। मुगलो ने आकर उनका गाव घेर लिया था। सब तरफ आग लगाने लूट मार करने और औरतो को बेइज्जत करने लगे थे। परनाना अपने दम भर तो खूब लड़े पर जब किसी तरह इज्जत बचती न देखी तो अंगूठी का होरा चाट कर मर गये।

मै०। मैंने भी ऐसी बाते सुनी हैं और इस तरह से लोगो के

मर जाने का हाल जाना है, पर यह गुण उस हीरे का नहीं है। असल वात यह है कि प्रायः पहिले जमाने में ऐसी अंगूठिये वना करती थीं जिनके ऊपरी हिस्से में तो कोई जवाहिरात जड़ा रहता था। पर उसके नीचे एक गुप्त जगह ऐसी रहती थी जिसमें किसी तरह का तेज जहर रक्खा रहता था। ऊपर का पत्थर खटके पर रहता और जब चाहे हटाया जा सकता था। जब राजा महाराजा या रईस पर ऐसी ही आ बनती थी या वेइज्जती की नौवत आ पड़ती थी तो वे उन अंगूठियों से काम लेते थे और जहर खा कर अपनी जान दे देते थे बल्कि सच तो यह है कि वास्तव में वे अंगूठिये इसी मौके के लिए बनती ही थीं। मेरे पास तो है नही पर मैने अपने एक दोस्त के पास ऐसी अगूठी अपनी आखो से देखी है। अंगूठी के ऊपर एक खुशरङ्ग मानिक जडा हुआ था पर नीचे मटर बरावर एक गुप्त जगह थी जो मानिक हटाने से निकल पड़ती थी। जिसके पास वह अंगूठी थी वह उसमें अतर रक्खा करते थे।

मुरली०। छीः छीः, क्या दिमागदार चीज से कैसा वेहूदा काम लिया है !!

मै०। (मुस्कुरा कर) क्यों सो क्यो ?

मुरली०। हम हिन्दू सदा से इज्जत और हुर्मत को जान से बढ़ कर समझते आये हैं। जब इज्जत पर आ बनती थी तो जान की परवाह नहीं की जाती थी। जान चली जाती थी पर बात नहीं झूठी पडने पाती थी। वेइज्जती और वेहुर्मती से मौत लाख दर्जे अच्छी समझी जाती थी। ऐसी कीमती इज्जत की रक्षा करने की नीयत से बनाई गई अंगूठी, उसे एक लौंडे ने अपने विलास की सामग्री बना डाला ! हाथी की झूल गधे के उपर डाल दी !!

मैं यह सुन हँस पड़ा। कुछ देर तक और हम दोनो वहा रहे और तब लौट पडे ।

रास्ते में मैंने मुरली से अपने लौटने का इरादा कहा क्योंकि एक तो कुन्द अब बहुत कुछ अच्छी हो गई थी और दिन पर दिन अच्छी होती ही जाती थी दूसरे घर पर भी मुझे कुछ काम था। मुरली ने भी मेरी बात सुन कर रजामन्दी दे दी मगर कहा कि यदि हो सके तो कुछ समय बाद एक आध दिन के लिये आ जाना।

मैंने दूसरे दिन दोपहर की गाडी से लौटने का निश्चय कर लिया।

———

सातवाँ बयान

सुबह होने में अभी घण्टे भर की देर थी। मैं अपनी खाट पर पड़ा हुआ था। पूरब तरफ वाली खिडकी खुली और उधर से खेतो मैदानो को पार करती ठंडी ठंडी हवा आ रही थी। आसमान पर सामने की तरफ कुछ कुछ सुफेदी छा रही थी। सब तरह सन्नाटा था क्योंकि एक तो इस समय की गुलाबी सर्दी ने सभों को आलसी बना रक्खा था दूसरे एक छोटे कसबे में बहुत सुबह किसी तरह की चहल पहल की उम्मीद भी नहीं की जा सकती अस्तु चारो तरफ शान्ति थी, यहाँ तक की कर्णकटु मालूम होने वाली गंवई की चक्की की घर्र-घर्र' भी अभी कहीं से उठी नहीं थी।

मेरी अधखुली आंखें तो सुबह का वह सुहावना दृश्य देख रही थीं पर मन किसी दूसरे ही तरह के खयालो में उलझा हुआ था। ईश्वर की महिमा और महामाया की लीला का ध्यान चाहे न हो पर बाबा महादेवदास और चेला कन्हाईदास का ध्यान अवश्य था और कुन्द की बाते भी रह रह कर मन में घूम रही थीं।

मगर यकायक ही मेरा ध्यान बंट गया क्योंकि मेरे कानो में दो

आदमियो के बातचीत की आवाज आई। आवाज ठीक मेरी खिडकी के नीचे से आती मालूम होती थी जिधर एक खेत था और यद्यपि बोलने वाले बहुत धीरे धीरे बोल रहे थे तौ भी इस समय के सन्नाटे के कारण और शायद इस सबब से भी कि मै उनसे बहुत ऊँचे पर न था मुझे उनकी बाते कुछ कुछ सुनाई पड रही थीं और गौर करने से मतलब भी समझा जा सकता था।

एक आवाज०। (जो जनानी और कमजोर थी) बस अब तुम सड़क छोड दो और यहां से खेत ही खेत सीधे गोविन्दपुर चले जाओ। उनसे मिलो और मेरी चीठी दो। जुबानी भी जो कुछ मैंने बताया है कहना और उनकी मदद पर भरोसा करना। बस अब चले ही जाओ। सडक से दूर रहना और बहुत दौडते हुए मत जाना नहीं लोग शक करेंगे और पकड़े जाओगे।

दूसरी आवाज०। (जो डरी हुई और मर्द की थी) अच्छा मैं जाता हूँ मगर मेरी जान........

पहिली आ०। तुम कुछ मत घबराओ मुझ पर भरोसा करो और भागो, मै तुम्हें बचाऊँगी !!

दूसरा०। मगर कैसे? तुम क्या कर सकती हो?

पहिली०। मैं बहुत कुछ कर सकती हूँ और करूँगी, अपने जीते जी तुम्हारा बाल बाका नहीं होने दूँगी, चाहे मेरी जान चली जाय पर तुम पर आंच न आने पावेगी।

दूसरा०। मुझे बड़ा डर लगता है, मै ....

पहिली०। अब यहा खडे रह कर अपनी आफत बढ़ाओ मत, भागो, मुझ पर विश्वास करो, और जो कुछ मैने कहा है वही करो, मै कहती हूँ न कि तुम्हे बचाऊँगी।

दूसरा०। अच्छा मै जाता हूँ मगर तुम? तुम्हारा क्या होगा?

पहिली०। जो होगा देखा जायगा—तुम जाओ, मेरी फिक्र

छोडो जाओ भागो. मै अब यहां नहीं ठहर सकती. भागो ! ईश्वर तुम्हारा भला करे !!

दूसरा० । अच्छा मै जाता हूँ ।

पहिली० । जाओ –भागो. जिस तरह से हो आज शाम के पहिले गोविन्दपूर जरूर पहुँच जाना नहीं तो फिर कुछ न हो सकेगा ! भागो भागो. कोई आ रहा है !!

सूखे पत्तो की चरमराहट ने किसी के भागने की सूचना दी और और थोडी ही देर बाद मुझे एक झलक उस भागते हुए आदमी की दिखाई दी पर फिर पेडो की आड हो गई । मैंने नीचे झांक कर देखा, वहा अब कोई न था ।

मै फिर खाट पर पड गया और सोचने लगा कि यह क्या मामला है ? यह मर्द कौन है, औरत कौन है, ये बाते कैसी हैं ? क्या किसी का कही खून हुआ है ? किसका हुआ ? किसने किया ? इत्यादि बातो की उधेड़-बुन मे मै बहुत देर तक पडा रहा यहा तक कि पूरी तरह सवेरा हो गया और मुझे उठ कर जरूरी कामो की फिक्र में लगना पड़ा ।

डाक्टर नन्दगोपाल कल सुबह से डेढ दिन की छुट्टी लेकर कहीं चले गये थे और इस बीच की कुन्द की मलहम पट्टी का भार मुझ पर डाल गये थे। कल सुबह और शाम को मैंने ही उसका हाथ धोया तथा बाधा था और आज भी वह काम पूरा करके ही तब मुझे अपने घर जाना था, अस्तु जरूरी कामो से छुट्टी पा लगभग नौ बजे के मै कुन्द के घर जाने के लिये तैयार हुआ । उसी समय मुरली भी आ पहुँचा और हम दोनो आपस मे बातें करते हुए एक साथ ही उस तरफ चले ।

कुन्द को मैने अपनी खाट पर चादर ओढ़े पडे हुए पाया । इससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ क्योकि इस समय के बहुत पहिले ही वह उठ कर घर के कामकाज करने लग जाया करती थीं बल्कि हम लोग कई

बार उसे समझा भी चुके थे कि वह बहुत मेहनत और चल फिर न किया करे क्योंकि उसे अभी ताकत नहीं आई है। अस्तु नित्य के खिलाफ आज उसे पड़े हुए देख मुझे ताज्जुब हुआ। मैंने उसकी सास से कुछ पूछना चाहा पर वह खुद ही हमलोगो की सूरत देख पास चली आई और घबराई हुई आवाज मे बोली, "आज कुन्द को न जाने क्या हो गया है अभी तक पडी हुई है और बदन आग की तरह तप रहा है !!"

मै कुन्द की खाट के पास गया, बुढ़िया ने चादर हटाया और मेरी निगाह उसके चेहरे पर पडी। निगाह पडते ही मै चौंक पड़ा क्योंकि इस समय उसका चेहरा लाल और भर्राया हुआ था, सांस जल्दी जल्दी आ जा रही थी आंखे बन्द थीं, बदहवासी सी आ गई मालूम होती थी। मैंने नब्ज देखी, बड़ा तेज बुखार चढा हुआ था। मेरा दिल कापने लगा।

मेरा स्पर्श पा कुन्द ने आंखें खोल दी। आंखे एक दम सुर्ख हुई भई थीं। मैंने पूछा, "तबीयत कैसी है ?" उसने इशारे से कहा, "बडी बेचैनी मालूम होती है !"

मुरली घाव धोने के लिये पानी वगैरह लेने चला गया। मैंने धीरे धीरे जख्मी हाथ की पट्टी खोली। जख्म पर निगाह पडते ही तो मै काप गया क्योंकि वह जख्म जो कि कल तक बहुत कुछ ठीक हालत मे था और जिस पर नया चमड़ा आ रहा था आज बिल्कुल खराब हो रहा था। कई जगह खराश पड़ी हुई थी, कच्चा मांस निकल आया था, जगह जगह से खून निकल रहा था बल्कि खून से ऊपर का कई तह कपड़ा भी तर हो रहा था। यह क्या हो गया ! क्या मामला है !! मेरी कुछ समझ में नही आया। मैंने कुन्द से पूछा, "क्या आपके इस जख्म में किसी तरह चोट लग गई थी ?"

कुन्द कुछ देर तक चुप रही। मैंने फिर कहा, "मालूम होता

हैं जैसे यह पट्टी खोली गई हो क्योंकि जिस तरह मैं कल इसे बांध गया था उस हालत में यह इस समय नहीं थी, सिर्फ मामूली तरह से लपेटी हुई थी। क्या इसे किसी ने खोला था ?"

अब कुन्द ने धीमी और कमजोर अ वाज में कहा "मुझे रात को इसमें बडी खुजली मालूम हुई। जब किसी तरह बर्दाश्त न हुई तो मैंने खोल कर थोड़ा खुजला दिया था। उस समय से बडी दर्द और बेचैनी है।'

मेरे दिल से एक आह निकली ! हाय हाय, बेवकूफ औरत तूने क्या कर डाला ! अब न जाने यह जख्म क्या रंग पकड़ता है !! खैर ऐसी हालत में मैंने कुन्द से कुछ कहना उचित न जाना और जिस तरह उचित समझा धो धा और मलहम पट्टी कर घाव को बाध दिया कुन्द को हिदायत कर दी कि अब वह घाव को किसी तरह न छेडे मगर न जाने क्यो उसकी हालत और वह तेज बुखार देख मेरा दिल बैठ सा गया।

मुरली मेरे मन का भाव समझ गया। उसने मुझे अलग ले जा कर पूछा "क्यो क्या मामला है ?" मैंने उसे सब हाल बता दिया और कह दिया कि घाव खुजला के कुन्द ने फाड़ दिया और बहुत ही बुरा किया। ऐसी हालत का बुखार भी बडा ही खतरनाक है। मर्ज अच्छा होता होता बिगडा चाहता है !"

थोडी देर तक मैं वही रहा इसके बाद मुरली की इच्छा समझ उसे वही छोड मैं यह कह वहा से लौटा कि बुखार के लिये कुछ नई दवा वगैरह की जरूरत पडेगी। मैं उसे लेने राय सीताराम के के यहा जाऊंगा क्योकि और तो कहीं वह सब मिल नहीं मिल सकता।' घर से बाहर निकल मैं सीताराम के मकान की तरफ चला।

थोडी ही दूर गया होऊंगा कि सामने से तीन चार पुलिस कानिस्टबल लपके आते दिखाई पडे जिससे मैं चौंका, क्योंकि इस

गांव में थाना न था केवल पुलिस की छोटी चौकी थी जिसमे सिपाही भी ज्यादा न रहा करते थे. अस्तु आज एक साथ कइयो को देख किसी दुर्घटना का उसी तरह अनुमान किया जा सकता था जिस तरह पारे का गिरना देख आंधी का। यद्यपि मैंने उन लोगो से तो कुछ न पूछा तथापि मुझे निश्चय हो गया कि कुछ न कुछ मामला जरूर गडबड है।

गांव की पुलिस चौकी राय सीताराम के मकान के रास्ते में पडती थी और मुझे उसके सामने ही से होकर जाना पड़ा। वहां भी मैंने कुछ निराला रंग रवैया पाया। कई पुलिसमैनो के साथ थानेदार साहब खड़े एक आदमी से कुछ बाते कर रहे थे, आस पास में और भी कई आदमी खड़े थे. और आपुस में कानाफूसी हो रही थी। आखिर मुझसे न रहा गया और मैंने पास जा कर एक आदमी से पूछा, "क्या कोई वारदात हुई है?" उसने कहा, "सुनते हैं महन्थ महादेवदास का कोई खून कर गया है।" मैंने चौक कर पूछा, 'सो कब?" उसने कहा, "अभी अभी किसी ने खबर दी है, ठीक ठीक हाल कुछ मालूम नहीं हुआ।"

मै आगे बढा मगर इस भयानक खबर के सुनने के साथ ही मुझे उस औरत और मर्द की वे बातें खयाल आ गई जिन्हे आज सुबह मैंने अपनी खिड़की के नीचे सुना था। महन्थ को किसने मारा, क्यों मारा, किस लिये मारा, कब मारा, इसी सब उधेड़बुन मे पडा और साथ ही यह भी खयाल करता हुआ कि बेशक उन दोनो का भी इस घटना से कुछ न कुछ सम्बन्ध जरूर है जिनकी बातचीत मैंने सुबह सुनी थी, मै राय सीताराम के मकान पर पहुँचा। उन्हे अपने दर्वाजे पर खडे कई आदमियों से बाते करते पाया। मुझे देखते ही वे बोले, "आपने सुना? महन्थ महादेवदास का रात कोई खून कर गया!" मैंने कहा, "जी हां रास्ते में चौकी पर मैंने यह हाल सुना है पर और कोई बात मालूम न हुई।"

सीताराम ने यह सुन एक आदमी की तरफ बता कर कहा "देखो प्रसादी को ज्यादा हाल मालूम है उससे पूछो।" मैंने यह सुन उस आदमी से पूछा, "तुम्हे क्या मालूम है ?" वह बोला, "मैंने अपनी आंखों महन्थजी की लाश देखी है। आज भी और रोज की तरह जब मैं मक्खन और दूध लेकर खूब सवेरे बगिया को चला तो फाटक से कुछ दूर ही से मैंने किसी औरत को निकल कर जोर से भागते देखा। मैं ताज्जुब करने लगा कि इस समय यह कौन औरत भागी जा रही है। खैर जब भीतर गया—तो आहरे दैया ! सभामडप में सामने महन्थजी को मुंह बाये मरे भये देखा !! नंगधड़ङ्ग बदन, पेट चीरा हुआ, आते निकली हुईं, देखते ही मुझे तो इतना डर लगा कि मै मक्खन वक्खन वही फेंक कर भागा। पुलिस में खबर देने के पहिले ही सरकार को बताने चला आया !!"

मैं०। ताज्जुब की बात है ! न मालूम किसने यह काम किया !!

सीता०। चलो चल कर देख आवे !

मै०। चलिये मगर मै तो कुन्द के लिये कुछ दवा लेने यहा आया था।

सीता०। क्यो क्यो, उसकी तबीयत कैसी है !

मै०। उसे बहुत तेज बुखार चढ़ा है। जख्म के साथ भी कुछ छेड़ छाड़ कर दी गई है जिससे हालत बिगड़ी हुई नजर आती है।

सीता०। ओ हो ! अच्छा तो जिस जिस चीज की जरूरत हो ले कर तुम महाबीर को वही चलने को कहो, हम लोग बगिया चलें, उधर से लौटते हुए तुम कुन्द के यहा जाना और मै भी उसे देखता आऊंगा।

महाबीर डाक्टर नन्दगोपाल का मातहत नौकर था। दवा वगैरह का काम शुरू ही से उसके सुपुर्द था जिससे वह बहुत कुछ होशियार हो गया था। मैंने जिस जिस चीज की जरूरत समझी उसे बता कर

कुन्द के मकान पर चलने को कहा। राय सीताराम ने दो घोड़े कस-वाये और हम दोनों महन्थ महादेवदास की बगिया की तरफ चले।

बगिया के फाटक पर इस समय बीस पचीस आदमियों की भीड़ हो गई थी पर पुलिस किसी को भीतर नहीं जाने देती थी जिस समय सीताराम के साथ मैं वहां पहुँचा उस समय थानेदार वगैरह भी वहाँ पहुँच चुके थे। हमने अपने घोड़े दो आदमियों के सुपुर्द किये और बाग के भीतर घुसे।

सभामण्डप के पास आठ दस पुलिसमैनों का झुण्ड था और मण्डप के ऊपर थानेदार साहब खड़े कुछ देख भाल कर रहे थे। सीताराम को देख वह नीचे उतर आये और साहब सलामत के बाद बोले, रात महन्थजी को न जाने कौन मार गया है!!"

सीताराम बोले हाँ मुझे अभी अभी प्रसादीलाल से यह पता लगा और सुनते ही मैं सीधा इधर चला आया।"

हम दोनों महन्थ की लाश के पास पहुँचे।

डाक्टरी सीखते समय औरों के साथ मैंने भी बहुत कुछ उत्पात किया और खून खराबा देखा है पर इस समय जैसा दृश्य मुझे दिखाई पडा उस एक दफे मुझको घबरा दिया। मैंने देखा कि मण्डप के बीच में मन्दिर के दरवाजे के सामने ही महन्थ महादेवदास की लाश पड़ी हुई है। लाश का सारा बदन नंगा है पर एक फटी धोती पास ही में पडी है। लाश का पेट चीरा हुआ है नाभी से चार अंगुल ऊपर से ले कर नीचे तक किसी तेज औजार से काटा हुआ और आँतें सब बाहर निकल कर इधर उधर फैली हुई हैं। इन आंतों के भी टुकड़े टुकड़े किये हुए हैं। चारों तरफ काले जमे हुए खून के लोथडे, मांस के टुकडे तथा गन्दगी फैली हुई है। लाश की सूरत भी बडी भयानक है। मुह और आंखे खुली हुई हैं। जुबान बाहर निकली हुई और काली हो रही है। कुछ जमा हुआ खून जैसा पदार्थ भी मुंह से निकला और पास ही में

गिरा हुआ है। सीताराम तो यह भयानक दृश्य देखते ही घबरा से गये मगर मै भी परेशान हो गया। हम दोनो ने लाश की तरफ पीठ फेर ली और थानेदार से बाते करनी शुरू कीं।

सीता०। आपने चारो तरफ की तलाशी ली?

थाने०। हा, चारो तरफ देख चुका हूँ। कोठड़ी कमरे सन्दूक आलमारी खुले पडे हैं पर आदमी कही कोई नहीं है। वह औरत रेवती और कन्हाईदास भी कही नजर नहीं आते।

मै०। क्या वे दोनो यहा नहीं हैं?

थानेदार०। नही कही नही! मैने उनकी खोज मे चारो तरफ आदमी दौड़ा दिये हैं। (सीताराम से) आपको क्या प्रसादी ने इस मामले की खबर दी है?

सीता०। हा, मैने उसे आपके पास भेज भी दिया था, क्या वह आपसे नहीं मिला?

थाने०। नही अभी तक तो नहीं आया। पुलिस को तो इस बात की खबर पहिले पहल गिरधारी ने दी जो महन्थजी की आम की बारी का ठीकेदार है। वह आज सवेरे जब इधर से गुजरा तो फाटक खुला देख भीतर चला आया और यहा का हाल देख घबराया हुआ चौकी पर पहुँचा तब वहा वालो ने मुझे इत्तिला दी। अच्छा प्रसादी से आप को क्या मालूम हुआ?

सीता०। और तो कुछ नही सिर्फ इतनी बात काम की मालूम हुई कि उसने यहा से निकल कर भागती हुई किसी औरत को देखा।

थाने०। औरत! वह कौन औरत थी कुछ कह सकता है?

सीता०। नहीं यह सब तो मैने नही पूछा, आप लोग पूछियेगा मगर जहा तक मै समझता हूँ उसने उसकी सूरत नही देखी क्यो कि वह फाटक से दूर ही था जब वह निकल गई।

थाने०। मुमकिन है वह रेवती हो!

सीता०। सम्भव है, मगर क्या आप उसे भी इस मामले में.........

थाने०। हां, मेरा जहां तक खयाल है यह काम कन्हाई और रेवती की ही साजिश से हुआ है क्योंकि एक तो वे ही दोनो यहा रहते थे, दूसरे इस समय गायब हैं, तीसरे इधर देखिये यहां एक औरत और एक मर्द के पैर के निशान भी मौजूद हैं।

इतना कह थानेदार सीढ़ियों के पास गये और वहां मट्टी पर एक पैर के दाग की तरफ बता कर बोले, "देखिये कोई औरत इधर से मण्डप पर चढ़ी है। मालूम होता है उस समय सीढ़ी के आस पास में पानी गिरा हुआ था क्योंकि उस औरत के पैर में मिट्टी लग गई और पैर का पूरा छाप इस सीढ़ी पर पड़ गया है।"

हम दोनों ने सीढ़ी पर निगाह की। तीन सीढ़ियों में से पहिली और दूसरी सीढ़ी पर किसी के पैर की मिट्टी की छाप पड़ी हुई थी। तीसरी सीढ़ी पर भी दाग था मगर कम और ऊपर फर्श पर तो बिल्कुल ही नहीं मालूम होता था। मैंने थानेदार साहब से पूछा, "यह आप कैसे कह सकते हैं कि यह किसी औरत के पैर का दाग है?"

थाने०। देखिये इस दाग में पैर का पूरा हिस्सा साफ साफ उठा है। यह बात सिर्फ औरतो के ही पैरों में ज्यादातर पाई जाती है क्यों कि मर्द के पैरों के दागो में आपने भी गौर किया होगा कि तलवे का अगला पिछला हिस्सा उभरता है और बीच में से सिर्फ दाहिने या बाएं तरफ का दाग पड़ता है, बीच की थोड़ी जगह हमेशः बची रह जाती है जो जमीन से ऊंची रहने के कारण दाग नहीं डालती। बखिलाफ इसके औरत का तलवा अकसर एक दम से बराबर होता है जिससे अमूमन उसका पूरा दाग उठता है।

मुझे थानेदार की बात माननी पड़ी क्योंकि इस बात पर कई बार मै भी गौर कर चुका था। थानेदार साहब अब मंडप के उस कोने की तरफ बढ़े जो बाग के दर्वाजे के सामने पड़ता था। वहां पहुँच कर

उन्होंने कहा, "अच्छा देखिये इस जगह किसी दूसरे के पैर का निशान है जो यहाँ इस तरफ से कूद कर भागा है। नीचे की जमीन उस समय और अब भी कुछ कुछ गीली और नम है और इस पर उसके अगले तलवे और अंगुलियों का पूरा पूरा दाग पड़ा है क्योंकि जोर से कूदने से पैर गीली मिट्टी में धंस गया था।" मैंने इस दाग पर भी गौर किया। थानेदार ने कहा, "मैं यह विश्वास करता हूँ कि यह दाग किसी मर्द के पैर का है क्योंकि मराडप कम ऊंचा नहीं है और इस तरह से कूद कर जाना मर्द के लिये ही सम्भव है। इसके सिवाय और भी दो एक बातों पर मैं गौर कर रहा हूँ मगर अभी कुछ ठीक ठीक कहा नहीं जा सकता। मैंने सदर से एक जासूस को बुलाने के लिये आदमी दौड़ाया है, उम्मीद है कि कोई न कोई दोपहर तक आ जायगा, तब जरूर और भी कुछ मालूम होगा।"

इस खून खराबे के दृश्य ने सीताराम को और मुझे भी बिल्कुल घबरा दिया था इस लिए सीताराम ने चलने की इच्छा प्रगट की और हम दोनो थानेदार साहब से विदा हो वहां से लौटे। फाटक पर से अपने अपने घोड़ो पर सवार हो हम दोनो कुन्द के घर की तरफ चले। रास्ते भर इसी हत्या के विषय में तरह तरह की बातें होती रहीं।

जिस समय हम कुन्द के मकान पर पहुँचे महावीर दवायें इत्यादि लेकर पहुँच चुका था। मुरली भी अभी तक वहां ही बैठा हुआ था। कुन्द पहिले ही की तरह बदहवास सी खाट पर पड़ी थी। बुखार खूब तेज था, होश नहीं था। सीताराम ने मुझसे पूछा, "क्या हालत खतरनाक है?" मैंने कहा, "बेशक, ऐसी हालत में इतना तेज बुखार अच्छा नहीं है, इससे घाव के सड़ जाने का डर रहता है।"

मैंने मुनासिब दवाई वगैरह बना कर कुन्द की मास के सुपुर्द किया और पिलाने की तर्कीब बताने बाद मुरली सीताराम और मैं तीनो आदमी उस घर के बाहर निकले। मुरली ने अभी तक महन्थ की मौत का

हाल नहीं सुना था, अस्तु इस समय सीता राम की जुबानी यह खबर सुनते ही वह चौंक पड़ा और जब यह मालूम हुआ कि महन्थ का पेट चीरा हुआ और आतें बाहर निकाल कर रक्खी हुई थीं तो उसने एक भेद भरी गहरी निगाह मुझ पर डाली। इसके बाद जब मैंने यह कहा कि वहां एक मर्द और एक औरत के पैर के निशान पाये गये हैं तब तो वह एक दम बोल उठा, "तब तो बेशक यह काम कन्हाई और रेवती का ही है दूसरे किसी का नहीं !!"

सीताराम ने कहा, "हां थानेदार को भी यही शक है।"

मुरली०। शक क्या यह तो बिल्कुल साफ बात है ! कन्हाई ने उन हीरों की लालच में महन्थ को मार डाला है और रेवती ने इस काम में उसकी मदद की है।

सीता०। कैसी ? हीरों की लालच कैसी ?

मैंने मुरली की तरफ इस नीयत से देखा कि क्या यह सब बातें इनसे कहना मुनासिब होगा ? मगर मुरली न जाने किस खयाल में डूबा हुआ था कि उसने मेरी तरफ देखा ही नहीं और सिर झुकाये हुए ही कह दिया "अजी वही हीरे जिन्हें ले कर महादेवदास भागे थे और जिन्हें चोरी के डर से खा गये थे ! उन्हीं की लालच में ही तो ये दोनों प्रेत उनके संग चिपके हुए थे !!"

सीता०। कैसा कैसा ? मैं समझा नहीं, जरा साफ साफ कहो !

मुरली०। (मेरी तरफ देख कर) अब इन्हीं से पूछिये, ये ही बतावेंगे!

सीताराम ने यह सुन मेरी तरफ देखा। अब क्या करता ? लाचारी थी। इच्छा न होने पर भी इस मामले में जो कुछ मैं जानता था उन्हें कहना और रेवती तथा कन्हाई की बातों को उन्हें सुनाना ही पड़ा। वे बड़े गौर और ताज्जुब से सब बातें सुनते रहे और जब मैं कह चुका तो बोले, "ओफ, दौलत भी कैसी बुरी बला है ! इसके न होने से दुःख है और होने से भी दुःख ! मैं आज तक नहीं समझ पाया,

कि इसका होना अच्छा है या न होना अच्छा ! पर खैर, वह सब जो कुछ भी हो, मुझे इस घटना का अफसोस है । इस बात का अफसोस नहीं कि कन्हाई ने ऐसा दुष्कर्म किया । नहीं नही, उसके स्वभाव और प्रकृति को देखते हुए तो मुझे ताज्जुब होता है कि वह आज से कहीं पहिले ऐसा क्यो न कर गुजरा । उसके लिये तो यह मुनासिब ही था कि दौलत के लिये अपने गुरू को मार डाले और यह भी मुनासिब ही है कि इसके लिये फासी पडे। अफसोस तो असल में मुझे इस वेचारी कुन्द के लिये होता है । मै नहीं कह सकता कि इस खबर को सुन कर उसकी क्या हालत होगी !!"

मै० । हालत ! जिस हालत में वह इस समय है उसमें यदि यह खबर उसने सुन पाई तो मैं उसकी जिन्दगी मे बिल्कुल ही नाउम्मीद हो जाऊँगा ! उसे यदि यह मालूम हो गया कि कन्हाई ने फासी पाने का कोई काम किया है या उसको फांसी पड़ेगी तो वह जान दे देगी, जरूर जान दे देगी !!

अफसोस, उस समय तक भी मैं कुन्द को पहिचान न सका था ! नही जान सका था कि उसका आदर्श कितना उच्च है, पति प्रेम कैसा सच्चा है, पति-भक्ति कैसी निर्मल है और प्रीति कैसी निःस्वार्थ है ! उस समय तक भी कुन्द को मै मानवी ही समझे हुआ था !!

आठवाँ बयान

मोदपुर के महन्थ की हत्या की खबर बिजली की तरह चारो तरफ फैल गई। घर घर इसी की चर्चा होने लगी और इसके साथ साथ भागे हुए कन्हाई और रेवती का भी जिक्र होने लगा। महन्थजी मोदपुर के बहुत पुराने निवासी और बड़े ही नामवर साधू घराने में से थे अस्तु इनके मरने से जिले भर में एक तरह की हलचल सी मच गई और यही सबब था कि शाम होते-होते जिले के पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, कई और अफसर, तथा जासूस भी वहाँ आ पहुँचे। इस बीच यहाँ की पुलिस ने रेवती और कन्हाई की गिरफ्तारी का वारंट मंगवा लिया था और चारो तरफ इन दोनो फिरार असामियों की खोज बड़े जोर शोर से हो रही थी।

शाम से कुछ पहिले मैं कुन्द को देख कर लौटा आ रहा था। मुरली मेरे साथ था और हम दोनो में कुन्द की खतरनाक हालत के विषय में बातें हो रही थीं जिसका बुखार इस समय सवेरे से भी कुछ बढ़ा हुआ था और इसीलिए जिसकी तरफ से मुझे बहुत बड़ा डर पैदा हो गया था। मैं यही बात मुरली से कह रहा था और उसी

की राय से अपना घर लौटने का इरादा भी कुछ समय के लिये त्याग चुका था कि पीछे से "क्या साहब ! ओ साहब !!" की आवाज सुनाई दी। जब घूम कर देखा तो पुलिस का एक सिपाही दिखाई पड़ा जिसने पास आ कर कहा, "थानेदार साहब ने आपको सलाम दिया है और कहा है कि अगर आप थोड़ी देर के लिये उनसे मल लें तो बहुत अच्छा हो।"

मैंने कहा, "मैं तैयार हूँ, वे हैं कहां ?"

सिपा०। महन्थ महादेवदास की बगिया मे।

मैं०। चलो मैं चलता हूँ।

मुरली भी मेरे साथ हो लिया और हम लोग बगिया की तरफ चले। रास्ते में मैंने सिपाही से पूछा, "और कौन वहाँ है ?"

उसने जवाब दिया, "हेड से जासूस रामसिंह आए हैं, थानेदार साहब के इलावे सिर्फ वे ही वहां हैं, और कोई नहीं है।"

थोड़ी ही देर में हमलोग बगिया में पहुँच गये, इस समय वहा भीड़ भाड़ कुछ नहीं थी और फाटक बंद था। हम लोगो के लिये फाटक खोला गया और अन्दर पहुँच जाने पर फिर बन्द कर लिया गया। सभामराडप पर मैंने दो आदमियों और नीचे कई पुलिसमैनो को खड़े पाया। उन दोनों आदमियों में से जो मराडप पर थे एक तो थानेदार साहब थे और दूसरे (जैसा कि बाद मे पता लगा) जासूस रामसिंह।

मुझे देखते ही थानेदार ने कहा, "आइये आइये विनोदविहारी बाबू, हम लोग आपकी ही राह देख रहे थे। ये मशहूर जासूस सरदार रामसिंह साहब इस लाश के बारे में आपसे दो चार बहुत जरूरी बातें पूछा चाहते हैं।"

रामसिंह तो क्या मुझे अभी तक कभी किसी भी जासूस को देखने का मौका न मिला था और न मैं यही जानता था कि वे लोग कैसे क्या करते हैं या किस तरह असामियो और खूनियों का पता लगाते

है। इस बात के जानने की इच्छा बहुत दिनों से मेरे मन में थी और इस अच्छे मौके को मैं हाथ से जाने दिया नहीं चाहता था, अस्तु मैंने तुरत कहा, "हाँ हाँ, जो कुछ भी मुझसे बन सके सो करने के लिये मै खिदमत में हाजिर हूँ।" जासूस साहब ने मुझसे हाथ मिलाया और मैं भी मण्डप पर चढ़ गया। थानेदार साहब के कहने से मुरली भी मेरे पास आ खड़ा हुआ।

महन्थ की लाश ठीक उसी तरह पड़ी हुई थी जैसी आज सुबह मै देख चुका था। किसी बात में कोई फर्क न था, हां कुछ कुछ बदबू आने लगी थी और यह गुमान किया जा सकता था कि यदि आज ही यह लाश यहां से हटा नहीं दी जायगी तो कल तक बिना नाक दबाये यहां खड़ा होना कठिन होगा चाहे जाड़े का ही मौसिम क्यो न हो।

सरदार रामसिह ने मुझसे कहा, "आप आज सुबह इस लाश को देख गये हैं। उस समय और अब की हालत से क्या आप बता सकते हैं कि मौत हुए कितना समय बीत चुका है?"

मैंने सब बातो पर गौर करके कहा, "जहां तक मै समझ सकता हूँ महन्थजी को मरे अब अट्ठारह घण्टे बल्कि उससे भी ज्यादे हो चुके हैं, क्योंकि आज सुबह ही जब मैने देखा था तो जमे हुए खून की तरफ खयाल करके सोचा था कि पेट चीरे बहुत देर हो चुकी है।"

राम०। मौत का कारण क्या हुआ इसके बारे में क्या आप कुछ कह सकेंगे? क्योंकि आपने इस जख्म की तरफ शायद खयाल नहीं किया होगा।

इतना कह जासूस ने एक गहरे घाव की तरफ मेरा ध्यान दिलाया जो छाती के बगल में था। मेरी निगाह वास्तव में इस घाव की तरफ नहीं पड़ी थी अस्तु मैने इसे गौर से देखा। घाव बहुत गहरा और किसी तेज छूरे से किया हुआ मालूम होता था।

राम० । क्या आप कह सकते हैं कि मौत इस छाती के जख्म की बदौलत हुई या पहिले पेट चीरा गया ?

मैं बड़ी देर तक गौर से देखता और सोचता रहा । आखिर मैंने कहा, 'इस बात का ठीक ठीक पता बिना मुनासिब चीर-फाड़ और जांच के नहीं लगाया जा सकता पर फिर भी अनुमान से जहां तक मैं कह सकता हूँ यह मालूम होता है कि पहिले यह छूरा छाती में घुसेड़ कर महन्थ की जान ली गई और तब पेट चीरा गया, क्योंकि अगर ऐसा न होता तो जब पेट चीरा गया था तो बेशक उस समय बहुत सा खून चारों तरफ फैलता पर सो न हो कर खून के जमे जमे काले धब्बे ही चारो तरफ दिखाई दे रहे हैं जिससे यह गुमान होता है कि उस वक्त मौत हुए कुछ समय बीच चुका था और बदन का खून जमने लग गया था जब कि पेट चीरा गया ।

राम० । (खुश हो कर) बेशक, बेशक, ठीक ऐसा ही मैं भी सोचता हूँ !

इसके बाद रामसिह इसी विषय के और भी बहुत से सवाल मुझसे करने लगे और मैं भी जहां तक होता गया अपनी बुद्धि के अनुसार उन्हें जवाब देता गया । उनके सवालों के ढंग से मालूम होता था कि इन मामलों में वे स्वयम् भी किसी डाक्टर से कम जानकारी नहीं रखते ।

आखिरकार लाश के विषय में जो कुछ बातें पूछनी थीं वे सब समाप्त हो गईं और रामसिंह मुझे धन्यवाद दे थानेदार की तरफ घूम कर बोले, "अब आप इस लाश को हटा सकते हैं मगर जरा मैं कुछ नाप जोख कर लूं ।" इतना कह उन्होंने जेब से एक फीता निकाल कर लाश के चारों तरफ कई तरह की नाप जोख की तथा एक कागज पर जो उनके हाथ में था और जो शायद घटनास्थल का नकशा था सब दर्ज किया । फिर मुझसे बोले, "एक काम में आपको अब और मदद करनी होगी जिसे सिपाही लोग ठीक तरह से कर न सकेंगे, "

इतना कह उन्होंने उन फैली और बिखरी हुई आंतों की तरफ इशारा किया जो महन्थ के पेट के अन्दर से निकली और फटी फटी इधर-उधर फैली हुई थीं और मैंने भी उनका मतलब समझ उन आंतों को कायदे से पेट के अन्दर सरिआना शुरू किया। जासूस साहब भी इस काम में मेरी मदद करने लगे।

मगर यह क्या? यकायक उन फटी फटी आंतों के बीच से यह चमकदार सी चीज क्या निकल कर गिर पड़ी! मैंने उसे उठाया और महन्थजी की धोती से पोंछ कर देखा, वह इमली की चीयां से बड़ा एक कीमती हीरा था!!

मैं चौंक पड़ा। जिन पत्थरों ने महन्थ की जान ली उन्हीं के एक साथी ने अभी तक महन्थ के पेट में दखल जमाया हुआ था! बेशक भागने की जल्दी में खूनियों ने पूरी खोज तलाश न की नहीं तो यह यहां कैसे रह सकता था? मैंने गौर से उस हीरे को देखा और मेरी अनभिज्ञ आंखों ने भी कह दिया कि यह जरूर हजारों रुपये की जमा है। बहुत कुछ सोचते विचारते मैंने वह पत्थर यह कह कर रामसिंह के हाथ पर रख दिया—"देखिये इन आतों से यह चीज निकली है।"

सरदार रामसिंह उस समय थानेदार की तरफ घूम कर कुछ कह रहे थे जब मुझे हीरा मिला था पर मेरी बात सुनते ही वे चौंक कर पलटे और उस हीरे को देखते ही बहुत ही खुश हो कर बोले - "हां, हां, निकला? निकला? मैं भी सोचता था कि आखिर यह खून किया ही गया क्यों और मार डालने के बाद भी पेट को चीरने की जरूरत क्या पड़ी? मेरा खयाल हो रहा था कि जरूर खूनियों को इस महन्थ के पेट में किसी कीमती चीज होने का गुमान था। मेरा खयाल अशर्फियों की तरफ गया था पर अब तो देखता हूँ कि महन्थ महाराज उससे भी कई दर्जा कीमती चीज अपने पेट में छिपाये बैठे थे।"

हीरे को उन्होंने बड़े गौर से देखा और तब कहा, "पांच हजार से

कम की जमा नहीं है! "और कोई तो नहीं है?" मैंने कहा "नहीं" बल्कि आंतो के टुकड़ो को झटकार के दिखा भी दिया और तब उनके आदेशानुसार उन्हें पुनः पेटके अन्दर डाल और एक कपड़े से जो पास ही में पड़ा था पेट को बाध मैं हट आया। एक सिपाही ने साबुन और पानी दिया जिससे मैंने हाथ धोया और तब मुझसे थानेदार और रामसिंह से बातें होने लगीं। चार सिपाहियों ने मिल कर लाश को एक मोटे कम्बल में लपेटा और तब उठा के ले गये। मैंने पूछा, "अब यह लाश क्या होगी?" थानेदार ने कहा, "अब यह तहसील के बड़े अस्पताल म जांच के लिये जायगी।"

थोड़ी देर तक जासूस साहब इधर उधर घूमते, टोह लगाते, और तरह तरह के निशान देखते समझते और समझाते रहे। आखिर उनकी जांच खतम हुई और तब मैंने उनसे पूछा, "अब आप क्या समझते हैं? यह खून किसने और क्यो किया?" जासूस ने यह सुनते ही कहा, "अगर मै कोई बहुत भारी धोखा नहीं खा रहा हूँ तो यह खून महन्थजी के चेले कन्हाईदास ने किया और रेवती बीबी ने इस काम में उसकी मदद की।"

मैं०। यह बात आप केवल अनुमान से कहते हैं या इसका कोई सबूत भी दे सकते हैं?

रामसिंह०। नहीं सबूत देखता हूँ जनाब! तब यह बात तो हई है कि अभी कई बातो का पता लगे बिना ठीक ठीक कुछ कहा नहीं जा सकता।

मैं०। एक सबूत तो आपको इन दोनो पैर के निशानो ने दिया होगा?

राम०। हां, मैं साबित कर सकता हूँ कि वह आदमी जो सभा-मराडप से यह देखिये यहां पर से कूद कर भागा है वह कन्हाई ही था।

मैं०। सो कैसे?

जासूस रामसिंह नीचे उतर आये। और मैंभी उनके पास जापहुँचा

रामसिंह ने अपने पास से एक कागज निकाला जो पैर के पञ्जे की शकल में कटा हुआ था। अंगूठे और चारो अंगुलियो का हिस्सा साफ साफ कटा था। उन्होने इस कागज को उस पंजे के दाग पर रक्खा जो नीचे गीली मिट्टी पर बन गया था और जिसे मैं सवेरे देख चुका था। कागज ठीक नाप था और गड़हे में पूरा पूरा बैठ गया। रामसिंह ने कहा, "देखिये ठीक एक ही नाप है तो?" मेरे "हां" कहने पर वे बोले, "अच्छा अब आप इधर आइये!"

बाग के पश्चिम वाले हिस्से में भ छोटी सी एक इमारत थी जिसमें मैं सुन चुका था कि कन्हाई का डेरा रहा करता था। रामसिंह इसी कोठरी के पास पहुँचे और दरवाजे पर पड़े हुए एक जोड़ी खड़ाऊँ की तरफ बता कर बोले, "यह देखिये कन्हाईदास के खड़ाऊँ हैं। ये बहुत पुराने हैं मगर हाथीदांत के होने के कारण ही शायद कन्हाई ने इन्हें फेका नही, यहां तक कि रोज रोज इस्तेमाल करते करते ये बिलकुल घिस गए हैं। इनके ऊपरी तख्तो मे यह देखिये घिसते घिसते पैर के पंजे तथा तलवे का निशान बन गया है। मै देखिये इस बाएँ खड़ाऊँ पर वह कागज का नाप रखता हूँ।"

रामसिंह नाप का जो कागज लाये थे उसे उन्होने इस खड़ाऊँ पर रक्खा। दोनों का एक ही नाप था और मुझे भी अब विश्वास करना ही पड़ा कि बेशक वह आदमी कन्हाई ही था जो मंदिर के सभामंडप पर से कूद कर भागा था।

रामसिंह बोले, "अच्छा अब इस कोठरी के अन्दर आइये।" मै कन्हाई की कोठरी के अन्दर गया। कोठरी का सब सामान उथल पुथल पड़ा हुआ था। सन्दूक आलमारियाँ खुली पड़ी थीं, सामान उनमें का इधर उधर फैला हुआ था। रामसिंह ने सब की तरफ मेरा ध्यान दिला कर कहा, "देखिये खून करने के बाद कन्हाई यहां आया। मालूम होता है उसे किसी चीज की तलाश थी जिसे उसने

बड़ी घबराहट और जल्दीबाजी में खोजा है। वह चीज उसे मिल गई या नहीं सो तो नहीं कहा जा सकता पर परन्तु मैं इतना कह सकता हूँ कि वह इस जगह अपने जुर्म का एक बहुत भारी सबूत छोड़ गया।" रामसिंह ने एक बड़ा सा रूमाल दिखलाते हुए कहा, "देखिये यह रूमाल इस जगह से मुझे मिला था। यह खून से बिल्कुल तर बल्कि काला हो रहा है, बदबू आने लगी है।" रामसिंह ने एक कोना दिखा कर कहा, "देखिये इस जगह सूई से एक अक्षर काढ़ा हुआ है, ठीक ठीक यद्यपि नहीं पढ़ा जाता फिर भी इसे देखटके 'कन्हाई' नाम का पहिला अक्षर 'क' मान सकता हूँ—" मैंने भी इसे देखा, खूबसूरती के साथ काढ़ा मगर खून के कारण बदशक्ल हुआ भया 'क' वहां बना था।

जासूस महाशय फिर बोले, "इसी जगह से कन्हाई इस जंगले को तोड़ कर भागा।" इतना कह उन्होंने एक खिड़की खोली जो बाहर की तरफ पड़ती थी। इस खिड़की में काठ का जंगला लगा हुआ था जो इस समय टूटा हुआ और इस लायक हो रहा था कि उस राह से आदमी बाहर निकल जा सके, तब कहा "यहां से भी मुझे एक भारी सबूत मिला—(खून से भरा हुआ लत्ते का एक टुकड़ा दिखला कर देखिये यह कपड़ा इस काठ की छिलत में अटक कर फट गया और यहीं पड़ा रह गया जिसकी तरफ खूनी ने भागने की धुन में ख्याल नहीं किया। यह टुकड़ा उम्दे मलमल का है और इस तरफ की सिलाई बताती है कि शायद किसी कुरते में से फटा हुआ है। कन्हाई के इन कपडो मे से कई कुरते ठीक इसी मेल के कपड़े के मैंने पाये हैं जिससे यह विश्वास किया जा सकता है कि यह टुकड़ा भी कन्हाई के ही उस कुरते मे से फटा होगा जो उस वक्त वह पहिने था।"

मुझे जासूस की बातें माननी पड़ीं। उन्होंने खिड़की बन्द की

और कोठड़ी के बाहर चले। अपने हाथ वाले झोले में खड़ाऊँ की जोड़ी, वे दोनो कपड़े के टुकड़े,तथा कुछ और भी चीजे उठा कर रखने बाद वे कोठरी के बाहर हुए दर्वाजा बन्द कर उसमें एक ताला लगाया और तब मन्दिर की तरफ लौटते हुए बोले, "मेरी जांच अभी तक पूरी नहीं हुई है। मुझे उम्मीद है कि महंथ के उधर वाले सजे हुए कमरो की पूरी पूरी जाच करने बाद और भी कुछ सूत मिलेगा।"

मैने कहा, "बेशक।"

हम दोनो मन्दिर के पास आये। थानेदार साहब से कुछ बाते हुई और तब अपना ठहरना बेमुनासिब समझ मै मुरली को साथ लिये बाग के बाहर निकल आया। रास्ते में मैंने जासूस के सबूतों का हाल मुरली से कहा। उसने सब सुनकर कहा, "तो अब भला क्या शक रह गया!!"

हम दोनों गांव की तरफ लौटे। मुरली के दिल की तो मैं नहीं कह सकता पर मुझ पर इस घटना ने भारी असर किया था और मेरे मन में बार बार यही खयाल उठ रहा था कि ईश्वर करे कुन्द को इस बात का पता न लगे नही उसकी जान ही चली जायगी।

नौवां बयान

दूसरे दिन सवेरे मैं अपने मकान के सामने चौतरे पर बैठा दातून कुल्ला कर रहा था और दो चार संगी साथी भी वहीं बैठे इधर उधर की बातें कर रहे थे जब मैंने सामने वाले रास्ते पर से हेड कानस्टेबल गोमतीसिंह को तीन और पुलिसमैनों के साथ घोड़ों पर जाते देखा। गोमतीसिंह से मेरी कुछ जान पहिचान थी इससे मैंने हाथ के इशारे से उससे पूछा, "किधर चले?" उसने घोड़ा रोक कर कहा, "गोविन्दपूर से खबर मिली है कि उस कन्हाईदास के हुलिये का एक मर्द वहाँ देखा गया है जिसकी गिरफ्तारी का वारंट कल निकला था, मगर वह अपने को कोई दूसरा ही बताता है, उसे वहां रोक रक्खा गया है और मैं उसकी शिनाख्त करने जा रहा हूँ। साहब का हुक्म है कि अगर वह मुजरिम कन्हाई ही है तो गिरफ्तार कर के यहा ले आया जाय।" मैंने फिर पूछा, "क्या कलेक्टर साहब आ गये?" उसने कहा, 'हां रात ही को!" और तब घोड़े तेज कर चारो निकल गये।

गोविन्दपूर मोदपूर से पूरब कोई बीस कोस पर एक बड़ा कसबा था। यह जान कर कि कन्हाई गोविन्दपूर में पकडा गया है मुझ कल सुबह

की वह बातचीत याद आ गई जो अपनी खिड़की से मैंने सुनी थी। उसमें भी किसी के गोविन्दपुर भाग जाने की बात थी अस्तु मुझे मन ही मन निश्चय हो गया कि हो न हो वह आदमी कन्हाई ही था। मगर वह औरत कौन थी? क्या रेवती थी? या........! न जाने क्यों मेरा कलेजा एक बार जोर से धड़क उठा।

मेरा एक साथी बोला, "अच्छा! तो क्या कालेखां गोविन्दपुर पहुँचे?" दूसरे ने कहा, "कालेखां क्यों कहते हो, काला खूनी कहो।"

मगर मेरा दिल इन सब बातों की तरफ न था। उसमें किसी दूसरे ही खयाल ने उथल पुथल मचा रक्खी थी और मैं सोचने लगा था कि कुन्द को जब यह मालूम होगा कि उसके पति ने खून किया है और उसको पकड़लाने के लिये सिपाही गये हुए हैं तो उसकी क्या दशा होगी।

थोड़ी देर बाद मैं नहा धो कर तैयार हुआ। मुरली भी आ पहुँचा और हम दोनो कुन्द की तरफ चले मगर मेरा चित्त बहुत उदास था और मुरली भी दुःखी मालूम होता था।

कुन्द के मकान पर पहुँच कर मैंने वहां सीताराम की भेजी उस दाई के अतिरिक्त महावीर तथा एक अन्य नौकर को भी कुछ काम करते पाया जो जरूर उन्हीं के हुक्म से आया होगा। कुन्द एक बिछावन पर सुफेद चादर ओढ़े पड़ी हुई थी। उसकी बेचारी सास पास ही में बैठी थी। कुन्द का मुंह ढका हुआ था।

मुझे देखते ही बूढ़ी उठ कर मेरे पास आई। मैंने पूछा, "क्या हाल है?" उसने कहा, "बुखार तो कुछ कम है मगर न जाने क्यों घण्टे भर से रो रही है। अभी तक उसका रोना बन्द नहीं हुआ" मैंने चौंक कर कहा, "आपने उसके सामने महन्थ की मौत का जिक्र तो नहीं कर दिया? सुन कर वह बोली, "नहीं नहीं, तुम लोग मना कर गये थे तो कैसे कहती!" मेरी निगाह उन दोनों नौकरों की

तरफ गई मगर बुढिया मेरा खयाल समझ कर बोली, "नहीं इन दोनो ने भी कुछ नहो कहा है। महाबीर तो भला खुद ही होशियार है और वह दूसरा नौकर तो अभी ही सीताराम के भेजे कुछ कपड़े वगैरह लेकर आया है। मजदूरनी ने भी कुछ नहीं कहा है। मैंने कई बार पूछा और दम दिलासा दिया मगर कुन्द कुछ कहती ही नहीं। अब मुरली पूछे तो शायद कुछ पता लगे!!" मैंने मुरली से कहा, "मैं यही हूँ, तुम पहिले जा कर देखो क्या मामला है, फिर मैं भी आऊंगा।"

मुरली चला गया। मैंने देखा कि वह कुछ देर कुन्द की खाट के सिर्हाने बैठा रहा। शायद उसने कुन्द को धीरे धीरे दो एक आवाजे भी दीं मगर जब वह कुछ न बोली तो उसने मुंह पर का कपड़ा हटाया और तब कुन्द से कुछ बातें करने लगा, मगर दो ही चार बात के बाद यकायक मुरली के चेहरे की रंगत बदल सी गई, घबराहट और परेशानी उसकी सूरत से झलकने लगी। मैंने देखा कि वह कुन्द के पास घुटने के बल बैठ गया और जल्दी जल्दी उद्वेग के साथ कुछ कहने लगा, मगर कुन्द ने अपने दाहिने हाथ को उसके कन्धे पर रख उसे शान्त किया। दोनो मे फिर कुछ बातें होने लगीं। कुन्द मुरली को कुछ कहती थी मगर वह जोर से सिर हिलाता मानो इन्कार करता था। थोड़ी देर तक यही अवस्था रही और मैं आश्चर्य के साथ कुन्द और मुरली की तरफ देखता रहा। आखिर मेरा मन न माना और मै धीरे धीरे उस तरफ बढा। मुरली ने भी मेरी तरफ देखा और भर्राई हुई आवाज मे कहा, "विनोद, इधर आओ।"

मैं पास पहुँचा। कुन्द ने अपना सिर ढांक लिया और तकिये के सहारे कुछ उठंग सी गयी। मुरली ने कहा, "कुन्द तुमसे कुछ कहा चाहती है।" कुन्द ने भी मेरी तरफ देखा और कहा, "विनोद बाबू; मुरली तुम्हें भाई समझते हैं अस्तु मै भी तुम्हे अपना भाई बनाती हूँ! भाई विनोद, क्या तुम अपनी अभागिनी बहिन के लिए कुछ नहीं कर

सकते !" मै करुणास्वर से कही हुई कुन्द की यह बात सुन उद्वेग से बोल उठा, 'बहिन कुन्द मैं तुम्हारे लिए जान तक देने के लिये तैयार हूँ ! कहो क्या कहती हो ?" कुन्द बोली, "क्या मेरे लिए कुछ तकलीफ, कुछ मुसीबत. उठा सकोगे ?" मैंने कहा 'कह तो चुका कि तुम्हारे लिये जान तक की परवाह न करूंगा । तुम कहो क्या कहती हो ?" कुन्द बोली. "देखो फिर मत जाना !" मैंने कहा, 'मर्द हूँगा तो ऐसा न होगा ।" कुन्द कुछ देर के लिये चुप हो रही । मेरी निगाह मुरली की तरफ गई । मैंने देखा—उसके चेहरे से अपार दुःख प्रगट हो रहा था, आखे डबडबाई हुई थीं ।

कुन्द ने कहा, "मेरे पति पर महन्थ महादेवदास की हत्या का अपराध लगा है, वे भागे हैं । क्या तुम बता सकते हो कि अब कहां हैं ? उनकी क्या दशा है ? और पुलिस उनके बारे में क्या सोच रही है ?"

मैंने चिहुँक कर कहा, "तुम्हे यह कैसे मालूम हुआ ?" कुन्द बोली, "चाहे जैसे भी मालूम हुआ हो, तुम मेरी बात का जवाब दो ! तुमसे थानेदार से दोस्ती है, जरूर तुम्हें इस बात का पता होगा ।"

मैंने सिर हिला कर कहा, "यह मै तुमसे नही कह सकता ! मै कुछ नही जानता ।"

कुन्द बोली "क्या तुम कुछ नहीं जानते ! क्या सच कहते हो कि कुछ नहीं जानते !"

मैंने कहा, "तुम यह सब पूछ के करोगी क्या ! तुम बहुत कमजोर हो रही हो ?"

कुन्द ने एक लम्बी सास ली । मैंने फिर कहा, "यह सब हाल जान के तुम्हे दुःख ही होगा !" कुन्द बोली, 'तो मेरे दुःख से तुम भी दुःखी होगे ?" मैंने कहा, "हां !" वह बोली, "इसी से तुम मुझसे नही कहते यानो तुम्हे मेरे दुःख की परवाह नही, तुम्हे अपने दर्द का खयाल है ! क्यो न हो भय्या, यही तो चाहिये ! यही तो तुम्हारी प्रतिज्ञा

का नमूना है। मेरे लिये जान देने का यही तो सबूत है! विनोद भय्या तुम तो मुरली से भी बढ़ कर क्रूर हौ?"

कुन्द की बात मेरे दिल में चुभ गई। मैने कुछ बिगड कर कहा, "जब तुम्हारा यही खयाल है जब तुम जान ही देने पर आमादा हौ, तो मेरा क्या! पूछो क्या पूछती हो और सुनो क्या सुनना चाहती हौ? लो - मुझसे सुन लो, तुम्हारे कन्हईदास ने महन्थको मार डाला और भाग गये, अब गोविन्दपूरमे पकड़े गये हैं, पुलिस वहांसे उनको लाने गई है!!"

इतना सुनने के साथ ही कुन्द के मुंह से एक चीख सी निकली और वह बिछावन पर गिर कर बेहोश हो गई।

अब मुझे होश हुआ। एक औरत की बात मे पड जोश में आ मैं क्या कर बैठा!! मुरली ने भी मेरी तरफ देख खेद भरी आवाज में कहा "ओह विनोद तुमने भारी धोखा खाया!"

मैं कुन्द की तरफ झुका। उसकी चीख सुन बूढी सास भी दौड़ी हुई आ गई थी। मैंने उससे पानी मगाया और कुन्द के चेहरे पर छींटा दिया, मुरली दुपट्टे से हवा करने लगा। थोडी देर बाद वह होश मे आई। आख खोलने के साथही उसने मेरी तरफ देखकर कहा, "भय्या, तुमने मेरे साथ बड़ा उपकार किया। यह बात बता कर तुमने मुझे मेरा कर्तव्य सुझा दिया। अभी तक मै डर और आशा के भौजाल में पडी हुई थी, अब अपने कर्तव्य पर आती हूॅ। (मुरली से) भैया मुरली, क्या तुम दया कर किसी पुलिस के सिपाही को या हो सके तो थानेदार को यहां बुलाओगे?"

मुरली ने चौंक कर कहा, "क्यो किस लिये? क्या करोगी?" उसने कहा, "कुछ काम है?" मुरली ने पूछा "क्या काम है?" कुन्द ने कहा, "उसे बुला लाओ तो बताऊं!" मुरली ने सिर हिला कर कहा, "नहीं, मै न जाऊंगा। जब तक तुक ठीक ठीक नहीं बताओगी कि क्या काम है, मैं यहां से न हिलूंगा और न किसी को हिलने दूॅगा!"

कुन्द ने मेरी तरफ देखा। मैंने कहा, "तो तुम बता ही क्यो नहीं देती कि क्या काम है और तुम पुलिस से क्या कहना चाहती हो?" कुन्द ने कुछ देर सोच कर कहा, "मुरली तो उजड्ड है मगर भय्या तुम बुद्धिमान हो। तुमसे मै बता दूंगी कि क्या काम है! सुनो, मेरे पति ने यह खून नही किया। वे इस मामले मे बिल्कुल बेकसूर हैं। महन्थ की जान किसी दूसरे ही ने ली है और मै उस खूनी को जानती हूँ। अगर जल्दी पुलिस को खबर दे दी जाय तो अभी भी असली खूनी गिरफ्तार हो सकता है नहीं तो अगर देर हो गई तो फिर कोई आशा नहीं।"

मैंने चौंक कर कहा, "क्या? क्या? कन्हाई ने खून नही किया? तब किसने किया? क्या कन्हाई बेकसूर है?" कुन्द बोली, "हा वे बिल्कुल बेकसूर हैं। उन पर झूठा इलजाम लगाया गया है। असल खूनी को मैं जानती हूँ और उसके जुर्म का सबूत भी दे सकती हूँ।" मैंने पूछा, "तो वह खून किसने किया?" कुन्द कुछ देर तक चुप रही, इसके बाद धीरे से बोली, "मै उस औरत का नाम मुंह से नहीं निकालूंगी।" मैं यकायक बोल उठा, तो क्या रेवती........ " मगर उसने रोक कर कहा, "अब जब तक तुम पुलिस को यहा नही बुला लाते तब तक मै तुम्हारी किसी भी बात का जवाब नहीं दूँगी।"

मैंने मुरली की तरफ देखा मगर वह सिर नीचा किये किसी बहुत ही गहरे सोच में डूबा हुआ था, यहाँ तक कि मुझे यह भी सन्देह हुआ कि उसने हम लोगो की बाते सुनीं भी या नहीं आखिर जब मैंने पुकारा 'मुरली!' तब उसने चौंक कर सिर उठाया और पूछा "क्या है?"

मैंने कहा, "सुना कुन्द क्या कहती है? यह कहती है कि कन्हाईदास बिल्कुल बेकसूर है और मै यह बात साबित कर सकती हूँ।"

मुरली ने कुन्द की तरफ देखा, गहरी निगाह से देर तक देखा,

और तब सिर हिला कर कहा, "नही।" मैंने पूछा, "क्या नहीं? नहीं क्या?" मुरली ने कहा, "कुन्द झूठी है!"

मेरे और कुन्द दोनो के मुंह से आश्चर्य के साथ निकला "मुरली!" मगर वह इतना कह गरदन झुकाये वहा से उठ खडा हुआ और मकान के एकदम दूसरे सिरे पर जा दर्वाजे के पास पहुँच गरदन पर हाथ रख बैठ गया। मुझे उसके इस बर्ताव पर बड़ा ताज्जुब हुआ और मै उसके पास जाकर उससे कुछ पूछना चाहता था कि कुन्द ने रोक कर कहा, "अजी वह तो आजकल पागल हो गया है! मेरी सब बातो को झूठ समझता है और मुझे झूठो का सरदार मानता है। तुम उसे समझाने बुझाने की कोशिश पीछे करना पहिले थानेदार को बुला लाओ!"

मैने कुछ सोच कर कहा, "अच्छा मै जा कर बुला लाता हूँ मगर तुम जरा अपना हाथ तो मुझको दिखाओ मै उसे धो धा कर नई पट्टी बांध दूँ तब जाऊँ।"

कुन्द०। नही नही, इसकी कोई जल्दी नहीं है, आज बहुत अच्छा है, दर्द बिल्कुल नही है, तुम पहिले वह काम करो जो मैंने कहा, क्योंकि जब तक जो कुछ मै जानती हूँ वह पुलिस से कह न लूंगी मेरे दिल का हौल नही जायगा।

मैं०। मैं अभी जाकर बुला लाता हूँ मगर हाथ का धोना निहायत जरूरी है।

कुन्द०। ओह! किसी की जान जा रही है और तुम्हे हाथ की फिक्र पड़ी है!! मै कहती हूँ कि जब मेरे पति ही न रहेंगे तो मेरा हाथ रह कर क्या करेगा? तुम जाओ, पहिले जो मैं कहती हूँ सो करो, नही तो साफ इन्कार कर दो, मै खुद जाती हूँ।

इतना कहते हुए कुन्द ने एक पैर खाट के नीचे रखा। इसमें कोई शक नहीं कि अगर उसके बदन में थोड़ी भी ताकत होती तो वह

जरूर थाने पर चलने को तैयार हो जाती, मगर मैं और साथ ही वह खुद भी समझती थी कि वह इस योग्य नही है, अस्तु वह इतना ही करके रह गई। जब उसने देखा कि अब भी मै अपने हठ से नही हट रहा हूँ तो वह खिन्न हो कर बोली, "अच्छा तो तुम हाथ ही धो लो पहिले! तुम क्या मुरलीसे कुछ कम हो!" इतना कह उसने अपना बायां हाथ मेरी तरफ लापरवाही के साथ बढा दिया और अपना मुंह फेर लिया।

धीरे धीरे मैं पट्टी खोलने लगा। सब कपड़ा वगैरह हटा कर मैंने हाथ पर निगाह डाली। हाय हाय! यह क्या? घाव तो सड रहा था जख्म की बुरी हालत थी! मैं तो घबड़ा गया।

कुन्द तो अपना मुंह दूसरी तरफ किये हुई थी पर उसकी सास पास ही में खडी थी। मेरे चेहरे से मेरे दिल की हालत वह बूढ़ी औरत तुरत समझ गई और इशारे से उसने पूछा, 'क्या हाल है?" मैंने कुछ जवाब न दे कहा, "आप थोड़ा साफ पानी और कपड़ा ले आइये।"

पानी आया। मैंने दुःखित चित्त से घाव धो धा कर साफ किया। इसके बाद मुनासिब दवाइये महाबीर से मंगा कर लगाया और पट्टी बांधा ही चाहता था कि दर्वाजे पर किसी की आहट सुनाई पडी। मैंने देखा तो सीताराम के फैमिली डाक्टर नन्दगोपाल बनर्जी को आते पाया।

मैं मन ही मन खुश हुआ कि डाक्टर साहब अच्छे मौके पर आ गये। मेरी उनकी साहब सलामत हुई और तब उन्होने पूछा, "क्या हालत है?" मैंने अंगरेजी में कहा, "हालत अच्छी नहीं है, गैंगरीन शुरू हो गया है।" वे सुनते ही चौंक पड़े और उन्होने भी बडे गौर से जख्म को देखा, इसके बाद कहा, "बेशक! मगर इसका सबब क्या है? मै तो बहुत अच्छी हालत में छोड़ गया था, दो ही रोज में यह क्या हो

गया।" मैंने जवाब दिया--"परसो तक सब ठीक था, कल और आज के बीच यह हाल हो गया।" इतना कह मैंने थोडे में कल से आज तक का पूरा किस्सा और दवा इलाज आदि का सब हाल कह सुनाया जो उन्होने बड़े गौरसे सुना मगर सुनतेही सुनते वे बीच हीमें चौंककर बोल उठे,' ओहो मै तो भूल ही गया, मै बडे साहब, को बाहर ही छोड आया हूँ!"यह कह कुन्द से बोले, 'पुलिसके बडे साहब तुम्हे देखने रे साथ आये थे। मै उन्हे बाहरही छोड़ आया था मगर अब जा कर कहे देता हूँ कि आज मुलाकात नही हो सकती, कुन्द बहुत तकलीफ में है"

कुन्द०। (चौक कर) कौन, बड़े साहब! पुलस के? क्या बाहर खड़े हैं? नही नही उन्हे जरूर बुलाइये! पहिली दफे उन्होने मुझपर बड़ी मेहरबानी दिखाई थी, और मै उनसे कुछ कहना भी चाहती हूँ।

डाक्टर०। मगर आप तो बहुत तकलीफ में हैं?

कुन्क०। नही नहीं, मुझे कोई तकलीफ नही है आप बेखटके उन्हें बुला लाइये। अगर आप उन्हें न बुलाइयेगा तब बल्कि मुझे ज्यादा तकलीफ होगी।

डाक्टर०। (लाचारी के स्वर मे) अगर आप का यही खयाल है तो मैं बुलाए लाता हूँ।

डाक्टर साहब ने मुझे घाव बॉध देने का आदेश दिया और खुद साहब को बुलाने चले गये। मगर यह जान कर कि पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट आये हैं मेरा दिल न जाने क्यों धड़कने लग गया। तरह तरह की बाते सोचते हुए आहिस्ते आहिस्ते मै घाव को बॉधने लगा।

दरवाजे की तरफ जाते डाक्टर साहब की निगाह मुरली पर पडी पड़ी जो काठ के पुतले की तरह बैठा हुआ था। उन्होने उससे कुछ कहा, पर मुरली ने सिर उठा कर भी नहीं देखा और वे उसके इस बर्ताव पर ताज्जुब करते हुए बाहर चले गये।

दसवां बयान

थोड़ी देर बाद डाक्टर साहब के साथ पुलिस के बडे साहब ने घर के अन्दर प्रवेश किया। खटपट और जूते की कचर मचर ने मुरली की तन्द्रा दूर कर दी और वह अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ। दो तीन पुलिस के आदनियो के साथ साहब सुपरिंटेण्डेण्ट को घर के अन्दर घुसते देख वह उनकी तरफ बढ़ा। मालूम होता है कि साहब मुरली का पहिचानते थे क्योकि उन्होने उसे देखते ही उससे हाथ मिलाया और बोले, "मुरली बाबू, हम आपकी बहादुर बहिन को डेखने आया !इधर मुआइने पर गया था। लौटती वक्त डिल में हुआ कि कुन्ड बीबी को डेखटा चलूं। डाक्टर बनर्जी रास्टे मे मिल गया और हम इढर आ गया।"

साहब के इशारे से उनका और सब लबाजमा तो दर्वाजे पर ही रुक गया सिर्फ साहब, गोपीसिंह जासूस जो उनके साथ थे, और मुरली, कुन्द की तरफ बढ़े। डाक्टर बनर्जी पहिले ही आकर कुन्द को चैतन्य कर चुके थे। कुन्द को देखते ही टोपी उतार कर साहब ने उसकी इज्जत की और उसके इशारे से एक खाट की तरफ बढ़ गये

जो उनके लिये बिछा दी गई थी। साहब उस पर बैठ गये, और मै मुरली गोपीसिंह तथा डाक्टर साहब आस पास खड़े हो गये।

साहब ने कुन्द से दो एक बाते कीं, उसने साधारण जवाब दिया। इसके बाद डाक्टर बनर्जी से साहब ने हाथ के बारे में दरियाफ्त किया मगर उनसे अंगरेजी मे यह सुनकर कि हालत खराब है और घाव सड़ रहा है उन्हे दु,ख हुआ। उन्होने टूटी फूटी हिंदी मे कुन्द से कहा, "मुझे बहुट अफसोस है कि आपको अभी टक आराम नहीं हुआ। मुझे उम्मीड ठा कि आज आपको एक डम से नही टो फिर भी बहुट कुछ अच्छा पाऊंगा, मगर यहा टो उलटा हा पाटा हूँ!"

कुन्द ने इसका कोई जवाब नही दिया मगर अपनी सास के कान मे जो पास ही मे खड़ी थी कुछ कहा। उसने सुनकर मुरली से कहा, "देखो कुन्द तुमसे कुछ कहा चाहती है।" हिचकिचाता हुआ मुरली कुन्द के पास गया और दोनो में धीरे-धीरे कुछ बातें होने लगीं। इसी समय अचानक कुन्द ने मुरली के कान में न जाने क्या कहा कि उसका चेहरा एक दम पीला पड़ गया और बदन कांपने लगा। उसने कमजोर और कापती हुई आवाज में "नहीं नहीं. सो मैं नही कह सकता।" कहा और कुन्द के पास से हट कर दूर चला गया। हमलोग ताज्जुब के साथ यह हाल देख रहे थे। मुरली का बरताव देख कुन्द ने तुच्छता की एक दृष्टि उस पर डाली और तब साहब की तरफ घूम उसने स्थिर आवाज में कहा, "साहब, आप मुझे देखने आए यह आपकी मेहरबानी है, मगर क्या आप मेरी दो एक बात सुनेंगे और मेरी एक प्रार्थना स्वीकार कर देंगे?"

साहब ने ताज्जुब से कहा, "हां हा, बेशक मै गौर से सुनूंगा और अपने भरसक आप का काम करने की भी कोशिश करूंगा!"

हमलोग ताज्जुब के साथ कुन्द की तरफ देखने लगे। कुन्द ने जरा देर के लिये सिर झुकाया और फिर इस प्रकार गरदन हिलाई

मानों किसी विचार को लापरवाही के साथ दूर फेंक दिया हो। इसके बाद उसने साहब से कहा—

कुन्द०। मैंने सुना है कि कोई आदमी महन्थ महादेवदास का खून कर गया है और इसका इलजाम मेरे पति पर लगाया गया है। क्या यह बात सही है?

साहब चिहुँक गये और कुडबुड़ा कर धीरे से अंगरेजी में बोले, "भारी गलती की जो यहां आया!!" तब आहिस्तगी के साथ कुन्द से बोले 'मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आपने जो कुछ सुना वह ठीक है।'

कुन्द०। तो क्या आप सचमुच समझते हैं कि वास्तव मे मेरे पति ने यह दुष्कर्म किया है?

साहब को जवाब में कुछ हिचकिचाते देख कुन्द बोली, 'आप जवाब देने में किसी तरह का संकोच मन में न लाइये, मैं बुरी से बुरी खबर सुनने के लिये भी तैयार हूँ, मगर इस समय तो मैं किसी दूसरे ही मतलब से यह सवाल कर रही हूँ।"

साहब०। अगर उन्होने यह खून न किया होता तो भागते ही क्यों?

कुन्द०। तो क्या आप उनके चले जाने ही मे समझते हैं कि उन्होने यह काम किया?

साहब०। इसके अलावे कुछ और सबूत भी हमें मिले हैं।

कुन्द०। क्या कोई सबूत ऐसा भी मिला है जिससे उनका जुर्म पक्की तौर पर साबित हो जाता हो?

साहब०। नही ऐसा तो......अभी तक........कोई नहीं मिला।

कुन्द०। तो मेरा भी इस मामले में कुछ कहना है।

साहब०। बेशक, खुशी से कहिये।

कुन्द०। वे इस मामले में बिल्कुल बेकसूर हैं!

साहब०। मैं बडा खुश होऊंगा अगर यह बात साबित हो जायगी।

कुन्द०। मैं इसे साबित कर सकती हूँ।

साहब०। (चौंक कर) क्या कहा ? आप साबित कर सकती हैं कि कन्हाईदास इस मामले में बिल्कुल बेकसूर है ?

कुन्द०। हा।

साहब०। (सिर हिला कर) अच्छी बात है, मैं खुश हूँ, आप उन सबूतो को मुकद्दमे के मौके पर पेश कीजियेगा।

कुन्द०। परन्तु यदि यही करना होता तो मुझे आपकी मेहरबानी की ही क्या जरूरत थी ?

साहब०। तब आप क्या चाहती हैं ?

कुन्द०। मेरे पति मेरे कहने से और मेरे ही एक बहुत ही जरूरी काम से कल सुबह कहीं गये हैं। आपकी पुलिस व्यर्थ उनका पीछा कर रही है। यदि वे पकड गये ता उन्हें तो दुःख होहीगा साथ ही साथ मुझे भी बडी तकलीफ और तरद्दुद होगा और इसी बारे में मैं आजिजी के साथ आपकी मदद चाहती हूँ। आप उन सबूतो को सुनें जो उनकी बेकसूरी के बारे मे मै देती हूँ, उन पर गौर करें, और अगर आपको उन पर विश्वास हो जाय तो आप एक बेकसूर आदमी का पीछा कर या उसे गिरफतार कर व्यर्थ उसे बेइज्जत और मुझे दुःखी न करें।

साहब०। (कुछ गौर कर के) आप किस तरह का सबूत दिया चाहती हैं ?

कुन्द०। मै असल मुजरिम ही का पता आपको दूँगी।

साहब०। वह कौन ? या जिसने वास्तव मे खून किया !!

कुन्द०। हा जिसने वास्तव में महन्थ को मारा।

साहब०। (आश्चर्य से) क्या आप उसका नाम हमलोगो को बता सकती हैं ? क्या आप उसे जानती हैं ?

कुन्द० । हां जानती हूँ और उसका पता भी बता सकती हूँ ।

साहब० । (अविश्वास के साथ) अच्छा तो बताइये ।

कुन्द० । ऐसे नहीं, पहिले आपको एक शर्त करनी होगी ।

साहब० । किस बात की शर्त ?

कुन्द० । यही कि अगर मैं ठीक खूनी का पता बता दूँगी तो आप मेरे बेकसूर पति का पीछा करना छोड देंगे । मैंने सुना है कि आपके सिपाही उन्हें पकडने के लिये गये हुए हैं, आपको उन्हें वापस बुला लेना होगा ।

साहब० । सो मैं कैसे कर सकता हूँ ! अगर आपकी कही हुई बात ठीक न निकली और जिसको आप बतावेंगी वह असल मुजरिम न निकला तो पुलिस इधर से भी गई और उधर से भी ! और उधर कन्हाईदास मौका पा कर निकल जायेगा !!

कुन्द० । मैं आपको जो सबूत दूँगी वे कट नहीं सकते । जिसे मैं बताऊंगी वह अवश्य मुजरिम है और साबित होगा ।

साहब० । अच्छा आप क्या कुछ सबूत देंगी पहिले मुझे बताइये तो सही यदि मुनासिब समझूंगा तो मैं आपके खातिरखाह हो हुक्म दे दूंगा ।

कुन्द० । नहीं सो न होगा, आपको पहिले वादा करना होगा । मगर आप किसी तरह का शक न करें मैं जो कुछ कहूँगी बहुत ठीक और समझ बूझ कर कहूँगी ।

साहब० । नहीं मैं बिना कुछ जाने तो ऐसा नहीं कर सकता ।

कुन्द० । खैर जब आपकी ऐसी ही जिद है तो लाचारी है । मगर फिर साथही इतना भी आप समझ लीजिये कि बिना मेरी मदद के आप असल मुजरिम को कभी पकड़ न सकेंगे । किसी बेकसूर को आप भले ही जेलखाने पहुँचा दें या फांसी हो क्यों न चढ़ा दें मगर खून जिसने किया है वह साफ बचा रह जायगा ! आप मेरी इस बात को याद रखियेगा !!

मैं देख रहा था कि कुन्द की इन बातों को सुनकर साहब बड़े तरद्दुद में पड़ गये—वे कुछ निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि क्या कहें और क्या न कहें। आखिर बहुत कुछ सोच विचार के बाद उन्होंने, कहा, "अच्छा तो क्या आप वादा करती हैं कि अगर मैं कन्हाईदास का पीछा करने वाले सिपाहियों लोटा लूं तो आप असली मुजरिम का नाम और पता मुझे बता देंगी?"

कुन्द०। मै केवल यह वादा ही नहीं करती बल्कि आप पर साबित भी कर दूँगी कि जो कुछ मैं कहती हूँ वह ठीक है। मैं यह जानती हूँ कि बेकसूर आदमी अन्त में बेकसूर साबित हो ही जायगा और आप लोग झख मार कर मेरे पति को छोड़ेंगे पर फिर भी इस समय जो मैं अपनी बात पर इतना जोर दे रही हूँ उसका एक बहुत बड़ा कारण है जो मैं अन्त में कहूँगी।

आखिर साहब ने बहुत कुछ सोच विचार कहा "खैर तो मैं वादा करता हूँ कि कन्हाईदास का पीछा करना छोड़ दूँगा अगर आप महन्थ का खून करने वाले असली आदमी का पता मुझे बता देंगी"

साहब की बात सुनते ही कुन्द के चेहरे प्रसन्नता प्रकट होने लगी। उसने कहा "देखो साहब अपने वादे से फिर मत जाना'" साहब ने कहा, "कभी नहीं, बशर्तें कि आप भी अपना वादा पूरा करें और और मुझे ठीक ठीक बतादें कि महन्थजी को किस आदमी ने मारा।"

कुन्द०। महन्थजी का खून किसी मर्द ने नहीं किया बल्कि एक औरत ने किया।

साहब०। (ताज्जुब से) औरत ने! वह औरत कौन है?

कुन्द०। वह औरत मै हूँ'!

सब लोग यह बात सुनते ही चौक पड़े। साहब सिर हिला कर बोले, "क्या आपने महन्थ को मारा?"

कुन्द०। हाँ मैंने! मैने!!

साहब और उसके साथ ही उनके पीछे खड़े जासूस गोपीसिंह दोनों ही ने अविश्वास के साथ गरदन हिलाई। साहब हँसे और तब बोले, "मैं सोचता था कि आप ऐसी ही कोई असंभव बात कहियेगा और अपने पति का जुर्म अपने ऊपर ओढ़ने की कोशिश कीजियेगा। मुझे अफसोस है कि मैं आपकी बात नहीं मान सकता! ऐसी हालत मे मै अप ा वादा भी पूरा नहीं सकता!"

कुन्द०। (गुस्से से) क्या आप समझते हैं कि मै झूठ कह रही हूँ?

साहब०। वेशक! मै समझता हूँ कि अपने पति को बचाने के लिये आप ऐसा कह रही हैं!!

कुन्द०। नहीं नहीं, आप भूलते हैं, महन्थ को मैंने मारा—अपने इस हाथ से मारा!

साहब०। (सिर हिला कर) मुझे इसी बात का अफसोस है कि आज मै एक बहादुर औरत को झूठ बोलते हुए पा रहा हूँ!!

कुन्द का चेहरा यह सुनते ही लाल हो आया। वह अपनी जगह से यकायक उठ खड़ी हुई और कोठड़ी की तरफ चली मगर कमजोरी ने उसको चलने न दिया और वह पलट कर खाट पर गिर गई। मुरली ने जो पहिले तो दूर चला गया था मगर अब लौट आकर उसकी बातें सुन रहा था उसे सहारा दे कर बैठाया। उसने कमजोर आवाज में मुरली से कहा, "भीतर कोठरी में मेरा कपड़ो का जो सन्दूक है उसे ले आओ।"

मुरली भीतर गया और एक छोटा सा टीन का सन्दूक लिये हुए लौटा। कुन्द ने वह सन्दूक अपने सामने रखवाया और उसका ढकना खोला। कुछ दो चार मामूली कपड़े जो उसमें रक्खे थे हटाने के साथ ही हमलोग चौंक पडे क्योंकि नीचे खून से तर एक रूमाल और एक बड़ा सा छूरा पड़ा था जिस पर खून जमा हुआ था।

जासूस रामसिंह जो साहब के पीछे खड़े थे अब घसक कर उनके बगल में आ खड़े हुए। साहब भी आगे झुक कर गौर से इन चीजो

को देखने लगे। कुन्द ने वह छूरा निकाल कर साहब के हाथ में दिया और कहा, 'इसी छूरे से मैंने महन्थ की जान ली है।"

साहब ने बड़े गौर से उस छूरे को देखा। छूरा लगभग डेढ बालिश्त के लम्बा बहुत ही तेज और नोकीला, तथा जड़ के पास लगभग चार अंगुल के चौडा होगा। यह छूरा खून से तर था जो अब जम कर काला हो रहा था। साहब ने देख भाल कर इसे रामसिंह के हाथ मे दे दिया। उन्होने भी बड़े गौर से देखा और तब जेब से एक फीता निकाल फल की चौड़ाई नापी, इसके बाद अपना नोट बुक निकाल कुछ देखा और तब धीरे से साहब से कहा, "लाश की छाती के बगल वाले जख्म का इस छूरे से किया जाना बहुत सम्भव है।'

कुन्द ने अब वह खून से तर रूमाल उठाया। इसके एक कोने में एक छोटी गाठ सी बंधी हुई थी जिसे खोलने का इसने मुरली से इशारा किया और मुरली ने वैसा ही किया। इस पोटली के अन्दर से जो कुछ निकला उसे देख मेरी आंखो मे चकाचौध आ गया। उसमे चार हीरे, दो बड़े मोती एक नीलम और एक बेशकीमती पन्ना था। कुन्द ने यह सब जवाहिरात साहब की तरफ बढ़ा कर कहा, 'महन्थ के पेट के अन्दर से यह सब मुझे मिला था।"

यह दौलत देख साहब की बुद्धि ठिकाने रही या नहीं मैं नहीं कह सकता पर जासूस ने उन जवाहिरातो को चट अपने हाथ मे ले लिया और देर तक गौर से देखता रहा। इसके बाद उसने वे हीरे मोती तो साहब के हाथ मे रख दिये और उस रूमाल को उठा लिया जिसे कुन्द ने इन लोगो की तरफ बढ़ा दिया था और जिसमे ये जवाहिरात बंधे हुए थे। उसने इस खून से भरे रूमाल को बड़े गौर से देखा और तब कोने पर कढे हुए एक अक्षर को दिखाते हुए खुशी के साथ साहब से बोले, 'देखिये देखिये इस पर भी वही 'क' अक्षर बना

हुआ है जैसा उस रूमाल पर था ! मै जोर देकर कह सकता हूँ कि ये दोनो एक ही तरह के और एक ही आदमी के रूमाल हैं !!"

कुन्द रामसिंह की यह बात सुन जो उन्होने हिन्दी मे हो कही थी, मुस्कुराई और बोली, "जासूस साहब ! आप पढ़ने मे गलती कर रहे हैं। वह अक्षर 'क' नही 'कु' है और ये रूमाल मेरे हैं ! मेरे पास इसमे के कुल छः थे। उन पर बडी कारीगरी से अपने नाम का पहिला अक्षर 'कु' रेशम से काढ़ा था।'

साहब और गोपीसिंह दोनो ही किसी गम्भीर चिन्ता मे डूब गये थे तथा कुन्द प्रसन्नता की दृष्टि दोनो पर डाल रही थी। थोड़ी देर बाद साहब ने कुन्द से कहा, "ये जवाहिर बड़े कीमती हैं, क्या आपने इन्ही के लिये ...?"

कुन्द बोल उठी, "नही नहीं, खास इन्ही के सबब से मैंने महंथ को नहीं मारा, परन्तु मुझे इनके बारे में इतना मालूम था कि ये महंथ के पेट मे पड़े हुए हैं, अस्तु जब मैंने उसे मार ही डाला तो सोचा कि उसका पेट चीर इन्हे भी निकाल ही लूं। सुनिये मै आपको सब हाल सुनाती हूँ—

"आपको शायद मालूम ही होगा कि रेवती नाम की एक औरत पर मेरे पति बहुत मोहित हो गये थे जो महंथ के यहा ही रहती थी उसने इन्हें इस तरह अपने बस मे कर रक्खा था कि जिसका नाम। स्वाभाविक ही मुझे उस पर बहुत ज्यादा क्रोध चढ़ा हुआ था परंतु परसों जब मेरे पति मुझसे मिलने यहां आये बात ही बात में उनके मुंह से यह निकल गया कि वे उसे साथ ले उसी दिन कही भाग जाना चाहते हैं। सुनते ही मेरे क्रोध का कोई अन्त न रहा। क्रोध तो मुझे रेवती पर पहिले ही चढ़ा हुआ था, अब जब यह मालूम हुआ कि वह कम्बख्त उन्हे यहां तक गुमराह किया चाहती है तो साहब आप ही सोचिये कि मेरे दिल की क्या हालत हुई होगी। मैंने अपने को बहुत कुछ सम्हाला

और रोका मगर रहा न गया। मेरा क्रोध बढता ही गया, यहां तक कि आखिर आधी रात को मै बिछौने पर पडी न रह सकी। मैं उठी और (छूरे की तरफ बता कर) यह छुरा ले रेवती को मार डालने की नियत से महन्थ के बाग की तरफ चली।

"बाग के पास पहुँची तो फाटक खुला हुआ पाया। जी में शक हुआ। भीतर गई तो कहीं कोई नहीं सब जगह कोठरी कमरे खुले पड़े, उथल पुथल! देखते ही मालूम हो गया कि वे दोनो महन्थ को लूट कर भाग गये। गुस्से से दात कटकटाने और इधर उधर घूमने लगी मगर कहीं कोई नहीं दिखा।

"सब तरफ खोजती हुई जब सभामण्डप के पास पहुँची तो वहाँ एक आदमी को चादर लपेटे पड़े पाया। शक हुआ कि शायद उन्हीं दोनो मे से कोई न हो। मैंने पास जाकर देखा मगर कुछ पता न लगा, तब सभामण्डप पर चढ़ गई। धीरे से मुंह से चादर हटाया और देखने लगी कि कौन है। वह महन्थ महादेवदास थे। चादर हटाते ही शराब की ऐसी महक उठी कि जी भिन्ना गया। हटने लगी थी कि इतने ही में महन्थ ने आखें खोल दीं और नशे की झोक में या शायद जान बूझ कर मेरा हाथ पकड़ लिया। कुछ बुरी बातें भी करने लगा जो मै कहा नहीं चाहती। रेवती के भाग जाने का क्रोध तो चढ़ा ही हुआ था, महन्थ के बर्ताव से डर भी पैदा हो गया। उसी घबराहट मे मैंने हाथ का छूरा महन्थ के बदन में घुसेड दिया। वह चिल्ला कर लेट गया। मै भी कापती हुई भागी मगर डर और घबराहट के सबब से बेहोश होकर गिर गई।

"कुछ देर बाद होश में आई। चारो तरफ सन्नाटा था। महन्थ की तरफ ख्याल गया तो उसे उसी तरह पड़ा पाया। मैं किसी तरह उठी और भागना चाहा मगर फिर ख्याल हुआ कि मेरा छुरा अगर रह जायगा तो शायद लोग देख कर पहिचान ले, इससे छुरा निकालने का उद्योग करने लगी। किसी तरह उसकी बगल से खीच कर अपना छुरा निकाला, वह मर चुका था।"

इतना कह कुन्द ने मेरी तरफ देखा और साहब से कहा :—

"इन्हें पहिले एक बार यह शक हुआ था कि महन्थ के पेट में हीरे पड़े हुए हैं। इन्हें कैसे यह शक हुआ या इस बात का पता लगा यह सब इन्हीं से पूछ लीजियेगा पर मुझे उस समय यह बात याद आ गई। मैंने सोचा कि यों तो यह लाश जला दी जायगी और हीरे भी नष्ट हो जायंगे तो क्यों न मैं ही निकाल लूं ? अस्तु साहब मैंने उसी छूरे से महन्थ का पेट चीर डाला और ये जवाहिरात उसके अन्दर से मुझे मिले। तुरत मैं इन्हे लिए वहाँ से भागी।

"मैं फाटक तक पहुँची ही थी कि मैने सामने से अपने पति को आते देखा। मुझे देख वे चौंक पड़े और उन्हे देख मैं डर गई। उन्होने पूछा, "तू यहाँ कहां !" मैंने कहा, "तुम्ही को खोजने आई थी, तुम कहां गये थे !" उन्होने कहा, "क्या बतावें, हरामजादी रेवती ने बुरा धोखा दिया। मुझे तो कहा कि मै तुम्हारे साथ चलूंगी, मुझसे महन्थ की सब चीजो और रूपये जेवरो की चोरी करवाई, महन्थ को शराब पिलवा बेहोश करवा दिया, फिर सब चीजो को ले रातो रात मेरे साथ भागी, मगर तीन चार कोस पर उसने अपना कोई और दोस्त बैठा रक्खा था। जब उसके पास पहुँची तो उसने मार पीट कर सब कुछ छीन लिया और रेवती मुझे अंगूठा दिखा उस आदमी के साथ चलती बनी। मैंने पीछा करना चाहा, तो दोनों ने मिल कर इतना मारा कि बापरे बाप ! लाचार भागा। महन्थजी को जगा कर सब हाल कहता हूँ, अभी वे लोग बहुत दूर नही गये होंगे, तीन कोस पर उन्हें छोड़ कर मैं दौडा चला आया हूँ !"

"इतने ही मे उनकी निगाह मेरे हाथ के खून भरे छूरे पर पड़ी। घबड़ा कर बोले, "हैं यह क्या ? क्या किसी का खून किया ?" मैंने सब हाल साफ साफ उनसे कह दिया। सुन कर उन्हे बडा ही दुःख हुआ और मुझ पर बहुत बिगड़ने लगे पर आखिर कर ही क्या सकते

थे ! गाली गलौज और बक झक कर के रह गये। एक दफे जा कर महन्थ की हाल देखी तो इतना डरे कि कूद कर दूर जा पडे और तब वहा से बेतहाशा भागे। एक दम बाग के बाहर निकल गये। मुझे उनका डरपोकपना बड़ा बुरा लगा। मैं उन्हें बुलाने दौड़ी, मगर फाटक की तरफ किसी को आते पा घबरा गई और सोचने लगी कि क्या करूँ किधर जाऊँ आखिर याद आया कि एक कोठरी की खिड़की में काठ का कमजोर जंगला लगा है, बस उसी मे गई और जंगला तोड़ कर उधर ही से निकल भागी।

"घर पहुँची तो उन्हें यहां बैठे पाया। मैंने पूछा कि 'अब किस फिक्र में पडे हो ?' उन्होंने कहा कि 'महन्थजी का खून तो तुमने किया अब फासी मैं पडंूगा क्योकि सब कोई यही समझेंगे कि मैं ही महन्थ जी को मार उनका रुपया पैसा ले भाग गया हूँ !' मैंने कहा, "नहीं, मै अपना कसूर मञ्जूर कर लूगी, तुम्हारा जहा जी चाहे चले जाओ।" मगर उनका डर किसी तरह कम ही नहीं हो रहा था। आखिर बहुत कुछ समझा बुझा कर उन्हे गोविन्दपूर जाने को राजी किया जहां उनके कुछ रिश्तेदार रहते हैं। मैं उन्हें गांव के सिरे तक पहुँचा भी आई बल्कि (मेरी तरफ बता कर) इन्हीं के मकान के नीचे तक मैं उनके साथ साथ गई और किसी तरह समझा बुझा कर उन्हें बिदा किया। मकान की खिड़की खुली हुई थी और शायद कोई ऊपर जागता भी था—(मुझसे) क्या आप थे ?"

कुन्द के साथ साथ और सभो की तथा साहब की निगाह भी मुझ पर पडी, मैने सिर झुका कर कहा "हा मैने इन दोनो की बात चीत सुनी थी।" कुन्द ने मुस्कुरा कर साहब से कहा, "देखिये सुन लीजिये ! मै झूठ नहीं कहती !! बस जो कुछ असल असल हाल था वह मैने आपसे कह दिया। अगर मेरे पति को आप लोग खूनी न समझते तो मैं कभी यह सब हाल आप से न कहती, पर अब

लाचारी आ पडी क्योकि वे इतने डरपोक हैं कि उन्होंने भागते हुए ही कह दिया था कि अगर मैं किसी सिपाही की सूरत भी देख लूंगा तो नदी में कूद कर जान दे दूँगा। यही सबब है कि मैने आपसे वादा करा लिया कि आप उनका पीछा करने वालो को वापस बुला लेंगे। अब अगर आपको मेरी बात पर विश्वास हो रहा हो तो आप अपना वादा पूरा कीजिये !"

साहब और गोपीसिंह मे धीरे धीरे कुछ बाते होने लगी मै कोशिश करने पर भी उन्हें सुन न सका मगर यह विश्वास सभो को हो गया कि कुन्द की बात पर उन लोगा को भरोसा हो गया है और अब कुन्द को अपने किये का फल भोगना ही पड़ेगा।

थोड़ी देर वाद कुन्द से साहब ने कहा, 'अच्छा मै आपके पति को गिरफ्तार न करूंगा हा उनसे बाते जरूर करूंगा और अगर वे आपकी ताईद करेंगे तो उन्हे छोड़ दूँगा।"

यह सुनते ही कुन्द ने घबरा कर कहा, 'नही नही, मै आप से कहती हूँ न कि पुलिस को देखते ही वे अपनी जान दे देंगे! आपने मुझसे क्या वादा किया था? आपको अपनी बात पूरी करनी चाहिये !"

साहब ने कहा, 'मगर मुझे अभी तक यह सन्देह हो रहा है कि तुम शायद उसे बचाने के लिये यह सब न कह गई हो! तुम पहिली मुजरिन मुझे दिख रही हो जिसने अपना इतना भारी जुर्म इस तरह आसानी के साथ मन्जूर कर लिया हो !"

कुन्द०। और आप पहिले अगरेज मुझे दिख रहे हैं जिसने एक औरत के साथ किये हुए अपने वादे को इस तरह लापरवाही के साथ उडा दिया हो !!

कुन्द की इस कडी बात को सुन साहब का चेहरा लाल हो गया। उन्होने कडबुड़ा कर अपने होठो मे कहा, 'इस औरत की जुबान बडी

तेज है। खैर कन्हाई भाग के भी आखिर जायगा कहाँ!" और तब कुन्द की तरफ देख कर बोले, "अच्छी बात है, मैं अपना वादा पूरा करूंगा, मगर आप भी जेल जाने के लिये तैयार हो जाइये!"

कुन्द बोली, "बड़ी खुशी से!" साहब ने अपने एक अर्दली की मार्फत थानेदार को बुलवा भेजा और यह भी लिख भेजा कि 'कन्हाई को बुलाने जो सिपाही गये हैं वे वापस बुला लिये जायँ। उसे गिरफ्तार करने की अब कोई जरूरत नहीं है।'

मेरी निगाह कुन्द की तरफ उठी, देखा कि उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था।

ग्यारहवां बयान

कुछ देर के लिये उस जगह गहरा सन्नाटा रहा । कुन्द की बातो ने हम सभों ही को चुप करा दिया था । क्या सुन्दर नाज़ुक दयालु कुन्द ने ऐसा भयानक काम किया ? खून कर डाला ! अपने हाथ से एक मनुष्य की जान ले डाली !! सुन कर भी विश्वास क़ना कठिन था ।

उधर कुन्द जब तक साहब से बाते करती रही तब तक तो ठीक रही मगर जैसे ही उसकी बातें समाप्त हुई, और साहब का अर्दली थानेदार को बुलाने और कन्हाई को पकड़ने के लिये गये हुए सिपाहियो को लौटा लेने का हुक्मनामा लेकर गया उसकी कमजोरी ने उस पर पूरे तौर से असर किया । उसकी आखें बन्द हो गईं, मुंह से एक आह सी निकली, और तभी वह बेसुध होकर खाट पर गिर गई । मैने उसके बदन पर हाथ रक्खा, बदन ठण्डा हो रहा था । नब्ज देखी वह बहुत सुस्त हो गई थी । उसकी बेचारी सास जिसकी आंखो से आसू गिर रहे थे उसके मुंह पर हाथ फेरने लगी ।

मैने कुन्द को एक दवा सुंघाते सुंघाते धीरे से उस बूढ़ी से पूछा, ' क्या

परसों रात को कुन्द कहीं बाहर गई थी जैसा कि उसने अभी अभी कहा ?" उसने कहा "बेटा अब मैं क्या कहूँ ! वह रात को कहीं गई तो जरूर थी और सवेरा होने पर लौटी। कब गई यह तो मैं नहीं कह सकती पर जब लौटी तो उसके हाथ में यह हीरों की पोटली जरूर थी, छूरा तो मैंने नहीं देखा। पूछा भी कहा गई थी तो कुछ बोली नहीं बल्कि रो बैठी और तब मुझसे कसम खिला लिया कि किसी से भी यह हाल न कहूँ, इसी से बेटा मैं तुम लोगों से भी कह न सकी ! मैं क्या जानूँ कि वह ऐसा अनर्थ करने गई थी।" बुढिया की बात सुन मेरी रही सही आशा भी जाती रही दिल बैठ गया।

उधर डाक्टर बनर्जी और साहब में अलग ही बहस हो रही थी। साहब ने एक डोली कुन्द को थाने ले जाने के लिए बुलवाई थी, हवालात में बन्द किया चाहते थे, पर डाक्टर साहब कहते थे कि कुन्द की जैसी हालत हो रही है उसे देखते हुए अगर वह अपनी जगह से जरा भी हटाई जावेगी या उसे किसी तरह की भी शारीरिक या मानसिक यन्त्रणा पहुँचाई जावेगी तो जरूर उसकी जान पर आ बनेगी। यह कभी सम्भव नहीं कि हवालात की तंग और बदबूदार कोठरी में वह उसी सफाई और आराम के साथ रह सके जैसा यहां वहाँ पहुँचते ही शायद उसकी जान ही निकल जाय। मगर साहब लाचारी दिखाते और कहते थे कि सो तो करना ही होगा, खून का मुजरिम स्वतन्त्र छोड़ा ही नहीं जा सकता, उसे हवालात · रखना ही पड़ेगा !! आखिर बनर्जी बाबू सिर पीट कर रह गये मगर साहब ने कुन्द को इस जगह रहने देना स्वीकार नहीं ही किया, हाँ यह कह दिया कि इस बात का प्रबन्ध हो जायगा कि आप लोग जब चाहें तब अथवा दिन भर भी उसके पास रह सकेंगे और रात को भी आपका कोई एक आदमी वहाँ रह सकेगा।

कुन्द थोड़ी देर बाद होश में आई। साहब ने उससे कहा,

"आपने जो बातें कही हैं अगर वे ठीक हैं तो आपको हवालात जाना होगा।" कुन्द ने कहा, "मैं इस बात को जानती हूँ और जहाँ आप कहें चलने को तैयार हूँ।"

थोडी ही देर में थानेदार तथा और भी कई कान्स्टेबुल आ गये। साहब ने मुख्तसर में थानेदार से सब हाल कहा। यह जान कर कि कुन्द ने महन्थ की जान ली थानेदार के ताज्जुब का कोई हद न रहा। उसी समय मौका समझ मैंने अंगरेजी में साहब से यह भी कह दिया "मगर पुलिस कुन्द के जबानी बयान पर ही बैठी न रह जाय, वह अपनी तरफ से भी जांच पड़ताल करे कि क्या मामला है।" सुन कर साहब ने अजीब ढंग से मेरी तरफ देखा और कहा "क्या आपको इस बात में कोई शक है? आप विश्वास रखिये कि कोई औरत और खास करके कुन्द जैसी बहादुर औरत बेकसूर तकलीफ नहीं उठाने पावेगी!"

डोली आ गई थी। साहब ने बुढ़िया से कहा "लाचार हूँ, कानूनी कार्रवाई मुझे करनी ही होगी, पर इतना आप विश्वास रक्खें कि अगर वे बेकसूर होगी तो छूट आवेगी!" बेचारी बुढिया ने रोते हुए सिर हिलाया।

जिस समय बीमार और कमजोर कुन्द डोली पर लादी गई उस समय का हाल मैं कहा नहीं चाहता। खास करके कुन्द का अपनी सास से बिदा होना बड़ा ही करुणोत्पादक था। जितने आदमी वहाँ थे उनमें से किसी की भी आखें सूखी न थीं।

बारहवाँ बयान

थाने की अन्धेरी तग और बदबूदार कोठरी में मैले बिछावन पर पड़ी कुन्द अपनी मौत की आखिरी घड़ियें गिन रही थी।

जिस समय पहिले पहिल मैने यह हवालाती कोठरी देखी और कुन्द की हालत पर गौर किया उसी समय समझ लिया था कि इस जगह रह कर यदि वह जीती बच जाय तो इसे ही ताज्जुब समझना चाहिये। जब उस टीले की साफ हवा और खुली धूप वाली जगह में उसके ठीक होने की कम उम्मीद थी तो भला यहा क्या हो सकती थी !! और मेरा खयाल ठीक भी निकला।

आज उसे यहा आये दूसरा दिन है। हाथ बिल्कुल सड़ गया है। बुखार बढ गया था मगर अब उतर रहा है। डाक्टर बनर्जी तो यद्यपि चौबीस घण्टा बताते हैं मगर मैं उससे चौथाई ही देर समझता हूँ। इसका एक कारण है, क्योकि इधर घण्टे भर से जब से मैं यहा बैठा हुआ हूँ उसके चेहरे पर कुछ अजीब सा परिवर्तन हो रहा है। इस समय उसका चेहरा साफ है, किसी तरह का दुःख या कष्ट नहीं मालूम होता, प्रसन्न मालूम होती है, मानो किसी तरह की बीमारी है

ही नहीं, बुखार भी साफ है। नब्ज धीरे धीरे बिल्कुल ठीक हो गई है जो पहिले बहुत ही ज्यादे कमजोर हो रही थी। इस समय थोड़ी देर से उसने आंखे खोल दी हैं, आखें भी बहुत साफ हैं। यकायक देखने वाला कह देगा कि यह तो बिल्कुल ठीक है! मगर नहीं मेरा दिल कह रहा है कि यह बुझते हुए दीये की आखिरी टिमटिमाहट है।

इस समय यहा मेरे सिवाय और कोई नही है। डाक्टर बनर्जी अभी घण्टा भर हुआ देख कर गये हैं। कुन्द की सास और राय सीताराम भी आये थे और उनके साथ ही गये हैं। मुरली यहां आया ही नहीं। जब से यह हवालात आई तब से उसने इसे अपनी सूरत नहीं दिखाई है, न जाने उसे कुन्द से किस प्रकार का रञ्ज या मन मुटाव हो गया है। कुन्द ने भी उसके देखने की इच्छा प्रगट नहीं की है। मैंने मुरली को कई बार यहां लाने की कोशिश की पर वह किसी तरह आने को राजी ही नहीं हुआ इसीलिए इस समय केवल मै ह यहां बैठा हुआ हूँ और लगभग घण्टे भर से होते हुए कुन्द के चेहरे पर के इस परिवर्तन को रंज के साथ देख रहा हूँ।

कुन्द आँखे खोल कर चारो तरफ देख रही है। कभी उसकी निगाह मुझ पर पडती है, कभी दीवारों पर, कभी दरवाजे के सामने वाले आंगन पर और कभी टहलते हुए बन्दूक लिये पहरेदार पर। मै कुछ देर तक चुपचाप रहा पर आखिर बोला, "बहिन, तबीयत कैसी है?"

कुन्द बोली "बहुत अच्छी है भैया! अभी अभी सपना देखा है कि वे चले गये, बच गये!"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "कौन? कन्हाई बाबू? कहां चले गये?"

कुन्द०। हां, वे एक जहाज पर हिन्दुस्तान के बाहर चले गये। अब यहां की पुलिस उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं पहुँचा सकती।"

मेरा माथा ठनका। मैंने पूछा, "क्यो, उन्हें अब डर ही क्या था?"

कुन्द पहिले तो मुस्कुरा कर रह गई, मगर थोड़ी देर बाद बोली। 'भैया, मुरली मेरे पास कई रोज से नहीं आया ! क्यो ? अब तो मैं थोड़ी ही देर की मेहमान हूँ। क्या अपनी मरती बहिन को भी देखने नही आवेगा !!"

मै पूछा "क्या मै उसे बुलाऊँ ?" उसने कहा. 'हा हा, अगर हो सके तो एक बार उसे देख लेती तो फिर कोई इच्छा रह नही जाती !"

मै 'अभी जाता हूँ और कहीं मिल गया तो लेता आता हूँ !" कह कोठडी के बाहर निकला। थाने के दर्वाजे से कुछ ही दूर गया हूँगा कि मैने मुरली को देखा—एक पेड के साथ खडा हवालात की खिडकी की तरफ एक टक देखता हुआ आँसू बह रहा था मुझे देख चौका और गरदन फेर हटने लगा मगर मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "चलो मुरली तुम्हें कुन्द बुला रही है।"

उसने कहा, "नही मै उसे देखने नहीं जाऊँगा।" मैने पूछा, ' क्यो ?" उसने कहा, 'मेरी खुशी !" मैने तब कहा, "अगर इस समय उसे देखने नहीं चलोगे तो घण्टे भर बाद फिर नही देख पाओगे, अगर जिन्दी कुन्द को देखा चाहते हो तो चलो !" मुरली चौक पड़ा पर फिर भी बोला "नही मै कसम खा चुका हूँ कि जीते जी उसका मुंह नहीं देखूंगा।" मैने पूछा "सो क्यो ?" मगर उसने कोई जवाब न दिया। मैने फिर कहा 'कुन्द ने कहा है कि अगर एक बार मुरली को देख लूंगी तो सुख से मर सकूंगी ।'

अब मुरली अपने को और रोक न सका उसके मुंह से निकला— "हाय कुन्द !" और तब वह बेतहाशा रो पड़ा। मै उसकी यह हालत देख ताज्जुब में पड़ गया क्योकि यद्यपि मै जानता था कि वह कुन्द को बहुत ज्यादा प्यार करता है पर फिर भी उसका यह बर्ताव मेरी समझ मे न आया।

मगर थोड़ी ही देर बाद मुरली आप से आप शान्त हो गया और

तब बोला, "अच्छा चलो ।" मै बहुत खुश हुआ । ,म दोनो एक साथ ही कुन्द के पास पहुँचे ।

हवालात के दर्वाजे पर मुरली ठिठक गया, मगर कुन्द की नजर बराबर दर्वाजे ही पर थी । उसे देखते ही वह खुशी में भर कर ोली, "आए मुरली भैया ! भीतर आओ !!"

मुरली भीतर गया । कुन्द ने कहा, "तुम तो बड़े कठोर हो गये ! एक दफे मुझे देखने भी नहीं आये !" मुरली ने कहा, 'मुझे तुमसे नफरत हो गई !!" कह कर उसने एक लम्बी साँस ली ।

कुन्द ने पूछा, "क्यो सो क्यो ?' मुरली बाला, "क्योंकि तुम मुझसे दगा रखने लगी !' कुन्द चौक कर बोली, "तुमसे दगा ! ऐसी क्या बात है भैया ?' मुरली कुछ न बोला कुन्द ने फिर पूछा, तुमसे कौन सी दगा मैने की मुरली ?"

मुरली कुछ न बोला पर कुन्द बार बार यही सवाल करने लगी । आखिर उसने कहा, "क्या तुम खुद नहीं समझतीं जो मुझसे पूछती हो ? क्या तुमने सचमुच महन्थ को मारा ? अच्छा मेरे सिर पर हाथ रख कर कह दो कि - हा मुरली तुम्हारी कसम मैंने ही महन्थ को मारा ।"

कुन्द चुप हो गई । मुरली कुछ देर रुक फिर बोला "मै अच्छी तरह जानता हूँ कि कन्हाई ने महन्थ को मारा, मै अच्छी तरह जानता हूँ कि वही उसके पेट से जवाहिरात लेकर भागा और तुमने इस काम को नहीं किया, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अपने नालायक पति को बचाने के लिये तुमने उसका अपराध अपने सिर ओढ़ लिया, मै अच्छी तरह जानता हूँ कि नालायक कन्हाई......"

मगर कुन्द के चेहरे से यह शब्द सुनते ही ऐसा दुःख प्रगट हुआ कि मुरली को रुक जाना पड़ा । कुन्द बोली "मुरली क्या तुम पागल हो गये हो ? क्या ऐसा शब्द उसके पति के बारे पत्नी के

सामने कोई कहता है? क्या तुम मुझे मरती समय भी तकलीफ़ पहुँचाया चाहते हो?"

मुरली०। जो आदमी अपनी निर्दोष औरत पर खून का इल-जाम थोप कर भाग गया उसे मैं नालायक ही कहूँगा चाहे वह कुन्द का पति ही क्यो न हो! जो आदमी तुम्हारी हालत जानते हुए भी भाग गया उसे मैं.......

कुन्द०। मुरली! मुरली!!

मैने भी इशारे से मुरली को मना किया और वह गर्दन फ़ेर कर चुप हो रहा। कुन्द बोली, "खैर जो कुछ हो मगर तुम्हे यह क्यों विश्वास हो गया है कि मैं बेकसूर हूँ? क्या तुम समझते हो कि मैंने खून नही किया?"

मुरली०। बेशक!

कुन्द०। कैसे जानते हो?

मुरली०। मेरा दिल कह रहा है।

कुन्द०। क्या तुम्हारा दिल तुम्हे झूठ नहीं कह सकता?

मुरली०। और किसी समय शायद कहता भी मगर इस मौके पर तो कभी नही। मैं खूब जानता हूँ—मुझे विश्वास है—कि महन्थ की मौत से तुम्हे कोई सम्बन्ध नहीं।

कुन्द०। नहीं नहीं, तुम भूलते हो।

मुरली०। अच्छी बात है, अगर मैं भूलता हूँ तो तुम मेरे सिर पर हाथ रख कर कसम खा जाओ कि हां मैंने खून किया!!

कुन्द चुप रही। मुरली बोला "देखो तुम अपने बर्ताव ही से साबित कर रही हो कि तुमने महन्थ को नहीं मारा। नहीं नहीं कुन्द, अब इनकार नही कर सकतीं! तुम जरूर बेकसूर हो—सिर्फ कन्हाई को बचाने के लिए तुमने ऐसा किया। तुमने बेशक मेरे साथ दगा किया! (बिलख कर) कुन्द, तुमने मुझे भी पराया समझा!!"

कुन्द की आंखो से आँसू गिरने लगे। उसने बेचैनी से कहा, "अब मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती ! भैया मुरली, तुम मुझे माफ करना, बेशक मैंने तुम्हे धोखा दिया मगर भैया मैं इसके लिये माफी चाहती हूँ, यह मेरा तुमसे पहिला और आखिरी धोखा है। भाई क्या करूं? मैं लाचार थी, अगर मै तुमसे कह देती तो तुम जरूर भण्डाफोड़ कर देते और मेरे लिए उनकी जान बचाना जरूरी था। पर अब मै उनकी तरफ से निश्चिन्त हूँ, क्योकि अब वे ऐसी जगह पहुँच गये जहां से कोई उनका पता नहीं लगा सकता, सो अब तुम भी सुन लो कि क्या हुआ। हुआ यह कि उस रोज आधी रात के बाद बल्कि सुबह के कुछ पहिले वे मेरे पास पहुँचे और मुझे जगा कर बोले कि 'बाहर चलो मुझे कुछ कहना है यहां तुम्हारी सास पड़ी हैं।' बड़े घबड़ाए हुए और बेचैन थे। मैं उनके साथ बाहर आई—वहां उन्होने मुझे सब हाल कहा। रेवती के बहकावे में पड कर उन्होने महन्थ को जहर दे कर मार डाला और तब उसका पेट चीर कर वे सब हीरे वगैरह निकल लिये। तब रेवती महन्थ के दिये बाकी गहने और रुपै वगैरह लेकर इनके साथ भागी। इनको उसने इस भुलावे में डाल रक्खा था कि इन्हीं के साथ कही दूसरे देश मे जा रहेगी पर उधर एक दूसरे से भी बातचीत पक्की कर ली थी जो उसका पहिले का दोस्त था। दो कोस पर एक ठिकाना बता कर वह उसे वहीं कई आदमियो के साथ रोके हुई थी। बाग से भाग कर इन्हे लिये सीधी वही पहुँची। वहां पहुँचतें ही वह तो अपने यार के साथ हो गई और उन लोगो ने इन्हे मारना शुरू किया। अब इनकी आंखे खुलीं और समझे कि रेवती ने बुरा धोखा दिया। वे आदमी उनसे वे जवाहिरात माग रहे थे जो महन्थ के पेट से निकले थे और अभी तक उन्ही के पास थे पर इन्होने भी निश्चय कर लिया कि जान जाय पर हीरे नही देंगे। आखिर मार खाते खाते हो मौका पाकर वहाँ से भागे और ईश्वर की दया से अन्धेरी रात की मदद से निकल ही गये। भागे भागे सीधे मेरे पास पहुँचे थे।

'यह सब हाल मुझे बाहर ले जाकर उन्होने कहा, तब वे हीरे भी दिये और कहा कि तुम इन्हे रक्खो, मैं जाता हूँ। अगर पुलिस और फासी से अपने को बचा सका तो फिर कभी मिलूँगा।' मैंने उन्हें भागने का ढंग बताया। गोविन्दपूर में मेरे मामा रहते हैं। वे एक जहाज पर काम करते हैं और मुझे यह भी कोई कहता था कि उनका जहाज दो तीन रोज के अन्दर चीन या उधर ही कहीं जाने वाला है। अस्तु मैने उनको उन्ही के पास ही जाने को कहा और एक चीठी भी लिख दी। किसी तरह समझा बुझा कर बिदा किया बल्कि गांव के सिरे तक पहुँचा आई।

'जब वे चले गये तो मैं सोचने लगी कि अगर वे जहाज पर चढ़ के भाग न सके तो फिर जरूर पकड़े जायेगे। अस्तु कोई ऐसी तर्कीब करनी चाहिये कि उन पर आन्च न आवे। बहुत कुछ सोच विचार कर मै अपने घर गई, वहाँ से एक छूरा लिया, महन्थ के बागमे पहुँची इधर उधर घूम फिर कर सब जगह का हाल देखा, फिर लाश के पास गई, लाश देख एक दफे तो घबरा गई पर फिर हिम्मत करके पास पहुँची और किसी तरह छूरा उसके बदन मे घुसेड दिया। मैने सोचा था कि छूरे मे खून लग जायगा पर कुछ भी नही लगा। शायद लाश का खून जम चुका था। तब क्या क्या किया जाय? छूरे मे खून लगेगा नहीं तो काम कैसे चलेगा? लाचार मैंने अपने बाएँ हाथ की पट्टी खोद कर वहां के खून से छूरे को तर किया मगर दर्द बहुत हुई। मैं बेहोश हो गई'!"

इतने सुनते ही मुरली चीख पडा मेरा भी कलेजा कांप उठा, मगर मैं हिम्मत करके सुनता रहा कि वह क्या कहती है। कुन्द फिर बोली :—

"खैर कुछ देर बाद आप ही किसी तरह होश मे आई, एक रूमाल से खून पोछ और हाथ बाध मैं वहा से घर लौटी। उसी खून से तर रूमाल मे मैने उन हीरों को बाधा और छूरे के साथ अपने सन्दूक में छिपा दिया। मेरी सास उस समय जाग गई थीं मगर मैने बहुत

बड़ी कसम देकर उनका मुंह बन्द कर दिया। अपने मन में कुछ निश्चिन्त सी होकर मैं बिछौने पर लेट गई मगर तकलीफ बहुत थी।

"बस यही तो असल हाल है। पहिले दिन तो चुप रही, मगर जब सुना कि उनको पकड़ने सिपाही गये हैं तो फिर लाचारी हो गई। इतना मुझे विश्वास था कि अगर उन्हे एक दिन की मोहलत मिल गई तो वे गोविन्दपुर से चल कर उस बंदरगाह मे पहुँच जायगे जहाँ से मेरे मामा का जहाज छूटने वाला था। मै उस जगह का नाम नहीं जानती। आखिर जिस तरह से हो सका उन्हे भागने का मौका दिया और मैं कामयाब भी हुई क्योंकि आज उनके जहाज ने हिंदुस्तान छोड़ दिया। अब कोई उनका बाल भी बांका नही कर सकता !!"

कहते हुए कुन्द के मुंह पर स्वर्गीय प्रेम और प्रसन्नता की एक ऐसी ज्योति आ गई कि मै आश्चर्य से उसे देखने लगा मगर फिर तुरत ही उसके चेहरे का रंग बदलने लगा। चेहरा एक दम लाल हुआ, फिर सफेद और तब पीला होकर धीरे धीरे नीला होने लगा। इसी समय उसके बदन में एक कंपकॅपी सी आई, धीरे धीरे हिचकी आई, और हाथ पाव ढीले पड गये। कुन्द चली गई !!

मुरली रोता हुआ चिल्ला कर कुन्द के ऊपर गिर गया। बिलखते हुए उसने कहा—"हाय बहिन !! तैंने एक नालायक के लिये अपना बलिदान कर दिया !!"

उसी समय दर्वाजे पर कुछ खटर पटर हुआ और दौड़ते हापते हुए परेशान सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब भीतर आए। मुझे देख बोले, "ओफ, बड़ा भारी धोखा हुआ ! अभी डाक्टर का रिपोर्ट आया है ! कलकत्ता का बड़ा डाक्टर कहता है कि मौत संखिया से हुआ है। महन्थ को बहुत सा संखिया खिला दिया गया था। मौत होने के कई

घण्टे बाद लाश का पेट वगैरह चीरा गया है। कुन्द बीबी बिल्कुल बेकसूर हैं।"

मैंने उनसे कहा, "आप मौत के सामने हैं साहब, धीरे धीरे बोलिये !!"

॥ इति ॥

१९६४ ई०] ५ वा संस्करण [१०० प्रति

राजेन्द्र प्रेस, बाग बरियार